■ प्रधानमंत्री मोदी बोले -भारत ने की मंगोलिया के लोगों के लिए मुफ्त ई वीजा देने की घोषणा- 7

■ मांग बढ़ने से सितंबर माह में बढ़ा रत्न आभूषण का निर्यात - 10

■ अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए एकजुट वैश्विक दृष्टिकोण जरूरी - 11

■ सलामी बल्लेबाज केएल राहुल का नाबाद अर्धशतक, भारत ने किया क्लीन स्वीप - 12

आज का मौसम

31.0⁰ अधिकतम तापमान

18.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.13

सूर्यास्त 05.43

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

■ लखनऊ ■ बरेली ■ कानपुर ■ मुरादाबाद ■ अयोध्या ■ हल्द्वानी

कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी 10:34 उपरांत दशमी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 15 अक्टूबर 2025, वर्ष 6, अंक 326, पृष्ठ 12+4 ■ मूल्य 6 रुपये

ब्रीफ न्यूज

सरकार ने 16वें वित्त आयोग का कार्यकाल 30 नवंबर तक बढ़ाया

नई दिल्ली। सरकार ने 16वें वित्त आयोग का कार्यकाल एक महीने बढ़ाकर 30 नवंबर तक कर दिया है। सरकार ने 31 दिसंबर 2023 को 16वें वित्त आयोग का गठन किया था और नीति आयोग के पूर्व वाइस चेयरमैन अरविंद पनगढ़िया का इसका चेयरमैन बनाया गया था। इस आयोग को 31 अक्टूबर तक अपनी रिपोर्ट देनी थी। आयोग मुख्य तौर पर एक अप्रैल 2026 से शुरू होने वाली पांच साल की अवधि के लिए केंद्र एवं राज्यों के बीच करों के वितरण पर सिफारिशें करता है। वित्त मंत्रालय ने 10 अक्टूबर को अधिसूचना में कहा कि 16वें वित्त आयोग की रिपोर्ट दाखिल करने करने की तिथि 30 नवंबर तक बढ़ाई जा रही है।

एलओसी पर घुसपैठ की कोशिश नाकाम दो आतंकवादी ढेर

श्रीनगर। जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में एलओसी पर सेना के जवानों ने घुसपैठ की कोशिश नाकाम करते हुए दो अज्ञात आतंकवादियों को मार गिराया। सोमवार देर रात कुपवाड़ा में नियंत्रण रेखा पर जवानों ने संदिग्ध गतिविधि देखी और घुसपैठियों को चुनौती दी। दोनों पक्षों के बीच कुछ देर के लिए गोलीबारी हुई। श्रीनगर स्थित चिनार कोर ने कहा, पुलिस की विशिष्ट खुफिया जानकारी और सूत्रों व एजेंसियों की पुष्टि के आधार पर कुपवाड़ा में एक संयुक्त अभियान शुरू किया था।

जैसलमेर में चलती एसी बस में लगी आग, 20 यात्री जिंदा जले

57 यात्री थे सवार, आग से बचने के लिए लोग बस से कूदे

जैसलमेर, एजेंसी

राजस्थान के जैसलमेर जिले में मंगलवार दोपहर बाद जोधपुर जा रही एक निजी बस में आग लगने से 20 लोग जिंदा जल गए और 16 गंभीर रूप से झुलस गए। आग से बचने के लिए लोग बस से कूद गए। पुलिस ने बताया कि 57 यात्रियों को लेकर बस अपराह्न करीब तीन बजे जैसलमेर से रवाना हुई थी।

जैसलमेर-जोधपुर राजमार्ग पर बस के पिछले हिस्से से धुआं निकलने लगा। चालक ने बस को सड़क किनारे रोका। हालांकि कुछ ही पलों में आग ने पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया। उसने बताया कि स्थानीय निवासी और राहगीर मौके पर पहुंचे और बचाव कार्य में मदद की। सेना के जवान भी मदद के लिए आगे आए। दमकल और पुलिस को सूचित किया गया और घायल यात्रियों को इलाज के लिए जैसलमेर के जवाहर अस्पताल ले जाया गया। गंभीर रूप से घायल 16 यात्रियों को जोधपुर के एक अस्पताल में रेफर किया गया है। पुलिस ने बताया कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी। पोकरण से भाजपा के विधायक प्रताप पुरी ने 20 लोगों की मौत की पुष्टि की। उन्होंने कहा, बस में 19 यात्रियों की मौत हो गई और एक ने जोधपुर ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। पुरी ने बताया कि जैसलमेर से रवाना होने के दस मिनट बाद ही बस में आग लग गई। घटना की जानकारी मिलने पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मंगलवार रात जैसलमेर पहुंचे और अधिकारियों ने उन्हें घटना की जानकारी दी। जैसलमेर जिला प्रशासन ने कहा कि घटना की सूचना मिलते ही उसने तुरंत राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। जिला कलेक्टर प्रताप सिंह ने अधिकारियों को घायलों के लिए तत्काल चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

राजस्थान के जैसलमेर जिले के थईयात गांव के पास आग लगने के बाद धू-धूकर जलती बस। ● एजेंसी

सीएम लेते रहे हादसे का फीडबैक

मुख्यमंत्री हादसे के संबंध में फीडबैक लेते रहे। जिला प्रशासन ने उन लोगों से अपील जारी की है जिनके परिवार के लोग बस में यात्रा कर रहे थे ताकि घटना में मारे गए लोगों की पहचान की जा सके। प्रशासन के अनुसार डीएनए मिलान के बाद शव परिजनों को सौंप दिए जाएंगे।

राष्ट्रपति और पीएम ने जताया शोक

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बस में आग लगने से हुई मौतों पर दुख व्यक्त किया। कहा कि इस कठिन समय में मेरी संवेदनाएं प्रभावित लोगों और उनके परिजनों के साथ हैं। मोदी ने मृतकों के परिजनों को दो लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की।

जिला पंचायतों में तैनात होंगे सिविल इंजीनियर, आर्किटेक्ट

सीएम ने ग्राम सचिवालयों में आधार केंद्र खोलने के दिए निर्देश

● पंचायतों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पारदर्शिता, तकनीक और संसाधनों के उपयोग पर बल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पारदर्शिता व तकनीकी उपयोग के माध्यम से ग्राम पंचायतों की राजस्व प्राप्ति और जनसेवा की गुणवत्ता दोनों में सुधार सुनिश्चित करने पर बल दिया है। यह निर्देश भी दिया कि विकास प्राधिकरणों के अतिरिक्त जिला पंचायतों के अधीन क्षेत्रों में भवन मानचित्र स्वीकृति के लिए जिला पंचायतों के पास दक्ष मानव संसाधन की उपलब्धता होनी चाहिए। इसके लिए जिला पंचायतों में सिविल इंजीनियर अथवा आर्किटेक्ट की तैनाती की व्यवस्था की जाए, जिससे स्थानीय निर्माण कार्यों में गुणवत्ता व पारदर्शिता सुनिश्चित हो सके।

सीएम ने ग्राम पंचायतों की आय बढ़ाने के लिए ग्राम सचिवालयों में आधार केंद्र खोलने के निर्देश दिए। कहा, आधार कार्ड निर्माण, संशोधन, बायोमेट्रिक अपग्रेडेशन आदि कार्यों के लिए यह सुविधा उपलब्ध कराई जाए, जिससे नागरिकों को सुविधा मिले और मिलने वाले शुल्क से ग्राम पंचायत की आय में भी वृद्धि हो।

पंचायती राज विभाग की समीक्षा बैठक में योगी ने कहा कि पंचायतें केवल प्रशासनिक इकाइयां नहीं, बल्कि ग्रामीण विकास की आत्मा हैं। पंचायतों को आर्थिक आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्यों से नवाचारों को प्रोत्साहित करने पर बल देते हुए कहा कि ग्राम पंचायतों के पास जितनी अधिक स्व-वित्तीय क्षमता होगी, उतनी ही तेजी से ग्रामीण विकास के कार्य आगे बढ़ेंगे। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों को वित्तीय प्रबंधन, डिजिटल सेवा व जनसुविधा संचालन का प्रशिक्षण देने के निर्देश दिए।

पंचायतों का ऑन सोर्स ऑफ रेवेन्यू बढ़ाए जाने के संबंध में बैठक करते मुख्यमंत्री योगी।

तालाबों, पोखरों पर स्पष्ट नियमावली तैयार हो

अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि पंचायती राज विभाग द्वारा तालाबों, पोखरों की सूचीकरण और उपयोग नीति पर कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि ग्राम पंचायत तथा जिला पंचायत के अधीन तालाबों व पोखरों का समयबद्ध पट्टा किया जाए और इनसे प्राप्त राशि को हर घर नल, जल संरक्षण और ग्राम्य हित के कार्यों में ही उपयोग किया जाए। उन्होंने इसके लिए एक स्पष्ट नियमावली तैयार करने के निर्देश भी दिए।

प्रेम विवाह करने पर युवक को बंधक बनाकर दी यातनाएं

कार्यालय संवाददाता, बरेली/आंवला

● घर में जबरन खींच कर ले गए प्लास से पैरों के नाखून खींचे

● पांच साल पहले किया था प्रेम विवाह, पांच के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

अमृत विचार : आंवला थाना क्षेत्र के गांव फुलासी में पांच वर्ष पूर्व प्रेम विवाह करने से गुस्साए युवती के परिजनों ने युवक को जबरन घर में खींच कर बंधक बनाया। इसके बाद पांच लोगों ने मिलकर उस पर तलवार और रॉड से हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। इतना ही नहीं आरोपी कई घंटों तक यातनाएं देते रहे। मौके पर पहुंची पुलिस ने पीड़ित को बंधन मुक्त कराते हुए अस्पताल में भर्ती कराया। साथ ही पांच के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

थाना क्षेत्र के गांव फुलासी निवासी राजीव कुमार सिंह ने बताया कि उसके बेटे प्रवेश कुमार सिंह ने करीब पांच वर्ष पूर्व गांव के ही रहने वाले श्याम सिंह की बेटी सलोनी से प्रेम विवाह किया था। उसी समय से श्याम सिंह का परिवार उनके परिवार से रंजिश मानता है। आरोप है कि श्याम सिंह ने उसकी पुत्रवधू सलोनी को बिना तलाक कराए किसी और जगह बेंच दिया है। सलोनी के साथ प्रवेश का बेटा कार्तिक भी है। राजीव के अनुसार सोमवार की सुबह करीब 10 बजे उसका बेटा प्रवेश घर से बाहर जा रहा था। आरोप है कि इसी बीच गांव के ही श्याम सिंह, मोहन उर्फ मोहनी, संतोष देवी (पत्नी श्याम सिंह) और दो अन्य ने उसे रास्ते में रोककर जबरन अपने घर में खींच लिया और बंधक बनाकर श्याम सिंह ने उसके सिर पर तलवार से वार किया, जबकि मोहन उर्फ मोहनी ने लोहे की रॉड से पीटा। संतोष देवी ने प्लास से प्रवेश के पैर का नाखून तक निकाल लिया और हाथ की अंगुली दबाकर जख्मी कर दी।

रस्सियों से बांधकर रखा

गांव वालों ने मामले की जानकारी राजीव को दी तो वह अपने चाचा बिहारी सिंह के साथ मौके पर पहुंचे। जहां दरवाजा बंद मिला। दरवाजा खुलवाने पर उन्होंने देखा कि प्रवेश रस्सियों से बंधा गंभीर हालत में पड़ा था। मिन्नतों के बावजूद नहीं छोड़ने पर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर प्रवेश को बंधक मुक्त कराया। आवंला थाना प्रभारी ने बताया कि शिकायत पर श्याम सिंह, मोहन उर्फ मोहनी, संतोष देवी, दो अज्ञात पर रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश की जा रही है।

दिवंगत आईपीएस पूरन कुमार पर आरोप लगा एएसआई ने जान दी

चंडीगढ़, एजेंसी

● छह मिनट का वीडियो और तीन पन्नों का सुसाइड नोट छोड़ा

हरियाणा में एक सहायक उप-निरीक्षक ने मंगलवार को रोहतक जिले में गोली मारकर आत्महत्या कर ली। उन्होंने दिवंगत आईपीएस अधिकारी वाई पूरन कुमार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए छह मिनट का वीडियो व तीन पन्नों का एक सुसाइड नोट छोड़ा है।

एएसआई संदीप कुमार ने पूरन के सहयोगी और हेड कांस्टेबल सुशील की गिरफ्तारी में अहम भूमिका निभाई थी। संदीप ने वीडियो में पूरन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि भगत सिंह ने भी बलिदान दिया व एक कठिन रास्ता अपनाया, जिसके बाद देश जागृत हुआ। वीडियो में यह भी सुना जा सकता है कि 'ईमानदार अधिकारी' नरेंद्र बिजारणिया ने पूरन से सवाल किए थे। पूरन का नाम हाल ही में एक रिश्वत कांड में सामने आया था। रोहतक में शराब ठेकेदार ने हेड कांस्टेबल सुशील पर रिश्वतखोरी का मामला दर्ज कराया था कि सुशील ने पूरन के नाम पर 2.5 लाख की रिश्वत मांगी थी। सुशील को हाल ही में गिरफ्तार किया गया था।

डीजीपी छुट्टी पर भेजे गए

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने आईपीएस अधिकारी की आत्महत्या मामले को लेकर विपक्ष के हमले के बीच राज्य के डीजीपी शत्रुजी को छुट्टी पर भेज दिया। सरकार ने इससे पहले रोहतक के पूर्व पुलिस अधीक्षक नरेंद्र बिजारणिया का तबादला कर दिया था।

14.82 लाख राज्यकर्मियों को मिलेगा बोनस

● दीपावली से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दी खुशखबरी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी ने दीपावली के मौके पर राज्य सरकार के 14 लाख 82 हजार कर्मचारियों को वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए बोनस देने का निर्णय लिया है। इस पर कुल व्ययभार 1,022 करोड़ रु. आएगा। सीएम ने कहा यह निर्णय कर्मचारियों के परिश्रम और निष्ठा के प्रति राज्य सरकार की सराहना का प्रतीक है। बोनस मासिक परिलब्धियों की सीमा 7,000 रु. के आधार पर 30 दिनों की परिलब्धियों का आगणन करते हुए दिया जाएगा, प्रत्येक पात्र को 6,908 रु. का लाभ मिलेगा।

ऐलान अमेरिका के बाहर भारत में सबसे बड़ा एआई केंद्र होगा स्थापित

गूगल एआई केंद्र के लिए 15 अरब डॉलर का करेगा निवेश

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिका की कंपनी गूगल अगले पांच वर्ष में विशाखापत्तनम में एक कृत्रिम मेधा (एआई) केंद्र स्थापित करने के लिए 15 अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश करेगी। इसमें अडाणी समूह के साथ साझेदारी में देश का सबसे बड़ा डेटा सेंटर भी शामिल होगा।

प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनी ने कहा कि आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में यह एआई केंद्र अमेरिका के बाहर गूगल का सबसे बड़ा केंद्र होगा। इसमें एक गीगावाट का डाटा सेंटर परिसर, नए बड़े पैमाने के ऊर्जा स्रोत एवं विस्तारित फाइबर-ऑप्टिक नेटवर्क शामिल होगा। कंपनी के एक कार्यक्रम में गूगल क्लाउड के सीईओ थॉमस कुरियन ने कहा, यह अमेरिका के बाहर सबसे बड़ा एआई केंद्र होगा जिसमें हम निवेश करने जा रहे हैं। कार्यक्रम में औपचारिक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। यह घोषणा नयी दिल्ली में गूगल द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'भारत एआई शक्ति' के दौरान की गई। यह कार्यक्रम भारत-एआई इम्पैक्ट समिट 2026 से पहले आयोजित किया गया। आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव, वित्त मंत्री सीतारमण और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से बात करके बहुत अच्छा लगा, हमने विशाखापत्तनम में पहले गूगल एआई केंद्र के लिए अपनी योजनाओं को साझा किया जो एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। पिचाई ने लिखा, यह केंद्र गीगावाट स्तरीय कंप्यूटिंग क्षमता, एक नया अंतर्राष्ट्रीय सब-सी गेटवे और विशाल ऊर्जा अवसंरचना को एक साथ लाता है।

गूगल एआई केंद्र डिजिटल अर्थव्यवस्था को देगा बढ़ावा : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि विशाखापत्तनम में गूगल एआई केंद्र की स्थापना प्रौद्योगिकी के लोकतांत्रीकरण में एक बेहद महत्वपूर्ण कदम होगा। मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, आंध्र प्रदेश के शहर विशाखापत्तनम में गूगल एआई केंद्र की स्थापना को लेकर काफी खुश हूं।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

न्यूज ब्रीफ

पटेल जयंती पर भाजपा करेगी राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम

अमृत विचार, लखनऊ : भारत रत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर भारतीय जनता पार्टी पूरे देश में विविध कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करेगी। भाजपा के कार्यकर्ता बूथ स्तर से लेकर जिला पंचायत तक संगोष्ठियों का आयोजन कर सरदार पटेल के जीवन, उनके अदम्य साहस और राष्ट्र एकता में दिए गए योगदान को स्मरण करेंगे। उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 10 किलोमीटर की पदयात्रा आयोजित की जाएगी। इस पदयात्रा के माध्यम से जनता को सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत कराया जाएगा। कार्यक्रम की सफलता के लिए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने एक अभियान संचालन समिति का गठन किया है।

फर्जीवाड़ा करने वाला गिरफ्तार

अमृत विचार, लखनऊ : आर्थिक अपराध अनुसंधान संगठन (ईओडब्ल्यू) ने मंगलवार को एक जालसाज को गिरफ्तार किया। आरोपी व उसके गिरोह ने कानपुर में भारत सरकार की अधिकृत फर्म भारत गैस एंड कारपोरेशन लिमिटेड और एचपी ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड के नाम पर फर्जीवाड़ा कर विज्ञापन प्रकाशित कराए थे। इन विज्ञापनों के जरिये डीलर व डिस्ट्रीब्यूटरशिप देने के नाम पर करीब 30 लाख रुपये की ठगी की गई थी। ईओडब्ल्यू अधिकारियों के अनुसार पकड़ा गया आरोपी प्रमोद कुमार कानपुर निवासी है। उसने अपने साथियों के साथ मिलकर 1997 में गिरोह तैयार किया था। मामले की जांच ईओडब्ल्यू को सौंपी गई। अब तक चार आरोपियों को गिरफ्तार कर चार्जशीट दाखिल की जा चुकी है।

बच्चों में बढ़ता मोटापा बड़ी चुनौती : लीना जौहरी

अमृत विचार, लखनऊ : महिला कल्याण एवं बाल विकास पुष्टाहार विभाग की अपर मुख्य सचिव(एसीएस) लीना जौहरी ने कहा कि बच्चों और किशोरों में बढ़ता मोटापा अब कुपोषण का नया स्वरूप बन गया है। इससे गैर-संचारी रोगों का खतरा बढ़ता है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ आज और सुरक्षित कल के लिए पोषण साक्षरता अनिवार्य है। इसका उद्देश्य अधिक से अधिक परिवारों तक भोजन और पोषण संबंधी सही जानकारी पहुंचाना तथा समुदाय में पोषण के प्रति व्यवहारिक बदलाव लाना है। एसीएस, मंगलवार को राष्ट्रीय पोषण माह अंतर्गत "स्वस्थ जीवन शैली और संतुलित आहार– बच्चों और किशोरों के विकास का आधार" विषयक पोषण पाठशाला में संबोधित कर रही थी।

दीपावली पर 24 घंटे निर्बाध विद्युत आपूर्ति के निर्देश

अमृत विचार, लखनऊ : नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने दीपावली, गोवर्धन पूजा एवं छठ पूजा जैसे महत्वपूर्ण पर्वों के मद्देनजर कैंप ऑफिस से वर्चुअल समीक्षा बैठक कर ऊर्जा एवं नगर विकास विभाग के तैयारियों की समीक्षा की एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान ऊर्जा मंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि दीपावली पर्व के दौरान 24 घंटे निरंतर एवं गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि त्योहारों के समय बिजली कटौती से जनसामान्य को असुविधा न हो, इसके लिए सभी स्तरों पर विद्युत व्यवस्था की गहन मॉनिटरिंग की जाए। मंत्री ने कहा कि उपभोक्ताओं को बेहतर बिजली मिले, इसके लिए लो वोल्टेज एवं बार-बार शटडाउन की समस्या पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि आवश्यक मरम्मत एवं रखरखाव कार्य समय रहते पूरे कर लिए जाएं।

दीपावली पर 1.86 करोड़ माताओं-बहनों को मिलेंगे दो मुफ्त सिलेंडर

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- मुख्यमंत्री योगी आज उज्जवला योजना के तहत देंगे निशुल्क सिलेंडर का उपहार
- दो चरणों में वितरण, पहला चरण अक्टूबर से दिसंबर तक व दूसरा चरण जनवरी 2026 से मार्च तक

अमृत विचार : योगी सरकार राज्य कर्मियों को बोनस का उपहार देने के साथ दीपावली पर उत्तर प्रदेश की करोड़ों महिलाओं के चेहरों पर मुस्कान लाने जा रही है।

सरकार ने प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और वंचित परिवारों को राहत देते हुए दो निःशुल्क एलपीजी सिलेंडर रिफिल देने का फैसला लिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को लोकभवन सभागार में इस योजना का शुभारंभ करेंगे और पात्र महिलाओं को मुफ्त सिलेंडर रिफिल का उपहार सौंपेंगे।

उज्ज्वला लाभार्थियों को प्रति वर्ष दो निःशुल्क एलपीजी रिफिल देने के तहत यह वितरण वित्तीय वर्ष 2025-26 में दो चरणों में किया जाएगा। पहला चरण अक्टूबर से दिसंबर तक और दूसरा चरण जनवरी 2026 से मार्च तक है। इस योजना के क्रियान्वयन के लिए प्रदेश सरकार ने 1500 करोड़ रु. की धनराशि का प्रावधान किया है।

पहले चरण के लिए राज्य में 1.23 करोड़ उज्ज्वला लाभार्थियों का आधार प्रमाणन पूरा हो चुका है। योजनान्तर्गत तीनों ऑयल कंपनियों (इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम) के माध्यम से यह वितरण सुनिश्चित कराया जा रहा है। राज्य स्तरीय समन्वयकों द्वारा मांगी गई 346.34 करोड़ रु. की अग्रिम धनराशि ऑयल कंपनियों को दे दी गई है, ताकि वितरण में किसी प्रकार की देरी न हो।

इस तरह मिलेगा लाभार्थियों को योजना का लाभ

- लाभार्थी अपने स्तर से प्रचलित उपभोक्ता दर (सब्सिडी सहित) के अनुसार 14.2 किग्रा एलपीजी सिलेंडर रिफिल खरीदेंगे। इसके बाद मात्र 3–4 दिनों के भीतर सब्सिडी की राशि उनके आधार प्रमाणित बैंक खातों में ऑयल कंपनियों द्वारा अंतरित कर दी जाएगी। केंद्र सरकार की और राज्य सरकार की ओर से सब्सिडी की राशि अलग-अलग लाभार्थियों के खातों में भेजी जाएगी। जिनके पास 5 किग्रा के सिलेंडर हैं, वे चाहें तो 14.2 किग्रा के सिलेंडर भी प्राप्त कर सकते हैं। वहीं, जिनके पास केवल एक कनेक्शन है, उन्हें भी योजना का लाभ मिलेगा।

सिलेण्डर का वजन कम पाया जाता है तो होगा रिप्लेस

- शासन ने यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं कि उपभोक्ताओं को पूरी मात्रा (14.2 किग्रा) में गैस मिले। यदि किसी सिलेण्डर का वजन कम पाया जाता है, तो वितरक अपने संसाधनों से सिलेण्डर रिप्लेस करेगा। बांट माप विभाग और जिला प्रशासन को समय-समय पर जांच के आदेश जारी किए गए हैं। राज्य स्तर पर खाद्यायुक्त कार्यालय में गठित समिति योजना की नियमित समीक्षा करेगी। वहीं, जिला स्तर पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति साप्ताहिक समीक्षा बैठकें करेगी। साथ ही जिन लाभार्थियों का आधार अभी प्रमाणित नहीं हुआ है, उनका प्रमाणन प्रशासन और ऑयल कंपनियों के सहयोग से अभियान चलाकर किया जा रहा है।

37 डिब्बे प्रतिबंधित दवाएं पकड़ीं

अमृत विचार, लखनऊ : शासन के निर्देश पर पूरे प्रदेश में अवैध दवाओं और नशीले केमिकल्स के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के अंतर्गत मंगलवार को लखीमपुर खीरी के गोला गोकरन नाथ स्थित दवा दुकानों पर छापेमारी की गयी। इस दौरान अनाधिकृत रूप से नारकोटिक्स श्रेणी की ट्रामाडॉल कैप्सूल के कुल 37 बाक्स जब्त किए गए। इनमें चार सैंपल एकत्र करके राजकीय प्रयोगशाला में जांच के लिए भेज दिया गया है।

सुरक्षित, स्वच्छ और सुव्यवस्थित नगरों का निर्माण सुनिश्चित करें

मुख्यमंत्री योगी ने व्यापक 'शहरी पुनर्विकास नीति' की आवश्यकता पर दिया बल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- पर्याप्त सार्वजनिक सुविधाओं और पर्यावरणीय संतुलन के साथ विकसित करना है मसौदा
- ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाए
- पुराने बाजारों, औद्योगिक क्षेत्रों और अनधिकृत बस्तियों के लिए क्षेत्रवार अलग रणनीति बनाएं

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को अपने सरकारी आवास में आवास विभाग की बैठक करते हुए।

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को आवास विभाग की बैठक में व्यापक ''शहरी पुनर्विकास नीति'' की आवश्यकता पर बल दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि नई नीति का उद्देश्य पुराने, जर्जर और अनुपयोगी क्षेत्रों को आधुनिक शहरी बुनियादी ढांचे, पर्याप्त सार्वजनिक सुविधाओं और पर्यावरणीय संतुलन के साथ विकसित करना है। उन्होंने कहा कि नीति में ऐसे प्रावधान किए जाएं, जिनसे निवास योग्य, सुरक्षित, स्वच्छ और सुव्यवस्थित नगरों का निर्माण सुनिश्चित हो।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नगरों की ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाए। पुराने बाजारों, सरकारी आवास परिसरों, औद्योगिक क्षेत्रों और अनधिकृत बस्तियों के लिए क्षेत्रवार अलग रणनीति तैयार की जाए। नीति में सेवानिवृत्त सरकारी आवासों, पुरानी हाउसिंग सोसाइटियों तथा अतिक्रमण प्रभावित क्षेत्रों के पुनर्विकास को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए गए हैं।

योगी आदित्यनाथ के मुताबिक, ''शहरी पुनर्विकास नीति'' केवल भवनों के पुनर्निर्माण तक सीमित न रहकर शहरों के समग्र पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त करेगी। कहा कि हमारे नगर केवल इमारतों का समूह नहीं, बल्कि जीवंत सामाजिक संरचनाएं हैं। इनके पुनर्जीवन के लिए ऐसी नीति आवश्यक है, जो आधुनिकता, परंपरा और मानवता तीनों का संतुलित समन्वय करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि नई नीति में राज्य स्तरीय पुनर्विकास प्राधिकरण, परियोजनाओं की सिंगल विंडो अप्रूवल प्रणाली और पीपीपी मॉडल को प्राथमिकता दी जाए। निवेशकों को स्पष्ट दिशा-निर्देश, प्रोत्साहन और सुरक्षा दी जाए, ताकि निजी क्षेत्र पुनर्विकास में सक्रिय भागीदारी कर सके।

उन्होंने कहा कि नई नीति का मसौदा जनप्रतिनिधियों, नगर निकायों और आम नागरिकों से प्राप्त सुझावों के आधार पर अंतिम रूप से तैयार किया जाए और शीघ्र मंत्रिपरिषद के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया जाए। बैठक में नगरीय क्षेत्रों में विकास प्राधिकरणों द्वारा लिए जाने वाले बाह्य विकास शुल्क पर भी चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने बाह्य विकास शुल्क को व्यावहारिक और जनहित के अनुरूप बनाए जाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि वर्तमान में सभी प्रकार के भूमि उपयोग आवासीय, व्यावसायिक, औद्योगिक और कृषि पर समान शुल्क दरें लागू हैं, जो व्यावहारिक नहीं हैं। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि नई व्यवस्था में स्थान और भूमि उपयोग के आधार पर शुल्क दरों में अंतर रखा जाए।

सामान्य व्यक्ति स्वयं अपने शुल्क की गणना कर सकें

- मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि कृषि एवं औद्योगिक उपयोग की भूमि पर बाह्य विकास शुल्क, आवासीय और व्यावसायिक उपयोग की तुलना में कम होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय नगर निकाय सीमा के भीतर और नगर निकाय सीमा के बाहर की भूमि पर भी शुल्क की दरों में अंतर किया जाए, ताकि निवेशकों और आम नागरिकों दोनों के हितों का संतुलन बना रहे। उन्होंने बाह्य विकास शुल्क की गणना प्रणाली में पारदर्शिता और सरलता लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यवस्था बनाई जाए जिसमें सामान्य व्यक्ति भी बिना किसी परेशानी के स्वयं अपने शुल्क की गणना कर सके। इसके लिए शुल्क निर्धारण का फॉर्मूला स्पष्ट, ऑनलाइन और न्यूनतम मानव हस्तक्षेप वाला होना चाहिए।

विकास प्राधिकरणों की जवाबदेही तय हो

- मुख्यमंत्री ने कहा कि बाह्य विकास शुल्क से प्राप्त धनराशि का उपयोग वास्तव में बाह्य बुनियादी सुविधाओं जैसे सड़क, जलापूर्ति, सीवरेज, स्टॉर्म वाटर ड्रेनेज, विद्युत व अन्य जनसुविधाओं के विकास में ही किया जाए। इसके लिए विकास प्राधिकरणों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने आवास विभाग को निर्देश दिया कि बाह्य विकास शुल्क से संबंधित वर्तमान प्राविधानों की समीक्षा कर, जनसुलभ, पारदर्शी और व्यवहारिक नीति का प्रारूप शीघ्र तैयार किया जाए, ताकि नगरीय विकास योजनाओं में गति आए और नागरिकों को वास्तविक लाभ मिले।

भाजपा जातिवादी पार्टी सावधान रहना है

अमृत विचार, लखनऊ : सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा बहुत बड़ी जातिवादी पार्टी है, समाज में नफरत फैलाती है और विघटन पैदा करती है।

भाजपा से सभी को सावधान रहना है। उप्र. में अपराधियों से प्रशासन की सांठ-गांठ है। प्रदेश की कानून व्यवस्था, स्वास्थ्य और शिक्षा सब कुछ बर्बाद है। भाजपा सरकार में जातीय उत्पीड़न और भेदभाव चरम पर है।

सपा प्रमुख मंगलवार को पार्टी कार्यालय पर विभिन्न जिलों से आए कार्यकर्ताओं एवं नेताओं को संबोधित कर रहे थे। गोमती नदी की सफाई की व्यवस्था सपा सरकार में की गई, लेकिन भाजपा सरकार ने सब खराब कर दिया है। अब चला-चली की बेला है तो गोमती नदी की सफाई को लेकर ढोंग कर रहे हैं।

एडेड माध्यमिक स्कूलों के 1641 शिक्षकों के होंगे ऑफलाइन ट्रांसफर

संवाददाता, लखनऊ

- अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा ने शासनादेश जारी किया

अमृत विचार : योगी सरकार ने प्रदेश के अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों के ऑफलाइन स्थानान्तरण की सहमति दे दी है। इस सम्बन्ध में अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा ने मंगलवार को शासनादेश जारी कर दिया है।

जारी शासनादेश के अनुसार, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय स्तर पर लम्बित कुल 1641 शिक्षकों का ही ऑफलाइन स्थानान्तरण किया जाएगा। इसके पश्चात वर्तमान शैक्षिक सत्र में कोई नया आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। साथ ही किसी भी शिक्षक को ऐसे विद्यालय में स्थानान्तरित नहीं किया जाएगा, जहाँ वह पूर्व में कार्यरत रह चुका हो। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि स्थानान्तरण की प्रक्रिया को यथाशीघ्र पूर्ण करें, जिससे शैक्षणिक कार्य में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। इससे सैकड़ों शिक्षकों को राहत मिली है। उन्होंने इसके लिए सरकार को धन्यवाद भी दिया है। शासनादेश के बाद जल्द ही इस पर अमल होगा।

दीपावली व छठ पर्व पर चलेंगी अतिरिक्त बसें

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- दिल्ली से लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, अयोध्या, कानपुर सहित प्रमुख मार्गों पर बसें चलेंगी
- गाजियाबाद, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, सहारनपुर, आगरा, अलीगढ़ और इटावा के लिए भी बसों की संख्या बढ़ाई जाएगी

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर दीपावली, भैयादूज और छठ जैसे प्रमुख पर्वों पर प्रदेशवासियों की सुरक्षित एवं सुगम यात्रा उपलब्ध कराने की तैयारी शुरू कर दी है। प्रदेश में 18 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2025 तक प्रोत्साहन अवधि घोषित किया गया है, प्रोत्साहन अवधि में कार्यरत चालकों, परिचालकों और कर्मचारियों के लिए सरकार ने आर्थिक प्रोत्साहन योजना की भी घोषणा की है, जिसमें इन्हें इस अवधि में कार्यकरने पर अतिरिक्त राशि दी जाएगी।

परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने मंगलवार को बताया कि कहा कि दिल्ली से पूर्वी उत्तर प्रदेश के यात्रियों के लिए लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, अयोध्या, कानपुर सहित प्रमुख मार्गों पर अतिरिक्त बसें चलाई जाएंगी। इसके अलावा गाजियाबाद, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, सहारनपुर, आगरा, अलीगढ़ और इटावा के लिए भी बसों की संख्या बढ़ाई जाएगी। परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक प्रभु नारायण सिंह ने बताया कि जो चालक-परिचालक 12 दिन ड्यूटी करते हुए औसतन 300 किमी प्रतिदिन का संचालन करेंगे, उन्हें 400 रूपए प्रतिदिन की दर से 4800 रूपए दिए जाएंगे। यदि कोई कर्मी 13 दिन लगातार ड्यूटी करता है और तय मानक पूरा करता है, तो उसे 450 रूपए प्रतिदिन की दर से 5850 रूपए मिलेंगे। साथ ही उन्होंने बताया कि अनुबंधित चालकों-परिचालकों को मानक से अधिक चलने पर 55 पैसे प्रति किमी अतिरिक्त मानदेय दिया जाएगा

एनकाउंटर में मारे गए 256 दुर्दांत अपराधी

राज्य ब्यूरो,लखनऊ

- मिशन शक्ति 5.0 के तहत 20 दिनों में एक दर्जन से अधिक एनकाउंटर हुए

कुछ दिन पहले बरेली में अभिनेत्री दिशा पाटनी के घर पर फायरिंग करने वाले बदमाशों को करारा जवाब दिया।

अमृत विचार : योगी सरकार ने जीरो टॉलरेंस नीति के तहत प्रदेश में पिछले साढ़े आठ वर्षों में अपराध और अपराधियों के खिलाफ ताबड़तोड एनकाउंटर कार्रवाई की है। एनकाउंटर में मेरठ जोन ने मारी बाजी और पूरे प्रदेश में एनकाउंटर में पहले स्थान पर है।

उक्त क्रम में ही मिशन शक्ति 5.0 के तहत पिछले 20 दिनों में एक दर्जन से अधिक एनकाउंटर की कार्रवाई की। बीते सोमवार को मेरठ में एक बच्ची के साथ दरिंदगी करने वाले इनामी बदमाश शहजाद उर्फ निक्की को ढेर किया जबकि साथ दरिंदगी करने वाले इनामी बदमाश 15,726 मुठभेड़ की कार्रवाइयां कीं, जिनमें 31,960 अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। एनकाउंटर में 10,324 अपराधी घायल हुए। वहीं 18 पुलिसकर्मी भी शहीद हो गये जबकि 1,754 पुलिसकर्मी घायल हुए। प्रदेश में सबसे अधिक मेरठ ज़ोन में पुलिस ने 4,453 कार्रवाई की।

जिसमें 85 कुख्यात अपराधियों को मौके पर ही मारे गए, हालांकि दो पुलिसकर्मी भी शहीद हो गये। इसी तरह, दूसरे स्थान पर रहे वाराणसी ज़ोन में 1,108 मुठभेड़ में 27 अपराधी ढेर हुए। तीसरे स्थान पर रहे आगरा जोन में 2,374 एनकाउंटर की कार्रवाई के दौरान 22 अपराधी मार गिराए गए। मुठभेड़ के दौरान 59 पुलिसकर्मी घायल हुए।

महाकुंभ-2025 से भी सुधारी राज्य की अर्थव्यवस्था

लखनऊ, अमृत विचार : राजधानी पहुंची राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग (नेशनल स्टैस्टिकल कमीशन-एनएससी) के प्रतिनिधमंडल के समक्ष मंगलवार को योगी सरकार के अफसरों ने महाकुंभ-2025 जैसे विशेष आयोजन का राज्य की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव समेत राज्य की अन्य आर्थिक कदमताल से अवगत कराया।

राज्य सरकार का प्रस्तुतिकरण देख राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग के अध्यक्ष, प्रो. राजीव लक्ष्मण करिंदकर ने उत्तर प्रदेश की सांख्यिकीय प्रणाली की प्रगतिशील दिशा की सराहना की और इसे देश के अन्य राज्यों के लिए अनुकरणीय बताया। इसी क्रम में आयोग की ओर से उच्चस्तरीय बैठक से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर केंद्र एवं राज्यों के बीच सांख्यिकीय क्रियाकलापों में समुचित समन्वय एवं प्रभावी रणनीतियां विकसित करने की प्रतिबद्धता दोहरायी गई।

बाजार से चांदी फुर्र, त्योहार में चाहिए तो कराएं बुकिंग

नीरज मिश्र, लखनऊ

- करीब 15 फीसद अतिरिक्त प्रीमियम देने पर ही मिल रहा यह श्वेत मेटल

चांदी की कमी बाजार में है। खरीदारों के बीच दीपावली पर्व पर सर्वाधिक इस्तेमाल होने वाली यह धातु इन दिनों बाजार में जरूरत से काफी कम है। जिस ज्वेलर्स को ज्यादा जरूरत है उसे करीब 15 फीसद प्रीमियम देना पड़ रहा है। सर्राफ को समय से चांदी न मिली तो पर्व निकल जाएगा। फिलीपींस, कनाडा, घाना, दक्षिण अफ्रीका, लंदन, आस्ट्रेलिया, रूस आदि से आने वाली यह कीमती श्वेत धातु जरूरत से काफी आ रही है।

-अनुराग रस्तोगी, स्टेट हेड इंडिया बुलियन ज्वेलर्स एसोसिएशन(इब्जा)

अमृत विचार : त्योहारी सीजन में अचानक बाजार में चांदी की कमी हो गई है। वैश्विक उथल-पुथल तो चल ही रही थी कि दीपावली पर बढ़ती खपत से यह सफेद धातु मार्केट से अचानक फुर्र हो गई है। कारोबारियों का मानना है कि बैंक और बुलियन मर्चेंट्स ने सिल्वर धातु की बिक्री में कमी कर दी है। यही नहीं विदेशों से आने वाली चांदी की आवक भी थमी है। हाल यह है कि बाजार की जरूरत को देखते हुए माल दबाए लोग या यूं कहे कि स्टॉकिस्ट लगभग '15 प्रतिशत अतिरिक्त प्रीमियम' पर ही इसे मार्केट में निकाल रहे हैं। इस पर्व पर जब सबसे ज्यादा चांदी की ज्वेलरी, सिक्के आदि चीजों के खरीदार बाजार में होते हैं उस दौरान करीब हफ्तेभर की बुकिंग ने बाजार की सिल्वर बिक्री पर ब्रेक लगा दिया है। चांदी न मिलने से व्यापार सीधे तौर पर प्रभावित हो रहा है।

धनतेरस पर बिकते हैं ज्यादा चांदी के आइटम

- इस पंचदिवसीय पर्व पर सबसे ज्यादा चीजें बाजार में बनती हैं। श्वेत धातु की 'शुभता' अधिक होने और सोने की अपेक्षा कीमत कम होने के कारण इससे तमाम आइटम बनाये जाते हैं। जिनकी खूब बिक्री पर्व के दौरान होती है।

चांदी के गणेश लक्ष्मी बने सिक्कों का बाजार रहता है गर्म

- इस पंचदिवसीय पर्व पर बड़ी संख्या में गणेश-लक्ष्मी बने सिक्कों के खरीदार होते हैं। आस्थावान सबसे ज्यादा इन्हीं सिक्कों की पूजा करते हैं। सिक्कों की दिनरात ढलाई का काम सर्राफा बाजार में होता है। श्रीगणेश और माता महालक्ष्मी की मूर्तियां खूब बनती और बिकती हैं। इसके अतिरिक्त चांदी के बार (बिस्किट, ईंट जैसी आकृति), पूजन के लिए बर्तन आदि चीजों की बिक्री चरम पर होती है।

रेयर अर्थ में शुमार होती है चांदी, कई अहम चीजों में होता है प्रयोग

- चांदी रेयर अर्थ के रूप में शुमार होती है। इसका इलेक्ट्रानिक्स, ऑटोमोबाइल सेक्टर समेत कई अन्य तकनीकी चीजों में जमकर प्रयोग किया जाता है। इन आर्टिकल पर ब्रेक नहीं लगता है। ऐसे में पर्व के दौरान चांदी की कमी बाजार की गति को प्रभावित कर रही है।

गोमती उद्गम स्थल पहुंची यूपीपीसीएल

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: केंद्रीय मंत्री एवं पीलीभीत सांसद जितिन प्रसाद की पहल पर गोमती तीर्थ स्थल के पुनरोद्धार एवं पर्यटन के दृष्टिकोण से विकसित करने के उद्देश्य से जहां जल शक्ति मंत्रालय की ओर से टीमें लगातार दौरा कर प्रोजेक्ट बनाने में जुटी हैं।

प्रदेश सरकार अब गोमती उद्गम तीर्थ स्थल को सजाने संवारने की तैयारी कर रही है। बीते दिवस उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कारपोरेशन की टीम ने भी उदगम स्थल पर पहुंचकर सर्वे किया। टीम ने उदगम स्थल का भ्रमण कर तमाम संभावनाओं को तलाशा। पिछले माह उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य एक दिवसीय दौरे पर पीलीभीत पहुंचे थे। यहां उन्होंने भाजपा कार्यालय में प्रबुद्धजनों के सम्मेलन को संबोधित करने के साथ अफसरों की बैठक कर जनपद में संचालित हो रही योजनाओं की प्रगति की समीक्षा थी।

बैठक के दौरान ही उन्होंने पर्यटन विभाग को गोमती उद्गम स्थल, शारदा सागर डैम व अन्य स्थानों को चिन्हित कर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने संबंधी प्रस्ताव तैयार कर भेजने के निर्देश दिए थे। हालांकि माधोटांडा स्थित मां गोमती उदगम तीर्थ स्थल के पुनरोद्धार एवं विकसित करने को जल शक्ति मंत्रालय की ओर से कई स्तर पर प्रोजेक्ट तैयार करने की कवायद चल रही है।

गोमती उद्गम स्थल का सर्वे करती यूपीपीसीएल की टीम। ● अमृत विचार

न्यूज ब्रीफ

मकानों पर नंबर प्लेट लगाने का आदेश रद्द

देहरादून, अमृत विचार : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मकानों पर नंबर प्लेट लगाने के संबंध में जिला पंचायतराज अधिकारी, टिहरी गढ़वाल एवं उत्तरकाशी द्वारा जारी आदेशों को तत्काल प्रभाव से रद्द करने के साथ ही मामले की पूरी जांच कराने और दोषियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। टिहरी एवं उत्तरकाशी जिले के जिला पंचायतराज अधिकारियों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन आदि कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार करने हेतु मकानों पर नम्बर प्लेट लगाने का कार्य एक बाहरी व्यक्ति को देने से संबंधित पत्र सोशल मीडिया में वायरल हुए थे।

शिक्षा मित्रों को जल्द मिलेगा बड़ा तोहफा

अमृत विचार, लखनऊ : श्रम एवं सेवायोजन मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि विगत 5 सितंबर 2025 को शिक्षक दिवस के दिन मुख्यमंत्री द्वारा शिक्षामित्रों को आशीर्वाद दिया गया और शिक्षामित्र के मानदेय वृद्धि तथा अन्य सुविधाएं प्रदान किए जाने की बात कही गयी है। इस लिए थोड़ा धैर्य रखिए, बहुत जल्द ही खुशी का परिणाम आने वाला है। श्रम मंत्री, मंगलवार को विधानसभा भवन के, तिलक हाल सभागार में आदर्श शिक्षामित्र वेलफेयर एसोसिएशन उप्र. के तत्वावधान में आयोजित 'शिक्षामित्र के भविष्य निर्धारण विषयक कार्य शाला' को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

उत्तरकाशी में भूकंप के झटके लगे

देहरादून, अमृत विचार : उत्तरकाशी जनपद में मंगलवार शाम भूकंप के झटके महसूस किए गए। जिला आपदा प्रबंधन केंद्र प्रभारी शार्दूल गुसाई ने बताया कि शाम 19:30:10 बजे भूकंप का झटका दर्ज किया गया, जिसका केंद्र उत्तराखंड-हिमाचल सीमा पर मोरी ब्लॉक के निकट था। इसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3.6 तीव्रता थी, जबकि गहराई 5 किलोमीटर नीचे पाई गई। जिला प्रशासन द्वारा स्थिति की निरंतर निगरानी की जा रही है। अब तक किसी प्रकार की हानि की सूचना प्राप्त नहीं हुई है।

एसटीएफ-पुलिस ने दबोचा हथियार सप्लायर

रुद्रपुर/गदरपुर, अमृत विचार : एसटीएफ और थाना गदरपुर पुलिस ने एक ऐसे हथियार सप्लायर को गिरफ्तार किया है। जो यूपी से हथियार लाकर तराई भावर के युवाओं को बेचने का धंधा करता था। पुलिस ने अभियुक्त के कब्जे से 12 और 315 बोर के सात तमंचे बरामद किए हैं। पुलिस ने अभियुक्त को न्यायालय के समक्ष पेश कर दिया।एसएसपी मणिकांत मिश्रा ने बताया कि थाना गदरपुर इलाके में एसटीएफ और पुलिस को इनपुट मिल रहा था कि जिले में हथियारों की सप्लाई हो रही है।

मॉल में चल रहे स्पा सेंटर पर मारा छापा

काशीपुर, अमृत विचार : शहर के एक मॉल में एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट ने मंगलवार को एक स्पा सेंटर पर छापेमारी की। टीम को सूचना मिली थी कि सेंटर में अवैध गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। छापेमारी के दौरान अनियमितता मिलने पर राजस्व की टीम की मौजूदगी में सेंटर को सील कर तीन युवतियों को रेस्क्यू किया गया। बाजपुर रोड स्थित एक स्पा सेंटर में एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट ने स्थानीय पुलिस के साथ छापा मारा। कार्यवाही से मॉल में हड़कंप मच गया। सूचना मिली थी कि सेंटर में कुछ बाहरी राज्यों की युवतियों से अवैध गतिविधियां कराई जा रही हैं।

गाजियाबाद : बेटी के सामने पत्नी की गोली मारकर हत्या

गाजियाबाद, एजेंसी

जिले के नंद ग्राम थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति ने घरेलू विवाद के बाद अपनी बेटी के सामने ही पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस के अनुसार नंद ग्राम थाना क्षेत्र के राजनगर एक्सटेंशन स्थित अजनारा सोसाइटी में विकास सहरावत नामक व्यक्ति ने अपनी पत्नी रूबी (45) को आज सुबह गोली मार दी।

घटना के समय उसकी 11 साल की बेटी नव्या घर पर मौजूद थी जबकि बड़ी बेटी काव्या स्कूल गई हुई थी। नंद ग्राम की सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) उपासना पांडे ने बताया कि सूचना मिलने पर पुलिस नंद ग्राम थाना क्षेत्र के राजनगर एक्सटेंशन स्थित अजनारा सोसाइटी पहुंची। फोरेंसिक टीम ने कमरे में बिखरे पड़े सामान से उंगलियों के निशान लिए और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उन्होंने बेटियों और पड़ोसियों से मिली जानकारी के हवाले से बताया कि सहरावत शराब का आदी था और वह पिछले एक महीने से कहीं और रह रहा था और आज सुबह वह अपना पासपोर्ट और आधार कार्ड लेने अपने फ्लैट पर पहुंचा थाइस दौरान उसकी अपनी पत्नी रूबी से तीखी बहस हुई और आक्रोश में आकर उसने उसे गोली मार दी। एसीपी ने बताया कि सदमे में आई नव्या पूरी घटना के बारे में कुछ भी बताने की हालत में नहीं है। रूबी को पास के अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस के अनुसार, इस जोड़े पर पहले मोदीनगर पुलिस ने हत्या के एक मामले में कथित संलिप्तता को लेकर गैंगस्टर कानून के तहत मामला दर्ज किया था।

परिवहन राज्य मंत्री के ख़िलाफ गैर जमानतीय वारंट जारी

बलिया, एजेंसी: जिले की एक अदालत निषेधाज्ञा के कथित उल्लंघन से जुड़े 10 साल पुराने एक मामले में पेश न होने के कारण उत्तर प्रदेश के परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किया है। अभियान पक्ष के सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि उप-निरीक्षक सत्येंद्र राय की शिकायत पर नौ सितंबर 2015 को बलिया नगर थाने में भारतीय दंड संहिता की धारा 188 के तहत एक प्राथमिकी दर्ज की गई थी। शिकायत में भाजपा नेता दयाशंकर सिंह, नागेंद्र पांडेय और 17 अन्य लोगों के साथ 100 से 150 अज्ञात व्यक्तियों का नाम शामिल था, जिन पर निषेधाज्ञा का उल्लंघन करते का आरोप है।

आजम खां ने कहा-वाई श्रेणी सुरक्षा देने के साथ गाड़ी, तेल और ड्राइवर भी दे सरकार

सरकार लिख कर नहीं देगी, तब तक नहीं लूंगा सुरक्षा

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

- **मेरे आर्थिक हालात खराब, मेरे पास सुरक्षाकर्मियों के लिए नहीं है कोई वाहन**
- **पूर्व मंत्री ने शहर विधायक आकाश सक्सेना का नाम लिए बिना साधा निशाना**

अमृत विचार : पूर्व मंत्री मोहम्मद आजम खां ने कहा है जब तक प्रदेश सरकार लिखित में नहीं देती तब तक वह वाई श्रेणी की सुरक्षा नहीं लेंगे। कहा कि उन्हें हालात ने बहुत कुछ सिखा दिया है। एक बार विधायक बने व्यक्ति को केंद्र सरकार के कमांडोज मिल गए हैं। इसी तर्ज पर उन्हें भी सुरक्षा दी जाए।

अपने आवास पर आजम खां ने पत्रकारों से कहा कि सरकारी जमीनों से नाजायज कब्जे सरकार ने हटाए। उस पर सरकारी इमारतें बनीं और इन इमारतों का सरकार ने अलाटमेंट किया। जबकि 21 साल की सजा उन्हें हुई और 36 लाख का जुर्माना भी पड़ा। कहा कि वह कैसे ले लें सुरक्षा जब तक उनके पास कोई तहरीर न हो। कहा कि किसने दी है यह सुरक्षा, मैं कैसे भरोसा करूं कि यह खाकी वर्दी पहने और हथियार लिए हुए लोग उत्तर प्रदेश सरकार के लोग हैं। उन्होंने कहा कि उनके हालात इस वक्त ऐसे नहीं हैं कि सिक्योरिटी के लिए कोई सवारी मुहैया करा सकें। अगर आप सुरक्षा दे रहे हैं तो इन्हें बैठाने

मोहम्मद आजम खां।

के लिए उनके पास गाड़ी नहीं है। उन्होंने कहा कि मुर्गी चोरी के इल्जाम में 21 साल की सजा पड़ी है और 36 लाख का जुर्माना लगा है। जबकि 113 मुकदमों के फैसले बाकी हैं। सजायाफ्ता को सिक्योरिटी नहीं मिलती तो कैसे मान लूं कि जो लोग आए हैं वे कब वापस ले लिए जाएंगे। शहर विधायक का नाम लिए बिना तंज किया कि हमारे विरोधियों के पास कमांडो हैं। जिन्होंने शहर लूट लिया, लोकतंत्र लूट किया, सारी व्यवस्था लूट ली उनके पास केंद्र सरकार के कमांडोज हैं।

उन्हें भी उतनी सुरक्षा दी जाए जितनी उनके विरोधियों के पास है। कहा कि वह दिल्ली चेकअप के लिए अकेले जाते हैं, उनके साथ कोई हादसा हो जाए तो क्या फर्क पड़ता है।

विधानसभा और लोकसभा में एक-एक शोकसभा हो जाएगी और लोग कहेंगे कि मरहूम बहुत अच्छे आदमी थे। कहा कि वह कुछ कह कर भी क्या कर लेंगे बस अपनी टांगें बचाए फिर रहे हैं। कहा कि न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए।

मां की गोद से चोरी मासूम 4.90 लाख में बेचा, मेरठ में बरामद

कलियर में जियारत करने आया था अमरोहा का दंपती, पुलिस ने 6 आरोपी दबोचे

संवाददाता, हरिद्वार

हरिद्वार पुलिस की गिरफ्त में बच्चा चोर गिरोह के सदस्य। ● अमृत विचार

अमृत विचार: बच्चा चोरी के सनसनीखेज मामले का कलियर थाना पुलिस ने 55 घंटे के भीतर खुलासा करते हुए बच्चा चोर गिरोह का भंडाफोड़ कर चार महिलाओं सहित छह आरोपी गिरफ्तार किए हैं।

एसएसपी हरिद्वार प्रमेंद्र सिंह डोबाल ने मंगलवार को बताया कि बीती 11 अक्टूबर को अमरोहा (यूपी) निवासी जहीर अंसारी ने कलियर थाने में शिकायत दर्ज करायी थी कि वह पत्नी और तीन माह के बेटे के साथ जियारत को आया था। इस दौरान दो अज्ञात महिलाएं झांसा देकर उसकी पत्नी की गोद में सो रहे तीन माह के मासूम को चोरी कर ले गईं। एसओ कलियर रविंद्र कुमार की टीम ने मासूम को मेरठ से सकुशल बरामद करते हुए चोरी और खरीद-फरोख्त में शामिल छह आरोपियों-मेरठ के अहमद नगर निवासी आस मोहम्मद उर्फ लंगड़ा, उसकी पत्नी शहनाज, श्याम नगर निवासी सलमा, सिविल लाइन निवासी अंचन, शास्त्रीनगर निवासी नेहा शर्मा और बच्चा खरीदने वाले विशाल गुप्ता निवासी कंकरखेड़ा को गिरफ्तार कर एक लाख रुपये बरामद किए। एसएसपी के अनुसार, विशाल की दस साल बाद भी संतान नहीं थी। दंपती का इलाज मेरठ के एक प्राइवेट अस्पताल में चल रहा था।

विशाल ने अस्पताल की पेशेंट कोऑर्डिनेटर नेहा के जरिए बच्चे का सौदा कराया था। बच्चा शहनाज व सलमा ने चोरी कर उसे तीन लाख में अंचन को बेचा था जबकि अंचन ने उसे 3.90 लाख में नेहा को और नेहा ने 4.90 लाख में विशाल को बेचा था। पुलिस की त्वरित कार्रवाई और तकनीकी जांच के दम पर महज 55 घंटे में मासूम को उसके माता-पिता से मिलवा दिया गया, जिससे परिजनों की आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े।

पानी भरे खेत में डूबने से भाई-बहन की मौत

चंदौली, एजेंसी: जिले के अलीनगर क्षेत्र में मंगलवार दोपहर पानी से भरे धान के खेत में डूबने से सगे भाई-बहन की मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों ने यहां बताया कि अलीनगर थाना क्षेत्र के रामपुर सरने गांव में मंगलवार दोपहर पानी से भरे धान के खेत में डूबने से खुशबू (चार साल) और और उसके भाई शिवांशु (ढाई साल) की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि खुशबू और शिवांशु गांव में ही स्थित आंगनबाड़ी केंद्र से पढ़ाई करके दोपहर करीब 12 बजे घर जा रहे थे और रास्ते में दोनों बच्चे खेतों की मेड़ से होकर गुजर रहे थे।

उनके अनुसार, इसी बीच पैर डगमगा जाने से दोनों पानी से भरे धान के एक खेत में जा गिरे और उसके दलदल में फंस जाने से उनकी मौत हो गयी। पुलिस क्षेत्राधिकारी कृष्ण मुरारी शर्मा ने बताया कि कुछ देर बाद लोगों को इसकी जानकारी हुई तो मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। शर्मा के मुताबिक, पुलिस ने दोनों के शवों को बाहर निकलवाया और पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

अमरोहा में बेटे ने सौतेले पिता का गला चाकू से रेता

कार्यालय संवाददाता अमरोहा

अमृत विचार: बेटे ने अपने सौतेले पिता की चाकू से गर्दन रेतकर हत्या दी। सीओ शक्ति सिंह पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। मामले की जांच पड़ताल की। फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट टीम ने भी साक्ष्य जुटाए। पुलिस ने आरोपी बेटे को आलाकत्ल के साथ गिरफ्तार कर लिया है। पता लगा कि सौतेला पिता उसकी पिटाई करता था जो उसे बर्दाश्त नहीं होता था।

मृतक जावेद।

नगर कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला दानिशमंदन बाईपास में जावेद का परिवार रहता है। जावेद मूल रूप से दिल्ली का निवासी था लेकिन करीब डेढ़ साल पहले अमरोहा नगर के मोहल्ला दानिशमंदन बाईपास में रहने लगा। उसने यहां की रहने वाली रजिया से निकाह किया था। रजिया ने पहले पति की मौत के बाद जावेद से निकाह किया था। परिवार में पत्नी रजिया के अलावा तीन सौतेले बेटे मोहम्मद अहमद, उस्मान व अयान और एक बेटी राबिया हैं। राबिया की शादी हो चुकी है। पुलिस के मुताबिक अहमद नशे का आदी है। इसको लेकर आए दिन झगड़ा होता रहता था। जावेद ने दो दिन पहले अहमद की पिटाई कर दी थी। अहमद सौतेला पिता होने के कारण जावेद को बर्दाश्त नहीं करता था और उस पर पिटाई करने का अधिकार नहीं होने की बात कहता था।

सोमवार की रात अहमद मोहल्ले में खेल खत्म करने की बात कहता घूम रहा था। रात में परिवार के सभी सदस्य खाना खाकर सोए थे। मंगलवार की सुबह करीब पांच बजे अहमद ने सोते समय सौतेले पिता जावेद की गर्दन पर चाकू से हमला कर हत्या कर दी। घटना के बाद लोगों की भीड़ जमा हो गई। एसपी अमित कुमार आनंद और सीओ सिटी शक्ति सिंह ने भी घटनास्थल का मुआयना किया। जांच पड़ताल के बाद पुलिस ने मोहम्मद अहमद को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उससे पूछताछ की तो उसने जुर्म कबूल कर लिया। पुलिस ने घटनास्थल से खून से सना चाकू भी बरामद कर लिया है।

कल्कि धाम के पास सरकारी जमीन पर बनी मस्जिद पर चला बुल्डोजर

कार्यालय संवाददाता,संभल

ध्वस्त करने के बाद पड़ा मस्जिद का मलबा। ● अमृत विचार

अमृत विचार: ऐंचोड़ा कंबोह में श्री कल्कि धाम के नजदीक सरकारी भूमि पर बनी मस्जिद पर मंगलवार को प्रशासन ने ध्वस्त कर मलवा भी जब्त कर लिया। कार्रवाई के दौरान प्रशासनिक टीम के साथ ही बड़ी संख्या में पुलिस और पीएसी के जवान तैनात रहे।

थाना ऐंचौड़ा कंबोह क्षेत्र के ऐंचोड़ा कंबोह गांव में सैदनगली-मनौटा मुख्य मार्ग के किनारे कुछ साल पहले मस्जिद का निर्माण किया गया था। सार्वजनिक पार्क के नाम पर दर्ज एक हेक्टेयर भूमि में से लगभग 262 वर्ग मीटर क्षेत्र पर मस्जिद का निर्माण किया गया था। जहां लंबे समय से मुस्लिम समुदाय के लोग नमाज अदा कर रहे थे। इस बीच प्रशासन ने शिकायत की गई कि मस्जिद का निर्माण अवैध तरीके से सरकारी जमीन पर किया गया है। हल्का लेखपाल सुरेंद्र कुमार सिंह की जांच में यह बात सामने आई कि जिस भूमि पर मस्जिद बनी है वह ग्राम सभा की सार्वजनिक पार्क की भूमि है। लेखपाल ने मामले को तहसीलदार न्यायालय में प्रस्तुत किया तो मामला आगे बढ़ा।

ग्राम सभा बनाम जमील अहमद के नाम से तहसीलदार न्यायालय में चले मुकदमे में तहसीलदार संभल धीरेंद्र प्रताप सिंह ने 24 सितंबर को बेदखली का आदेश पारित किया था। मस्जिद कमेटी से प्रशासन ने निर्माण खुद हटा लेने को कहा था। उस समय मस्जिद की एक दीवार हटा ली गई थी लेकिन बाकी निर्माण नहीं हटाया गया था। सरकारी जमीन से मस्जिद के निर्माण को हटाने के लिए नायब तहसीलदार दीपक जुरैल के नेतृत्व में प्रशासनिक टीम गठित की गई।

इस टीम में आधा दर्जन ने ज्यादा राजस्व अधिकारियों व लेखपाल शामिल किये गये थे। मंगलवार दोपहर को राजस्व टीम दो बुलडोजर लेकर मौके पर पहुंची। इस दौरान पुलिस बल मौजूद रहा। पीएसी जवानों को भी तैनात किया गया था।

वैलिंगबोरो के मेयर राज मिश्रा ने किया कल्कि धाम में शिला पूजन

संभल, अमृत विचार: इंग्लैंड की राजधानी लंदन की टाउन काउंसिल वैलिंगबोरो के मेयर राज मिश्रा सोमवार को श्री कल्कि धाम पहुंचे। उन्होंने शिला पूजन कर श्री कल्कि धाम के निर्माण कार्य के लिए अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

राज मिश्रा शाम करीब चार बजे श्री कल्कि धाम पहुंचे। श्री कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने अंगवस्त्र प्रदान कर मेयर राज मिश्रा का सम्मान कर आशीर्वाद दिया। इसके बाद मेयर ने निर्माणाधीन श्री कल्कि धाम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्थापित शिला का दर्शन कर पूजन किया। पत्रकारों से बातचीत करते हुए मेयर राज मिश्रा ने कहा कि यह उनके जीवन का सबसे गौरवपूर्ण क्षण है जब वह श्री कल्कि धाम में श्री कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम के सानिध्य में उपस्थित हैं। श्री कल्कि धाम विश्वभर में सनातन संस्कृति के प्रसार का केंद्र बनेगा।

अधिवक्ता के खाते से उड़ा दिए तीन लाख

काशीपुर, अमृत विचार: काशीपुर बार एसोसिएशन के पूर्व सचिव एवं वरिष्ठ अधिवक्ता अफसर अली खां के बैंक खातों से साइबर ठगों ने करीब तीन लाख रुपये उड़ा लिए।

अधिवक्ता ने साइबर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। मोहल्ला अल्ली खां निवासी पूर्व बार सचिव अफसर अल्ली खां ने पुलिस को दी तहरीर में कहा है कि उनका सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, शाखा ठाकुरद्वारा में बचत खाता है। यह खाता काशीपुर शाखा के खाते से लिंक है। उन्होंने बताया कि उनके मोबाइल पर आरटीओ चालान नाम की एक फाइल प्राप्त हुई थी, जो अनजाने में इंस्टॉल हो गई। इसी के सहारे ठगों ने 28 से 30 सितंबर के बीच उनके खाते से 2 लाख रुपये, 95 हजार, 5 हजार, 99 हजार और एक हजार रुपये की रकम बारी-बारी से निकाल ली। इसी प्रकार तीन अक्टूबर को उनके पंजाब नेशनल बैंक, काशीपुर शाखा के खाते से 80 हजार, 10 हजार और 10 हजार रुपये की साइबर ठगी कर ली गई।

याचिकाकर्ता पर हाईकोर्ट ने लगाया 5 लाख का जुर्माना

नैनीताल, अमृत विचार: हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जी. नरेंद्र एवं न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खंडपीठ ने घुड़दौड़ी इंजीनियरिंग कॉलेज (गोविंद बल्लभ पंत इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलोजी) के रजिस्ट्रार संदीप की नियुक्ति को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए याचिकाकर्ता पर पांच लाख का जुर्माना लगाया है।

विकास | राज्य स्तरीय सैन्क्शनिंग कमेटी की बैठक में वर्ष 2025-26 के लिए 450 करोड़ का आउट-ले अनुमोदित

जमीन पर उतरेंगी 200 करोड़ की कई परियोजनाएं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्य सचिव एसपी गोयल की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय सैन्क्शनिंग कमेटी (एसएलएससी) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में राज्य कृषि विकास कार्यक्रम (एसएडीपी) के तहत कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को मंजूरी दी गई। प्रमुख सचिव कृषि रवीन्द्र ने बताया कि वर्ष 2025-26 के लिए 450 करोड़ का आउट-ले अनुमोदित है और 200 करोड़ रुपये की धनराशि बजट प्राविधान में स्वीकृत है।

इस दौरान मुख्य सचिव ने कहा कि स्वीकृत परियोजनाओं से न केवल कृषि उत्पादन बढ़ेगा, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। अनुमोदित परियोजनाओं के अंतर्गत समस्त कार्य निर्धारित समयावधि में पूर्ण कराये जायें।

बैठक में प्रदेश के कासगंज, बागपत, शामली एवं भदोही में उप कृषि निदेशक कार्यालय भवन एवं मृदा परीक्षण भवन के निर्माण के लिए 18.24 करोड़ रुपए, पूर्व से निर्मित 326 किसान कल्याण केन्द्रों के सुचारु संचालन को विद्युत व्यवस्था एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं के विकास के लिए 21.03 करोड़ रुपए तथा कृषि विभाग के 57 राज्य कृषि प्रक्षेत्रों की 1729.42 हेक्टेयर ऊसर भूमि एवं 1274.68 हेक्टेयर अकृषि योग्य भूमि के विकास के लिए 17.40 करोड़ रुपए की परियोजना को स्वीकृति प्रदान की गई। इसी क्रम में झांसी एवं मिर्जापुर में इक्रीसेट के माध्यम से 13872 हेक्टेयर व 7996 हेक्टेयर भूमि में जल प्रबंधन एवं फसल पद्धतियों के विकास के लिए 39.08 करोड़ रुपए, मऊरानी (झांसी) में स्थित भूमि संरक्षण प्रशिक्षण केन्द्र पर हास्टल के निर्माण को 5.34 करोड़ रुपए, प्रदेश के 09 जैव उर्वरक उत्पादन प्रयोगशालाओं के आधुनिकीकरण के लिए 5.17 करोड़ तथा प्रसार प्रशिक्षण एवं ब्यूरो परिसर-लखनऊ में इनहाउस स्टूडियो निर्माण आदि कार्यों के लिए 4.36 करोड़ रुपए की परियोजना को मंजूरी दी गई।

लखनऊ में 36.15 करोड़ से बनेगा महिला छात्रावास

- इसी तरह राज्य कृषि प्रबंध संस्थान-रहमान खेड़ा (लखनऊ) के माध्यम से कृषि यंत्रीकरण एवं सोलर पम्प मैकेनिक के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए 1.91 करोड़ रुपए, पशुपालन विभाग के बक्शी तालाब-लखनऊ स्थित प्रशिक्षण केन्द्र के उच्चीकरण के साथ-साथ निबलेट बाराबंकी प्रक्षेत्र एवं निदेशालय परिसर में फार्म पोल्ट्री के विकास आदि के लिए 12.67 करोड़ रुपए की परियोजना को स्वीकृति प्रदान की गई। उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग के माध्यम से कसया-कुशीनगर में केला के पौध उत्पादन के लिए टिशू कल्चर लैब एवं सिगना-आगरा परिक्षेत्र पर हास्टल निर्माण, निदेशालय परिसर-लखनऊ में महिला छात्रावास आदि कार्यों के लिए 36.15 करोड़ रुपए की परियोजना को मंजूरी प्रदान की गई।

चार सामुदायिक रेशम कीटपालन केन्द्र बनेंगे

- इसी प्रकार रेशम विभाग के राजकीय प्रक्षेत्रों पर 04 सामुदायिक रेशम कीटपालन केन्द्र तथा प्रक्षेत्रों की सुरक्षा को तारबाड़ एवं अन्तर्राज्यीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए 17.63 करोड़ रुपये, सहकारिता विभाग की 12 प्राथमिक साधन सहकारी समितियों पर 100 मीट्रिक टन क्षमता के 12 गोदामों के निर्माण के लिए 5.90 करोड़ रुपए तथा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय मेरठ एवं अयोध्या तथा पीडीडीयू-मथुरा तथा कृषि विज्ञान केंद्र गनीवा-चित्रकूट पर प्राकृतिक खेती के उत्थान को आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र आदि के लिए 11.62 करोड़ रुपए की परियोजना को स्वीकृति दी गई।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

न्यूज ब्रीफ

सीएम का आपत्तिजनक फोटो किया पोस्ट

शीशगढ़, अमृत विचार : समुदाय विशेष के युवक के नाम से बनी फेसबुक पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का फोटो एडिट कर पोस्ट कर दिया गया। सीएम का आपत्तिजनक फोटो देख गांव बल्ली निवासी मोतीराम पुत्र प्यारेलाल ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ शीशगढ़ थाने मुकदमा दर्ज कराया। शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

नगर में निकाली राजगद्दी

सिरौली, अमृत विचार : सिरौली में चल रही रामलीला में मंगलवार को रावण का वध कर राजगद्दी निकाली गई। इसमें झांकी कलाकारों ने अघोरी तांडव, गोरिल्ला डांस, राधा कृष्ण की भव्य झांकियां निकाली। राजगद्दी पंचवटी से शुरू होकर सिरौली के मुख्य चौराहे से पांडेय मोहल्ला होते हुए साहूकारा स्थित रामलीला मंदिर पर समाप्त हुई। इस दौरान शांति व्यवस्था के लिए थाने का पुलिस फोर्स मुस्तैद रहा।

सैकड़ों बच्चों को बांट दी फफूंद लगी दाल

मीरगंज ब्लॉक के ठिरिया कल्याणपुर में फफूंद वाली दाल बांटकर मासूमों की सेहत से किया खिलवाड़

संवाददाता, मीरगंज

- बीडीओ बोले, सभी घरों से वापस मंगाई जा रही दाल
- सीडीपीओ को वितरण पर रोक लगाने के दिये निर्देश
- भदपुरा, नवाबगंज और मीरगंज का चार्ज भी सीडीपीओ को सौंपा

अमृत विचार : मीरगंज ब्लॉक के ठिरिया कल्याणपुर गांव में आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों को पोषाहार के नाम पर सड़ा हुआ ज़हर परोसे जाने का मामला सामने आया है।

मंगलवार को केंद्र की कार्यकत्री ने दर्जनों घरों में कीड़ों और फफूंद से भरी दाल के पैकेट वितरित कर दिये। 150 बच्चों में से करीब 100 बच्चे पैकेट लेकर घर पहुंचे, और जब उनके अभिभावकों ने पैकेट खोले तो बदबू और बिलबिलाते कीड़े और फफूंद लगा देखकर वह दंग रह गए। इससे उनमें आक्रोश पनपने लगा। मामला प्रधान को सूचित किया गया और खबर ग्राम पंचासत सचिव से होते हुए बीडीओ तक पहुंच गई। उन्होंने दाल को वापस मंगाने का आदेश दिया है।

फफूंद लगी दाल के पैकेट बांटे गये।

घरों में फफूंद और कीड़े लगी दाल वितरित करने की जानकारी मिलते ही लोग भड़क गये। ग्रामीणों ने कहा कि गरीब बच्चों के पोषण के साथ यह खिलवाड़ है। ग्रामीण किशोर राजपूत और नेमचंद्र ने बताया कि मंगलवार को बच्चों को दाल, दलिया और तेल के पैकेट दिए गए थे, लेकिन दाल की हालत खराब थी। अगर यही दाल घरों में पकाकर खाई जाती, तो कई लोग बीमार पड़ सकते थे।

सीडीपीओ विष्णु पांडेय ने कहा कि मामला गंभीर है। उन्होंने कहा, मेरे संज्ञान में आते ही वितरण रुकवा दिया गया है, अब जहां से यह पोषाहार आता है, उस एजेंसी को सूचना भेजी जाएगी। पांडेय वर्तमान में भदपुरा ब्लॉक में तैनात हैं और नवाबगंज व मीरगंज ब्लॉकों का अतिरिक्त चार्ज भी संभाल रहे हैं।

ऊपर से ही मिली थी फफूंद वाली दाल

जब आंगनबाड़ी कार्यकत्री से ग्रामीणों ने सवाल किया, तो उसने साफ कहा दाल के पैकेट ऊपर से ही इसी हालत में मिले थे और उसे उसी तरह बांट दिये हैं। यह बयान पूरे सिस्टम की पोल खोलने के लिए काफी है। ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान और सचिव गजेन्द्र वर्मा को शिकायत दी। सूचना मिलते ही सचिव गांव पहुंचे और दाल के पैकेट में मानक के विपरीत दाल देखकर वितरण तत्काल बंद कराने को कहा।

गांव में दहशत, मासूमों पर खतरा

गांव में अब लोग बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यह सिर्फ लापरवाही नहीं, बल्कि मासूमों की ज़िंदगी से खिलवाड़ है। कई घरों में दाल के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई है। अभिभावक मांग कर रहे हैं कि दोषियों पर एफआईआर दर्ज कर कठोर कार्रवाई की जाए।

अफसरों की नींद टूटी

मामला सामने आने के बाद खंड विकास अधिकारी आनंद विजय यादव ने सीडीपीओ विष्णु पांडेय से दाल के पैकेट बांटने पर तत्काल रोक लगाने को कहा। कहा जो भी दाल पैकेट गांव में पहुंच चुके है, उसे हर हाल में वापस मंगाया जाए।

10 किलो मिल्ककेक और 24 किलो बर्फी कराई नष्ट

संवाददाता, आंवला

अमृत विचार : त्योहार से पूर्व खाद्य पदार्थों की शुद्धता परखने को निकली टीम ने मंगलवार को आंवला में कार्रवाई करते हुए मिल्ककेक, बर्फी, पेड़ा को नष्ट कराया साथ कई वस्तुओं के नमूने भी लिये।

अभियान का नेतृत्व सहायक आयुक्त (खाद्य) अपूर्व श्रीवास्तव एवं मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी अक्षय गोयल ने किया। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम ने चन्दौसी स्वीट्स हाउस से सोनपापड़ी और मिल्क केक के एक-एक नमूने लिए तथा लगभग 10 किलो मिल्क केक जब्त कर नष्ट कराया। जंगवाजपुर गांव से अरहर की दाल का नमूना लिया। भारत स्वीट हाउस, रामनगर से बर्फी का एक नमूना तथा लगभग 24 किलो बर्फी जब्त कर नष्ट की गई। इसके अतिरिक्त गुप्ता स्वीट हाउस, रामनगर से पेडा का एक नमूना तथा लगभग 8 किलो पेडा जब्त कर नष्ट किया गया। वैभव स्वीट हाउस, रामनगर से बर्फी का एक नमूना परीक्षण हेतु एकत्र किया गया।

खाद्य वस्तुओं के नमूने लेती टीम।

आईवीआरआई का भ्रमण कर ज्ञान किया हासिल

संवाददाता, शेरगढ़

अमृत विचार: समग्र शिक्षा अभियान के तहत मंगलवार को राजकीय हाईस्कूल दलपतपुर के विद्यार्थियों ने भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) का शैक्षिक भ्रमण किया।

इस दौरान छात्र-छात्राओं ने घोड़े, कुत्ता, भैंस व गोवंशीय पशुओं आदि का इलाज होते हुए देखा। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने संस्थान की विविध इकाइयों पशु चिकित्सालय, वन्य प्राणी उद्यान तथा संस्थान का संग्रहालय (म्यूज़ियम) आदि को देखा।

विद्यार्थियों ने पशु स्वास्थ्य, देखभाल, प्रजाति संरक्षण और अनुसंधान संबंधी अनेक उपयोगी जानकारियां प्राप्त कीं, जिससे उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण पता चला और उसका ज्ञान प्राप्त किया। प्रधानाचार्य अनीता सक्सेना ने विद्यार्थियों को संस्थान की स्थापना, उद्देश्यों और पशु विज्ञान क्षेत्र में उसके योगदान से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के शैक्षिक भ्रमण विद्यार्थियों में अनुसंधान और वैज्ञानिक चिंतन की भावना विकसित करते हैं। सभी विद्यालयों के शिक्षकों को इस तरह का शैक्षिक भ्रमण कराना चाहिए। यह भ्रमण विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन में सहायक होता है और इसका उपयोग जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है। प्रधानाचार्या अनीता सक्सेना ने बताया कि भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को पशु विज्ञान क्षेत्र में उसके योगदान से अवगत कराया गया। आईवीआरआई की भव्यता और यहां होने वाले वैज्ञानिक कार्यों को जानकर विद्यार्थी भी आश्चर्यचकित हुए। सबसे ज्यादा आश्चर्य उन्हें यह जानकर हुआ कि बरेली में शेर हाथी जैसे विशाल जानवरों का पोस्टमार्टम होता है। यह बात कई विद्यार्थियों को भ्रमण के दौरान ही पता चली। इस अवसर पर शिवानी शर्मा, नीलम पाल, पुष्पा, कनिष्ठ सहायक दिव्या सक्सेना, आदित्य, पूजा, सृष्टि, तेजेश्वरी, दीक्षा आदि समेत स्कूली शिक्षिकाएं एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

आईवीआरआई में म्यूजियम का भ्रमण करने के बाद मौजूद विद्यार्थी। ● अमृत विचार

बोले प्रधान, गोशाला नहीं चला पा रहे

संवाददाता, फरीदपुर

- गोशालाओं से 5 हजार रुपये मांगने का आरोप, डीएम से लगाई गुहार

अमृत विचार: गोशाला संचालन में सरकार से मिल रही सुविधा कुछ लोगों की कमाई का जरिया बन गई है। गोशालाा में पशुओं की संख्या के अनुसार मिल रही राशि का कुछ जगह निजी प्रयोग हो रह है तो कहीं इसे पूरा खर्च करने में ही डंडी मार दी जा रही है। प्रधान संघ ने इस मामले में नाराजगी जताते हुए डीएम को सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा है। इसमें उन्होंने बीडीओ पर प्रत्येक गोशाला से पांच हजार रुपये देने का आरोप लगाया है।

प्रधानों ने बताया कि तहसील क्षेत्र में आठ गोशालाएं संचालित हैं। सभी से पांच हजार रुपये की मांग रखी गई है। इस कथित मांग के पूरा नहीं होने पर गोशालाओं के केयर टेकरों का पहली तारीख को खाते में आने वाला वेतन 14 तारीख तक नहीं आया है। अब संबधित अधिकारी द्वारा गोशालाओं की जांच के नाम पर रिपोर्ट दर्ज कराने की धमकी दी जा रही है।

ज्ञापन देने वालों में ग्राम प्रधान बीनू देवी, नन्हें लाल शिखा सिंह, ओमवीर सिंह, बबिता मिश्रा, ममता और मधुरानी प्रमुख रूप से शामिल रहे। प्रधान रवीन्द्र सिंह ने बताया कि मौजूदा बीडीओ इसके पहले नवाबगंज में तैनात थे। वहां भी इस तरह की गतिविधि रहीं है। गोशालाओं से वसूली इनके साथ चलने वाला प्राइवेट चालक है।

बीडीओ भगवान दास ने बताया कि सभी प्रधानों को चेक दे दिए गए हैं कुछ प्रधानों ने चेक अपने पास रख लिए हैं पैसे मांगने का आरोप वे बुनियाद हैं ग्राम प्रधानों से गायों को दिए जाने वाले चारे की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कह दिया इसलिए आरोप कुछ भी लगा सकते हैं।

प्रधान संघ के पदाधिकारियों ने एसडीएम मल्लिका नैन को ज्ञापन सौंपा।

148 लीटर अवैध डीजल-पेट्रोल बरामद

भमोर, अमृत विचार: मुखबिर ने सेंधा में दुकान पर डीजल पेट्रोल बिकने की सूचना दी तो उसे एसडीएम आंवला को बताया गया। एसडीएम के निर्देश पर आंवला की पूर्ति निरीक्षक शिखा पांडे मौके पर पहुंची तो सेंधा स्थित एक दुकान में 68 लीटर पेट्रोल व 80 लीटर डीजल बरामद किया गया। इसे भमोरा थाने में जमा करा दिया गया है। सप्लाई इंस्पेक्टर ने बताया कि डीएम की अनुमति मिलने पर मुकदमा दर्ज कराया जाएगा।

धम्म दीक्षा दिवस धूमधाम से मनाया

नवाबगंज। अम्बेडकर पार्क में धम्म दीक्षा दिवस धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महावीर प्रसाद ने की संचालन कुवरसेन ने किया। सत्यवीर, सियाराम, अमित कुमार, शेर सिंह, हरीश कुमार, रामकरन आदि रहे।

ट्रैक्टर खरीद घोटाले में रिपोर्ट दर्ज

संवाददाता, आंवला

- ट्रैक्टर ऐजेंसी मालिक और मैनेजर ने बिक्री किए ट्रैक्टर में खामी निकलने पर नया देने के बजाय धोखाधड़ी की
- एसपी संभल के आदेश पर संभल में दर्ज रिपोर्ट को आंवला थाने में किया गया ट्रांसफर

अमृत विचार : ट्रैक्टर ऐजेंसी मालिक और मैनेजर ने बिक्री किए गए ट्रैक्टर में खामी निकलने पर नया ट्रैक्टर देने के बजाय ट्रैक्टर मालिक से धोखाधड़ी कर दी। उक्त मामले में एसपी संभल के आदेश पर संभल में दर्ज रिपोर्ट को आंवला थाने में ट्रांसफर किया गया है।

गुन्नौर, रसूलपुर निवासी धीर सिंह ने बताया कि उसने न्यू हॉलैंड 9010 ट्रैक्टर 18.45 लाख में बालाजी इंटरप्राइजेज आंवला के मालिक संजय सिंह और मैनेजर मुकेश से खरीदा था। जिसमें 10.04 लाख का लोन लिया गया था। खरीद के कुछ दिनों बाद ही ट्रैक्टर बार-बार खराब हुआ। एजेंसी ने कई बार मरम्मत के बाद भी नया ट्रैक्टर देने से इंकार कर दिया। बाद में दोनों आरोपी ट्रैक्टर लेकर गए और कथित रूप से फर्जी कागजात बनाकर ट्रैक्टर अन्य व्यक्ति को बेच दिया। शिकायत के अनुसार, ट्रैक्टर अब लखनऊ निवासी एक व्यक्ति के नाम रजिस्टर्ड है।

एजेंसी का लोन खाता बंद न होने और भुगतान राशि अपने खातों में रखने के आरोप में पुलिस ने एजेंसी मालिक व मैनेजर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामला आंवला से जुड़ा होने के कारण संभल पुलिस ने आंवला ट्रांसफर कर दिया है।

याकूबपुर में मधुमक्खियों का हमला, कई घायल

संवाददाता, नवाबगंज

अमृत विचार : नगर की याकूबपुर बस्ती में मधुमक्खियों के झुंड ने ग्रामीणों पर हमला कर दिया, जिससे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। खेतों के पास पेड़ पर बना मधुमक्खियों का छत्ता अचानक छिड़ जाने से हजारों मधुमक्खियाँ भड़क गईं और आसपास काम कर रहे लोगों पर टूट पड़ीं।

हमले में गन्ने की छिलाई कर रहे ग्राम वासी चिरौंजी लाल, अर्जुन, फकीर चन्द, अंशुल, लक्ष्मी नरायन, रमेश, राजेन्द्र, रूपक व रविन्द्र गम्भीर घायल हो गए। ग्रामीणों का कहना है कि पहले भी मधु मक्खियां कई लोगो पर हमला कर चुकी हैं। लेकिन वृक्ष के चारों ओर घनी झाड़ियां होने के कारण ग्रामीण इस छत्ते को तोड़ने का साहस नही कर पाते हैं। इस बार स्थिति ज्यादा भयावह बन गई थी।

मिशन शक्ति : एक दिन की जिम्मेदारी से उत्साहित छात्राएं

संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : मिशन शक्ति कार्यक्रम के तहत छात्राओं में शुरुआत से ही नेतृत्व की भावना जागृत कर रही है। विभाग में एक एक दिन उच्च कुर्सी पर बैठकर छात्राएं उस पद की जिम्मेदारियों को समझ रही हैं कोई सीडीओ, एसडीएम बन रहा तो कोई प्रधानाचार्य और थानाध्यक्ष। सरकार का यह प्रयास छात्राओं में आत्मविश्वास को जागृत कर रहा है। छात्राएं भी एक दिन की पावर मिलने से उत्साहित हैं।

एक दिन की आंवला थानाध्यक्ष बनीं रिद्धि

आंवला, अमृत विचार : मिशन शक्ति अभियान के तहत कस्बे के सुभाष इंटर कॉलेज की छात्रा रिद्धि राठौर को एक दिवसीय थानाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। क्षेत्राधिकारी आंवला नितिन कुमार ने एक दिवसीय थानाध्यक्ष को शुभकामनाएं दीं।

मोहल्ला नगरिया सतन निवासी रतनेश सिंह की बेटी कुमारी रिद्धि राठौर ने थाने में जनसुनवाई की, जिसमें परवेज निवासी मोहल्ला खेड़ा, कस्बा आंवला द्वारा मारपीट संबंधी शिकायती पत्र दिया। रिद्धि ने इस प्रकरण के त्वरित निस्तारण के लिए संबंधित को आवश्यक निर्देश दिए। इसके अलावा, उन्होंने थाने के कार्यालय, विवेचना कक्ष और कंप्यूटर कक्ष का अवलोकन किया। इस दौरान इंस्पेक्टर आंवला कुंवरबहादुर सिंह, कालेज की अन्य छात्राएं और थाने की महिला पुलिसकर्मी मौजूद रहीं।

महिला हेल्प लाइन की दी जानकारी

आंवला, अमृत विचार : चन्द्र शेखर आजाद इंटर कालेज गैनी में मंगलवार को छात्राओं और शिक्षिकाओं को थाना अलीगंज पुलिस टीम ने सुरक्षा, तथा यातायात के नियमों की जानकारी दी। गैनी चौकी प्रभारी प्रणव श्रोत्रिय ने टीम के साथ सरकार की योजनाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम में ज्योत्सना, सुधा, पूजा ने महिलाओं को उनकी सुरक्षा और सम्मान के प्रति जागरूक किया। उन्होंने वूमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, स्वास्थ्य सेवा 102 व 108, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 की जानकारी दी। इस मौके पर कालेज के प्रधानाचार्य महेन्द्र कुमार गंगवार, किशोर सिंह, विनोद कुमार, राजेश आर्या, नजर अली, धीरज, सुनील आदि रहे।

भारती ने संभाली प्राचार्य की कुर्सी

मीरगंज, अमृत विचार : मंगलवार को राजेंद्र प्रसाद डिग्री कॉलेज की छात्रा भारती ने एक दिन के लिए प्राचार्य का दायित्व संभाला। सुबह 10 बजे से ऑफिस में बैठकर भारती ने छात्र-छात्राओं की समस्याओं को सुना। जिनके निस्तारण हेतु संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए। कार्यक्रम के दौरान भारती ने प्राचार्य स्तर पर होने वाले विभिन्न प्रशासनिक कार्यों की जानकारी ली और शिक्षक व कर्मचारियों से उनके क्रियान्वयन की प्रक्रिया को समझा। अभियान का उद्देश्य महिलाओं और बेटियों में प्रशासनिक कार्यों के प्रति जागरूकता और नेतृत्व क्षमता का विकास करना है।

छात्राओं ने संभाला विद्यालय का जिम्मा

नवाबगंज, अमृत विचार : मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थानीय विद्यालय में छात्राओं को नेतृत्व की जिम्मेदारी सौंपी गई। कक्षा 12 की छात्रा रिया वर्मा को एक दिन के लिए प्रधानाचार्य, कक्षा 11 की छात्रा अंशिका को उपप्रधानाचार्य तथा दीक्षा को चीफ प्राक्टर के पद पर नियुक्त किया गया। इसके साथ ही छात्राएं श्रेया वर्मा, प्रयानसी वर्मा, आरती, वीनिता, सपना, ज्योति राठौर, अंजलि, कशिश, अंशिका वर्मा और प्रियांशी को सहायक अध्यापक का कार्यभार सौंपा गया। प्रबंधक टी. आर. गंगवार ने सभी छात्राओं को उनके पद का कार्यभार ग्रहण कराया।

MEDICAL Lifelines OF BAREILLY
अमृत विचार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005
● 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
● बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
● आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
● कैशलेस ईलाज
बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल...
नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ

डॉ. नितिन अग्रवाल
एम.डी. (गोल्ड मेडिलिस्ट), डी.एम. (कार्डियोलॉजी)
हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777
2D ECHO + TMT
हृदय रोग के लक्षण : ■ घबराहट ■ छाती में दर्द या भारीपन ■ सांस फूलना ■ पैरों में सूजन ■ हाई ब्लडप्रेशर ■ हाई कोलेस्ट्रोल ■ डाइबिटीज (शुगर) ■ सीने या पेट में जलन या दर्द ■ हार्ट अटैक ■ हार्ट फेल
APPLE CARDIAC CARE
ए-3, एकता नगर, केयर अस्पताल के सामने, स्टेडियम रोड, बरेली। सम्पर्क करें:- 9458888448

डॉ. हारिस अंसारी
एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)
Consultant Urologist & Andrologist
गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन
● प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP) ● गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL) ● गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSL) ● पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज
कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल
डॉ. एम. खान हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली
समय दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक हेल्पलाईन 9837549348, 98978382286

बवासीर-भगन्दर-फिशर
पाइलोनाइडल साइनस Mob.: 8126164170
डॉ. वी.के. सिसोदिया
वरिष्ठ क्षार सूत्र विशेषज्ञ
B.Sc., B.A.M.S.
Proctologist (Ayur.), N.D.D.Y., C.C.K.S. (MUMBAI)
मिलें : प्रत्येक रविवार 12 पत्थर रोड, जलालाबाद (शाहजहाँपुर) में
बरेली एनोरक्टल क्लीनिक पता:- करगैना पुलिस चौकी के पीछे, बदायूं रोड, बरेली

अमृत विचार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

NOTICE

This is to be notify that I have changed my son's name from Vibhav Singh to Vibhav Vincent Yadav date of birth 30th November 2009 and his mother's name is Manjusha Daniel. He will be known as Vibhav Vincent Yadav in future. Dinesh Pal Singh S/o Shri Ramphal Singh R/o Opp. Mandi Samiti, Alapur Road, Badaun

आवश्यकता है
● आयुष्मान /TPA/MARG/COMPUTER अनुभवी महिला रिसेप्शनिस्ट/मेडिकल स्टोर हेतु
● अनुभवी कम्पाउंडर
● अनुभवी ओ. टी. टेक्निशियन
● अनुभवी पी.आर.ओ. ● अनुभवी नर्स
मिलें आज 3 बजे
आर. जी. हॉस्पिटल
अयूब खान-चौपला रोड, बरेली

सूचना

मेरे पुत्र यश शर्मा के स्कूल में उसकी माता का नाम SHASHI SHARMA दर्ज हो गया है जो गलत है सही नाम SHASHI VALA है, सभी अभिलेखों में भी यही नाम दर्ज है। **तरुण शर्मा पुत्र देवेन्द्र कुमार शर्मा मोहल्ला नौबतगंज नवाबगंज बरेली।**

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा एक मकान मो. नौगवां कस्बा फतेहगंज प. में स्थित है जिसका मैं अकेला मालिक हूँ तथा कोई सह खातेदार नहीं है। उक्त मकान का गृहकर मेरे नाम आता है जिसे मैं अपनी बहनों सुनीता पत्नी इन्द्रदेव निवासी गुडवारा तह. बहेड़ी जिला बरेली, धर्मवती पत्नी धर्मवीर निवासी रोहनिया तह बहेड़ी जिला बरेली, शशी शर्मा पत्नी अनिल शर्मा निवासी मोतीचूर हरिद्वार व मीना देवी पत्नी रूप किशोर नि. मो. साहूकारा, फतेहगंज प. मीरगंज जिला बरेली के नाम जारी कराना चाहता हूँ। इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह 30 दिन के अन्दर साक्ष्य के साथ नगर पंचायत कार्यालय फतेहगंज प. में आपत्ति कर सकता है। कृपाराम पुत्र बेनीराम नि. मो. नौगवां कस्बा फतेहगंज प. तह मीरगंज जिला बरेली।

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

न्यूज ब्रीफ

खाद्यान्न भंडारण भवन का उद्घाटन

राजपुर कलां, अमृत विचार : मझगवां विकासखंड की ग्राम पंचायत तिगाई दत्तनगर में 8 लाख 30 हजार रुपए की लागत से निर्मित खाद्यान्न भंडारण भवन का उद्घाटन ब्लॉक प्रमुख यशवंत सिंह ने किया। मंगलवार को कार्यक्रम में ब्लॉक प्रमुख ने उद्घाटन करते हुए सभी राशन विक्रेताओं से अपील की कि सरकार द्वारा मुफ्त उपलब्ध कराया जाने वाला खाद्यान्न ईमानदारी से वितरित किया जाए।

ट्रेनों के ठहराव को रेल मंत्री को भेजा पत्र

फतेहगंज पश्चिमी, अमृत विचार : भिटौरा रेलवे स्टेशन पर एक्सप्रेस ट्रेनों के ठहराव को यूपी सरकार के मंत्री ने केंद्रीय रेलमंत्री को संस्तुति सहित प्रस्ताव बनाकर भेजा ।भाजपा नेता आशीष अग्रवाल ने स्थानीय भिटौरा रेलवे स्टेशन पर दिल्ली,लखनऊ, अयोध्या को जाने वाली ट्रेन किसान एक्सप्रेस, लखनऊ मेल के ठहराव की मांग पर प्रदेश सरकार में व्यवसायिक शिक्षा मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव को पत्र लिखकर ट्रेनों के ठहराव की सिफारिश की है।

पत्नी से नाराज पति ने खाया जहर

बिथरीचैनपुर, अमृत विचार : पत्नी से झगड़ा होने की वजह से युवक ने जहर खा लिया। परिजन उसे अस्पताल ले कर गए जहाँ इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी। प्रेमपाल (25) निवासी मोहनपुर उर्फ़ रामनगर की सोमवार को पत्नी से अनबन हो गयी थी। जिसके बाद प्रेमपाल ने जहर खा लिया।

जेल काट रहे बंदी की बीमारी से मौत

बिथरीचैनपुर, अमृत विचार : केंद्रीय कारागार द्वितीय बरेली मे बंद सिद्धदोष बंदी की तबियत ख़राब होने से मौत हो गयी। इकबाल(61) निवासी ग्राम जाफर थाना शीशगढ़ हत्या के मुक़दमे मे 2022 से बंद था। जिसे पांच दिन पहले आजीवन कारावास की सजा हुई थी ।सजा के बाद से इक़बाल की तबीयत खराब हो गयी थी।

अफसरों की अनदेखी

करीब डेढ़ महीने से गढ़ी चौकी के पीछे रफियाबाद रोड पर सीवर चौक होने से गंदे पानी से निकलने के लिए लोग मजबूर हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार शिकायत करने के बावजूद स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है। ● हरदीप सिंह टोनी

सामग्री मद में 70 करोड़ बजट जारी होने पर जिले को पांच करोड़ मिलने की थी उम्मीद

मनरेगाः बकायेदारी 43 करोड़ की, मिले 90 लाख

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचारः मनरेगा सामग्री मद में भले ही 90 लाख का बकाया भुगतान भेजा गया हो, लेकिन जिले में मनरेगा की हालत ठीक नहीं है। वित्तीय संकट के कारण तमाम गांवों में विकास की गाड़ी हांफ रही है। आलम यह है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में निर्माण सामग्री का 34 करोड़ और इस साल नौ करोड़ का बकाया अटका था। सरकार की ओर से मंगलवार को सामग्री मद में 70 करोड़ रुपये का बजट जारी किए जाने पर उम्मीद थी कि पांच करोड़ से अधिक का बजट मिलेगा, लेकिन जिले को मात्र 90 लाख रुपये मिले हैं।

पिछले कुछ सालों से केंद्र सरकार से बजट नहीं मिलने से जिले में मनरेगा की स्थिति खराब होती जा रही है। पैसा न मिलने से जहां सप्लायरों ने माल देने से हाथ खड़े कर दिए हैं। वहीं, कई ग्राम पंचायतों में काम लंबे समय से ठप पड़े हैं। यही नहीं, ग्राम प्रधान से लेकर सचिव और रोजगार सेवक भी परेशान हैं। उनको चिंता इस बात की है कि बजट नहीं मिलेगा तो गांवों में विकास कार्य कैसे शुरू होंगे। इसको लेकर अफसर भी असमंजस में हैं। कारण यह है कि बकाया भुगतान न होने के कारण मनरेगा से होने वाले कार्यों पर जहां असर पड़ रहा है। वहीं, निर्माण सामग्री के अभाव में कई योजनाएं अधूरी पड़ी हैं। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों पर ब्रेक लग गया है। दबी जुबान अफसर भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं कि बजट की कमी के कारण वे अपने कार्यों को समय पर पूरा नहीं कर पा रहे हैं, इससे न केवल ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर असर पड़ रहा है, बल्कि मनरेगा योजना के तहत काम करने वाले मजदूर भी समय पर भुगतान नहीं मिलने पर दूरी बनाते हैं। इसके अलावा एक सबसे बड़ी समस्या तो यह भी है कि आए दिन होने वाली समीक्षा बैठक में मनरेगा से जुड़े कामों की लेटलतीफी पर विभागीय अधिकारी व कर्मचारियों को फजीहत झेलनी पड़ती है।

> मनरेगा में बजट की मांग लगातार की जा रही है। बीते दिनों मजूदरों के लिए बजट मिला था। मंगलवार को सामग्री मद में जैसे ही बजट मिला, ग्राम पंचायतों को भुगतान कर दिया गया।
> – मो. हसीब अंसारी, डीसी मनरेगा

विज्ञान के मॉडलों में छात्रों ने दिखाया हुनर

राजकीय बालिका इंटर कालेज में छह सर्वश्रेष्ठ मॉडल मंडल स्तरीय प्रदर्शनी के लिए चयनित

कार्यालय संवाददाता, बरेली

विज्ञान प्रदर्शनी देखते डीआईओएस डॉ. अजीत सिंह। ● अमृत विचार

प्रदर्शनी में शामिल छात्र-छात्राएं। ● अमृत विचार

- विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षक पुरस्कृत

अमृत विचारः राजकीय बालिका इंटर कालेज बरेली में आयोजित जनपदीय विज्ञान प्रदर्शनी और मंडलीय शिक्षण अधिगम सामग्री प्रदर्शनी में छात्रों और शिक्षकों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी में जैव विविधता, मानव कल्याण में जीवन विज्ञान, वैकल्पिक ऊर्जा, सूचना संचार और परिवहन प्रौद्योगिकी और गणित, भौतिक विज्ञान और खेल जैसे विभिन्न विषयों पर आधारित मॉडल प्रस्तुत किए गए। जिसमें तीन जूनियर और तीन सीनियर कुल छह सर्वश्रेष्ठ मॉडल का चयन मंडल स्तरीय प्रदर्शनी के लिए किया गया।

शिक्षण अधिगम सामग्री में 69 शिक्षकों ने प्रतिभाग किया, जिसमें नैन्सी सिंह ने प्रथम, अर्पणा मिश्रा ने द्वितीय और चेतना सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सीनियर वर्ग में मेथोडिस्ट गर्ल्स इंटर कॉलेज की अंकिता क्रिस्टोफर ने प्रथम, सुभाष इंटर कॉलेज आंवला के रिहान बाबू ने द्वितीय और साहू गोपीनाथ इंटर कालेज की उमरा खानम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। जूनियर वर्ग में राजकीय इंटर कालेज के पवन शर्मा व लविश ने प्रथम, आरएन टैगोर के नीरज कुमारी व गायत्री ने द्वितीय और हाफिज सिद्दीकी कॉलेज के सैय्यद मोहम्मद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि डीआईओएस डॉ. अजीत कुमार ने प्रदर्शनी की शुरुआत की और विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों और शिक्षकों को पुरस्कृत किया। उन्होंने कहा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को आगे बढ़ाने के लिए युवाओं को आगे आना होगा और नए-नए प्रयोग करने होंगे।

निर्णायक मंडल में जिला समन्वयक समग्र शिक्षा माध्यमिक वीरेंद्र गंगवार, प्रो. आलोक खरे, प्रो. राजेन्द्र सिंह, डॉ. प्रवीण कुमार, विनोद कुमार, सावित्री यादव, डॉ. राजेश सक्सेना आदि उपस्थित रहे। प्रधानाचार्या अनु पाराशरी के निर्देशन में रजनी सिंह और योगिता सक्सेना सहित अन्य शिक्षिकाओं ने सहयोग किया। अनु पाराशरी ने बताया कि प्रदर्शनी का उद्देश्य छात्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति रुचि बढ़ाना और उनकी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करना था।

अपर आयुक्त ने समितियों का किया निरीक्षण

भिंडौलिया समिति के निरीक्षण के दौरान मौजूद अधिकारी। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- बिथरी ब्लॉक की चार समितियों पर मिले स्टॉक का रजिस्टर से किया मिलान

अमृत विचारः अपर आयुक्त एवं अपर निबंधक सहकारिता राजेश कुमार ने मंगलवार को बिथरी ब्लॉक की पांच साधन सहकारी समितियों का एआर कोऑपरेटिव ब्रजेश परिहार के साथ औचक निरीक्षण किया। इस दौरान समितियों पर मिले किसानों से फीडबैक लिया और रजिस्टरों की भी बारीकी से जांच की। सचिवों को निर्देश दिए कि खाद वितरण में पारदर्शिता रहे। किसी भी प्रकार की गड़बड़ी पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी।

दोपहर करीब 2 बजे अचानक राजेश कुमार टीम के साथ निरीक्षण करने निकले। सबसे पहले बिथरी ब्लाक की इस्माइलपुर समिति का निरीक्षण किया। यहां जांच में पीओएस के अनुसार खाद का स्टॉक ठीक मिला। इसके बाद केसरपुर, भिंडौलिया, टिकरी भगवानपुर और बिथरी ब्लाक की समिति का निरीक्षण किया। सभी जगह यूरिया के स्टॉक की जांच की। समिति के रजिस्ट्रार और पीओएस मशीन से मिलान किया।

अयोध्या में होगी विंडरमेयर की रामलीला

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- बृजेश्वर सिंह और कलाकारों को भेजा गया निमंत्रण पत्र
- श्रीलंका, इंडोनेशिया, नेपाल और रूस से भी आएंगी रामलीला

विंडरमेयर में रामलीला का मंचन करते कलाकार। (फाइल फोटो)

अमृत विचारः अयोध्या में आयोजित होने जा रहे दीपोत्सव 2025 के लिए विंडरमेयर की रामलीला का चयन किया गया है। श्रीलंका, इंडोनेशिया, नेपाल और रूस की रामलीला भी आमंत्रित की गई हैं। भारत से विंडरमेयर की रामलीला को ही चयनित किया गया है।

विंडरमेयर की रामलीला की परिकल्पना दया दृष्टि चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. बृजेश्वर सिंह ने की है। मुख्य रूप से पं. राधेश्याम कथावाचक की कृति पर आधारित इस रामलीला में रामचरित मानस और छम्मीलाल ढौंडियाल पहाड़ी रामलीला का संगम भी मिलता है। यह एक संगीतमयी प्रस्तुति है, जिसका मंचन हर वर्ष नवरात्र पर विंडरमेयर थिएटर में किया जाता है।

डॉ. बृजेश्वर सिंह ने बताया कि रंगमंडल के कलाकार 18 अक्टूबर को अयोध्या रवाना होंगे और 19 अक्टूबर को वहां दीपोत्सव 2025 के मुख्य सांस्कृतिक खंड में विंडरमेयर की रामलीला प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने कहा कि यह चयन केवल विंडरमेयर के लिए ही नहीं बल्कि बरेली के प्रत्येक रंगकर्मी के लिए गर्व की बात है। उन्होंने बताया कि रंग विनायक रंगमंडल की टीम पूरे उत्साह के साथ तैयारी में जुट गई है। उन्होंने बताया कि इस संगीतमयी प्रस्तुति पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्म विंडरमेयर की रामलीला राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में सर्वश्रेष्ठ चुनी गई है। हाल ही में विंडरमेयर थिएटर में इस डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग रखी गई थी और अब इसे विंडरमेयर थिएटर के यूट्यूब चैनल पर रिलीज कर दिया गया है।

सिंचाई विभाग की जमीन पर शिफ्ट होगा फतेहगंज पश्चिमी थाना

संवाददाता, फतेहगंज पश्चिमी

- डीएम ने प्रमुख सचिव सिंचाई को जमीन हस्तान्तारण के लिए पत्र भेजा
- रबर फैक्ट्री की जमीन पर है थाना नगर से दूर होने से फरियादियों को थाना जाने में होती परेशानी

अमृत विचार : फतेहगंज पश्चिमी थाना परिसर को सिंचाई विभाग की जमीन पर रेलवे और रोडवेज बस स्टेशन के पास शिफ्ट किया जाएगा। डीएम ने प्रमुख सचिव सिंचाई को जमीन हस्तान्तारण के लिए पत्र भेजा है।

थाना फतेहगंज पश्चिमी परिसर नगर से एक किमी दूर होने के साथ 25 वर्ष से बंद रबड़ फैक्ट्री की जमीन पर बना है। फैक्ट्री बंद होने के बाद थाना परिसर एक जंगल नुमा स्थान पर है। थाना बिल्डिंग पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो चुकी है । कस्बे से दूर होने के कारण पुलिस कर्मियों के खान पान की भी कोई व्यवस्था नहीं हो पाती है । फरियादियों को भी अपनी शिकायत दर्ज करवाने में काफी दूर पैदल चलकर जाना होता है। थाना ड्रग तस्करी में प्रदेश के मुख्य थानों में चर्चित है।

थाना दूर होने के कारण व नगर में आमजन एवं व्यापारियों के प्रतिष्ठानों की सुरक्षा हेतु थाने को नगर के स्टेशन रोड पर सिंचाई विभाग की जमीन पर शिफ्ट करने का प्रस्ताव आशीष अग्रवाल ने दिया था। वह दो वर्षों से इसके लिए प्रयासरत थे। जमीन हस्तान्तारण की प्रक्रिया शीघ्र पूरा करने के लिए फिर से मुख्यमंत्री से मिलेंगे।

क्रीड़ा भारती की शतरंज प्रतियोगिता में आंध्र प्रदेश के श्रीवर्धन विजेता

कार्यालय संवाददाता, बरेली

विजेता को पुरस्कार देते अतिथि। ● अमृत विचार

- प्रतियोगिता में कुल 96 खिलाड़ियों को दिया गया पुरस्कार

अमृत विचारः संजय अग्रवाल की स्मृति में क्रीड़ा भारती और कुंवर सुरेंद्र सिंह फाउंडेशन की ओर से एक रिसोर्ट में आयोजित शतरंज प्रतियोगिता का मंगलवार को समापन हो गया। प्रतियोगिता में आंध्र प्रदेश के श्रीवर्धन रेड्डी देवारेड्डी ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए 1,01,111 रुपये का इनाम जीता। दूसरे नंबर पर केरल के अश्विन पीजी ने 70 हजार का इनाम जीता। रेटिंग में यूपी के अरविंद कुमार ने 60 हजार, अनरेटेड में उत्तराखंड के योगेश नोतियाल ने 50 हजार, वेटरन अवव में यूपी के वजीर अहमद खान ने 15 हजार, बेस्ट फीमेल में शुक्ला शुमुखी ने 10 हजार, बेस्ट बरेली में कार्तिक खंडेलवाल ने 10 हजार, बेस्ट बरेली अंडर-15 में अस्मित वर्मा ने 9 हजार, बेस्ट फिजिकल चैलेंज में मध्य प्रदेश के तिवारी ओपी ने 10 हजार, बेस्ट अंडर-15 में पंजाब के श्रेयांश जैन ने 9 हजार, बेस्ट अंडर-12 में मो. इस्माइल सिद्दीकी ने 9 हजार, बेस्ट अंडर-9 में उत्तराखंड के दरशिल सूतारी ने 9 हजार, बेस्ट फीमेल अंडर-15 में बरेली की प्रेक्षा ने 5 हजार, बेस्ट फीमेल अंडर-12 में उत्तराखंड की काया ध्यानी ने 5 हजार, बेस्ट फीमेल अंडर-9 में उत्तराखंड की आदविका साहू ने 5 हजार की प्राइजमनी जीती। प्रतियोगिता में 96 खिलाड़ियों को पुरस्कार दिया गया। प्रतियोगिता में प्राइज डिस्ट्रीब्यूशन के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ब्रज प्रांत के सह कार्यवाहक राजपाल सिंह रहे। विशिष्ट अतिथि रुहेलखंड विश्वविद्यालय के क्रीड़ा सचिव प्रो. एसएस बेदी रहे। टूर्नामेंट में डॉ. शिवराम शर्मा, डॉ. राजवीर सिंह, अनूप कुमार, जितेन्द्र राजपूत, दीपक रस्तोगी, विवेक सक्सेना, क्रांति कुमार गुप्ता, अविनाश शर्मा का विशेष रहा।

शॉपिंग मॉल की तर्ज पर खुलेंगे किसान कल्याण केंद्र

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- रामनगर और दमखोदा ब्लॉक में 2.38 करोड़ से होंगे निर्माण कार्य

अमृत विचारः जिले में दो ओर किसान कल्याण केंद्र शॉपिंग मॉल की तर्ज पर बनाए जाएंगे। इसके बाद जिले में केंद्रों की संख्या बढ़कर सात हो जाएगी। इन केंद्रों से किसान एक साथ उर्वरक, बीज, कीटनाशक और कृषि यंत्रों समेत सरकार की अन्य योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे।

रामनगर में केंद्र खोलने का प्रस्ताव मिलने पर जमीन चिह्नित की जा रही है, जबकि दमखोदा में जगह चिह्नित होने पर शासन को प्रस्ताव भेज दिया गया है। जिला कृषि अधिकारी ॠुषा तिवारी ने बताया कि वर्तमान में भोजीपुरा, मझगवां, बहेड़ी, बिथरी और भुता ब्लॉक में किसान कल्याण केंद्र चल रहे हैं। बेहतर परिणाम मिलने और किसानों की मांग पर रामनगर और दमखोदा ब्लाक में केंद्र बनाने की कवायद की गई है। चयनित ब्लाक में 25 वर्ग मीटर लंबी और 30 मीटर चौड़ी भूमि में किसान कल्याण केंद्र खुलेंगे। एक केंद्र के निर्माण पर 1.19 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसके बाद शेष ब्लॉकों में भी जरूरत के अनुसार केंद्र खोलने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इन केंद्रों पर किसानों को एक ही छत के नीचे खाद बीज, दवा समेत सभी सुविधाएं मिलेंगी।

एआरपी ने शैक्षणिक व्यवस्थाएं परखीं

शेरगढ़, अमृत विचार : एआरपी शिखा भारतीय ने मंगलवार को प्राथमिक विद्यालय बैरमनगर समेत कई विद्यालयों में सहयोगात्मक पर्यवेक्षण कर शैक्षणिक व्यवस्थाओं को परखा। इस दौरान उन्होंने बच्चों के शैक्षिक स्तर की जांच की। उन्होंने शिक्षकों को दैनिक कार्य योजना के अनुसार खेल गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाने का मंत्र दिया। उन्होंने बच्चों को सामाजिक प्रवेश से जुड़ी जानकारियों से रूबरू कराने पर जोर दिया।

विजेताओं को पांच-पांच हजार देने की घोषणा

कुक्किवोन प्रतियोगिता में 22 पदक जीतने वाली टीम के साथ डीएम अविनाश सिंह।

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- डीएम ने कहा कि बच्चियों को आत्मरक्षा के गुण अवश्य सीखने चाहिए

अमृत विचारः अंतर्राष्ट्रीय ओपन कुक्किवोन कप प्रतियोगिता का आयोजन 9 से 12 अक्टूबर तक नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम स्थित केडी जाधव हॉल में किया गया। इसमें बरेली के 14 खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विभिन्न वर्गों में 22 पदक हासिल किए। डीएम ने अविनाश सिंह ने प्रतियोगिता में पदक जीतकर जिले का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों से मुलाकात की। उन्होंने सभी विजेता खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए घोषणा की कि प्रत्येक पदक विजेता को 5 हजार की धनराशि सम्मान स्वरूप दी जाएगी। उन्होंने कहा कि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। इसलिए विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ खेल-कूद में भी सक्रिय रहना चाहिए। खेलों से अनुशासन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। पदक विजेताओं में अधिकांश प्रतिभागी बच्चियां हैं, जो गर्व की बात है। उन्होंने सभी बच्चियों से आत्मरक्षा के गुण सीखने को कहते हुए कहा कि हर बालिका को आत्मनिर्भर और सशक्त बनने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। बरेली के विजेता खिलाड़ी माही गंगवार ने 3 स्वर्ण और कांस्य, निशु भारद्वाज ने रजत और कांस्य, शुभम रौतेला ने रजत, अधृत श्रीवास्तव ने स्वर्ण, करण कुमार कनौजिया ने स्वर्ण और कांस्य, भानु प्रताप सिंह ने स्वर्ण और रजत, सांची सिंह ने स्वर्ण, माधुरी ने स्वर्ण और कांस्य, आरोही ने रजत, परिक्रमा ने रजत, जोया खान ने रजत, साजात ने कांस्य, तवेज कुमार ने स्वर्ण, रूप ने रजत और कांस्य जीता। इस अवसर पर कोच मो. अकमल खान, साक्षी बोरा और जगमोहन पटेल के योगदान की भी सराहना की गई।

सिटी डायरी

रेडिएंस 2025 : उत्साहपूर्वक मनाई सतत विकास आधारित दीपावली

बरेली, अमृत विचार : रुहेलखंड विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग ने दीपावली उत्सव रेडिएंस 2025 का आयोजन किया। कार्यक्रम का विषय आंतरिक प्रकाश एवं सतत विकास (इनर रेडिएंस एंड सस्टैनेबिलिटी) रहा। इसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाते हुए हर्ष और उल्लास के साथ दीपावली का उत्सव मनाना था। उत्सव में नृत्य एवं संगीत प्रस्तुतियां, भाषण और कविता पाठ हुए। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण इको-फ्रेंडली रंगोली प्रतियोगिता रही, जिसमें प्रतिभागियों ने फूल, पत्ते, चावल का आटा एवं मसालों का प्रयोग किया। समापन पर सभी को संदेश दिया गया कि दीपावली का वास्तविक प्रकाश तभी सार्थक है जब हम अपने आस-पास के वातावरण को भी प्रकाशित और संरक्षित करें। कार्यक्रम में विभाग अध्यक्ष प्रो. मनीष राय, डॉ. सुमित श्रीवास्तव, डॉ. छवि शर्मा, डॉ. इंदरप्रीत कौर सहित विभाग के सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

श्रीमद्भागवत कथा में भगवान के 24 अवतारों का किया वर्णन

बरेली, अमृत विचार : मॉडल टाउन स्थित श्री हरि मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के तीसरे दिन भगवान के 24 अवतारों का वर्णन किया। कथा वाचक ब्रह्मचारी भोलानंद महाराज ने भक्तों को श्रीमद्भागवत गीता के दिव्य संदेशों से अभिभूत किया। कथा में उन्होंने देवहूति प्रसंग, ध्रुव चरित्र, जड़ भरत चरित्र, प्रह्लाद चरित्र, अजामिल चरित्र और 28 नरकों का उल्लेख करते हुए बताया कि मनुष्य का परम धर्म भगवान का भजन कर आत्म कल्याण करना है। उन्होंने कहा कि भक्त प्रह्लाद की तरह जो व्यक्ति हर परिस्थिति में प्रभु स्मरण करता है, वही जीवन का वास्तविक उद्देश्य प्राप्त करता है। मंदिर सचिव रवि छाबड़ा ने बताया कि श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन 18 अक्टूबर तक किया जाएगा। महिला मंडल अध्यक्ष रेनू छाबड़ा, मंदिर समिति अध्यक्ष सुशील अरोड़ा, धीरज सेठी, संजय आनंद, गोविंद तनेजा, रंजन कुमार, रघु जायसवाल, हरीश और हिमांशु आदि उपस्थित रहे।

न्यूज ब्रीफ

ग्रैमी विजेता गायक डी'एंजलो का निधन

लॉस एंजिलिस, एजेंसी : ग्रैमी पुरस्कार विजेता गायक डी'एंजलो का मंगलवार को निधन हो गया। वह 51 वर्ष के थे। एंजलो ने अनटाइटल्ड (हाउ डज इट फील) म्यूजिक वीडियो से लोगों का ध्यान खींचा था। उनके परिवार की ओर से जारी बयान के अनुसार, गायक का मंगलवार को निधन हो गया। उनका वास्तविक नाम माइकल यूजीन आर्चर था। गायक के परिजनों ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि वह कैंसर से जूझ रहे थे।

उप निरीक्षक के खाते से निकाले 90 हजार

अयोध्या, अमृत विचार : यलो जोन सुरक्षा में तैनात एक उप निरीक्षक साइबर ठगी का शिकार हो गया। अयोध्या कोतवाली को दी तहरीर में उप निरीक्षक दिनेश चंद्र पांडेय ने बताया कि वह वर्तमान में रायबरेली से यलो जोन ड्यूटी अयोध्या में तैनात है। 7 अक्टूबर की रात लगभग 10 :12 बजे उसके बैंक ऑफ बड़ौदा सैलरी एकाउंट अयोध्या शाखा से 90 हजार बिना किसी ओटीपी व स्वयं के निकाले बिना ही निकल गए।

ट्रंप ने 28 उन्नत बी-2 बमवर्षकों के नए बैच का ऑर्डर देने की घोषणा की

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को घोषणा की कि वाशिंगटन ने अपने उन्नत बी-2 स्टील्थ बमवर्षकों के एक और नए बैच का ऑर्डर दिया है। ट्रंप के अनुसार ये ऑर्डर पहले से उन्नत हैं। रिपोर्टों के अनुसार उन्होंने आगे कहा, "हमने अभी थोड़े उन्नत संस्करण के 28 और बमवर्षक ऑर्डर किए हैं। हमने ढेर सारे बमवर्षक ऑर्डर किए हैं।

ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में अगस्त में एक पत्रकार सम्मेलन के दौरान कहा था कि अमेरिकी सेना ने बी-2 के नए और उन्नत संस्करण का ऑर्डर दिया है। हालांकि उन्होंने अपनी टिप्पणी के बारे में विस्तार से नहीं बताया। लेकिन उन्होंने कहा कि उन्नत विमान समान लेकिन वास्तव में काफी अलग हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने युद्ध मशीनों की सराहना करते हुए कहा कि अमेरिकी वायु सेना ने 22 जून को ऑपरेशन मिडनाइट हैमर के दौरान इन खूबसूरत बी-2 बमवर्षकों ने से सात को उड़ाया था। यह 12-दिवसीय ईरान-इजराइल युद्ध के दौरान हुआ था, जहां अमेरिका ने फोर्डो, नतांज और त ईरान के तीन प्रमुख परमाणु प्रतिष्ठानों पर बमबारी की थी।

मुजफ्फरनगर में एक करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के पटाखे जब्त

मुजफ्फरनगर, एजेंसी: जिले के दालमंडी क्षेत्र में पुलिस ने सात गोदामों में अवैध रूप से रखे गए एक करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के पटाखे जब्त किए हैं। पुलिस क्षेत्राधिकारी सिद्धार्थ मिश्रा ने मंगलवार को यहां संवाददाताओं को बताया कि जिला प्रशासन के अधिकारियों ने सोमवार रात सात गोदामों पर छापा मारा और 12 क्विंटल पटाखे बरामद किये। इन पटाखों को अवैध रूप से बिक्री के लिए रखा गया था। उन्होंने बताया कि पुलिस ने इस सिलसिले में सात गोदाम मालिकों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस उनकी तलाश कर रही है।

इस वर्ष दो दिन 18 व 19 को मनाया जाएगा पर्व

धनतेरस में खरीदारी के लिए एक घंटे का शुभ मुहूर्त

कार्यालय अयोध्या

अमृत विचार : धनतेरस का पर्व इस वर्ष दो दिन मनाया जाएगा। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार 18 अक्टूबर को दोपहर 12:18 मिनट पर कार्तिक माह के त्रयोदशी तिथि प्रारंभ हो रही है जो 19 अक्टूबर को दोपहर 1:51 मिनट तक रहेगी। इस बार धनतेरस पर खरीदारी के लिए 18 अक्टूबर को शाम 7:16 मिनट से 8 :20 मिनट के बीच एक घंटा चार मिनट का शुभ मुहूर्त पड़ रहा है। इस दौरान सोना-चांदी के जेवर, सामान, बर्तन व अन्य धातुओं के समान को खरीदना बेहद शुभ माना गया है। वहीं

• ज्योतिषाचार्यों के अनुसार धन और स्वास्थ्य से जुड़ा है पर्व

त्रयोदशी तिथि पर व्रत रहने वाले लोग 19 अक्टूबर को ब्रह्म मुहूर्त को मान रहे हैं।

कार्तिक माह में धनतेरस का भी विशेष महत्व माना जाता है। सनातन धर्मावलंबियों के पर्वों में दीपावली का एक प्रमुख स्थान है। जिसके प्रथम चरण में धनतेरस का पर्व धार्मिकता से ओतप्रोत होते हुए सामाजिक और व्यवसायिक वातावरण को भी लाभकारी और उल्लासमय बना देता है। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार यह पर्व धन और स्वास्थ्य से जुड़ा है। इस दिन मां लक्ष्मी और कुबेर देव की पूजा और आराधना से स्थापित वातावरण में खरीदारी करने से धन और उस वस्तु में 13 गुना वृद्धि होती है वहीं भगवान धनवंतरी की उपासना से स्वास्थ्य में 13 गुना लाभ मिलता है इसलिए इस दिन 13 की संख्या शुभ मानी जाती है।

यह कहावत आज भी प्रचलित है कि 'पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में माया' इसलिए दीपावली में सबसे पहले धनतेरस को महत्व दिया जाता है। जो भारतीय संस्कृति के हिसाब से बिल्कुल अनुकूल है। धनतेरस के दिन विशेष मुहूर्त को देख कर ही खरीदारी की जाती है। ज्योतिषाचार्य करुणा निधान बताते हैं कि 18 अक्टूबर को दोपहर में अभिजीत मुहूर्त पर धनतेरस प्रारंभ हो रहा है। जिसमें राहुकाल को छोड़कर किसी भी समय खरीदारी की जा सकती है लेकिन एक घंटे के बीच का जो समय है वह सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। उन्होंने बताया कि धनतेरस को मुख्य रूप से 18 अक्टूबर को ही मनाया जाएगा।

रामपुर सांसद मोहिबुल्लाह नदवी को चौथी पत्नी को देना होगा गुजारा भत्ता

विधि संवाददाता, प्रयागराज

अमृत विचार: इलाहाबाद हाईकोर्ट ने रामपुर के सपा सांसद मोहिबुल्लाह नदवी को पारिवारिक विवाद में चौथी पत्नी रूमाना परवीन को हर महीने 30,000 रुपए भरण-पोषण देने का आदेश दिया है। कोर्ट ने विवाद को सुलझाने के लिए इसे हाईकोर्ट के मध्यस्थता एवं सुलह केंद्र भेजने का भी निर्देश दिया है। उक्त आदेश न्यायमूर्ति सुभाष चंद्र शर्मा की एकलपीठ ने सपा सांसद मोहिबुल्लाह नदवी की आपराधिक पुनरीक्षण याचिका पर सुनवाई के दौरान पारित किया।

सांसद ने परिवार न्यायालय, आगरा के अप्रैल 2024 के भरण-पोषण आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी और इसे रद्द करने की मांग की थी। मामले में 2020 में आगरा के सदर बाजार थाने में सीआरपीसी की धारा 127 के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। सांसद के अधिवक्ता ने कोर्ट में कहा कि यह मामला वैवाहिक विवाद से जुड़ा है और उनका मुवक्किल इसे आपसी सहमति और सौहार्दपूर्ण तरीके से सुलझाना चाहता है। उन्होंने अनुरोध किया कि मामला मध्यस्थता केंद्र को भेजा जाए ताकि दोनों पक्ष मिल-बैठकर समाधान निकाल सकें। सांसद ने अपनी गंभीरता दिखाते हुए यह पेशकश भी की कि पहली पेशी पर ही अपनी पत्नी को 50,000 रुपए देने को तैयार हैं। अंत में कोर्ट ने मामले को मध्यस्थता केंद्र भेजने का आदेश देते हुए कहा कि ऐसे पारिवारिक विवादों को बातचीत के माध्यम से सुलझाने की पूरी संभावना होती है। कोर्ट ने निर्देश दिया कि सांसद 30 दिनों के भीतर 55,000 रुपए का डिमांड ड्राफ्ट मध्यस्थता केंद्र में जमा करें। इसमें से 50,000 रुपए उनकी पत्नी को पहली उपस्थिति पर दिए जाएंगे।

तालाब की जमीन पर बने 80 मकान तोड़ने पर रोक

हाईकोर्ट के निर्णय से संभल के हातिम सराय इलाके के लोगों को राहत

विधि संवाददाता, प्रयागराज

अमृत विचार: इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मंगलवार को संभल के हातिम सराय इलाके में आठ बीघा भूमि को तालाब की जमीन बताकर 80 मकानों और एक मस्जिद के अवैध निर्माण के ध्वस्तीकरण पर रोक लगा दी है। बता दें कि उपरोक्त निर्माण को प्रशासन ने तोड़ने का नोटिस जारी किया था।

तहसीलदार धीरेंद्र प्रताप सिंह ने नोटिस में 15 दिन में जवाब देने और निर्माण हटाने का निर्देश दिया। इसके बाद जमीन की पैमाइश कर लाल निशान लगाए गए। सपा विधायक इकबाल

महमूद ने डीएम डॉ. राजेंद्र पैंसिया से मुलाकात कर दस्तावेज सौंपते हुए दावा किया कि यह भूमि राम सुनीति देवी की निजी संपत्ति है।

उन्होंने बताया कि पूर्व भाजपा विधायक सत्यप्रकाश गुप्ता ने इसका भराव कराया था। परिवार की ओर से दावा भी किया गया कि जमीन पुश्तैनीसंपत्ति है। राम सुनीति देवी की पोती पूर्वी वार्ष्णेय ने बताया कि यह भूमि पहले उनकी दादी और मां के नाम थी और बाद में बेची गई।

संबंधित मामला पहले सिंगल बेंच के समक्ष आया, लेकिन 4 अक्टूबर को हाईकोर्ट ने अंतरिम स्टे देने से इनकार कर दिया था और पक्षकारों को पहले प्रशासनिक उपाय अपनाने को कहा। हालांकि मंगलवार को डिवीजन बेंच ने हस्तक्षेप करते हुए ध्वस्तीकरण पर रोक लगा दी, जिससे प्रभावित परिवारों को बड़ी राहत मिली। कोर्ट ने आदेश दिया कि अगली सुनवाई तक किसी भी निर्माण को नहीं तोड़ा जाएगा और सभी पक्ष अपने दस्तावेज प्रस्तुत करें।

सीओपी 30 प्रतिनिधियों ने बहुपक्षवाद को मजबूत करने पर सहमत जताई

ब्रासीलिया, एजेंसी: ब्राजील में आगामी 2025 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (सीओपी30) में भाग लेने वाले देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने बहुपक्षवाद को मजबूत करने की आवश्यकता पर व्यापक रूप से सहमति व्यक्त की है। शिखर सम्मेलन के प्रभारी ब्राजील के वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। ब्राजील के विदेश मंत्रालय के जलवायु, ऊर्जा एवं पर्यावरण सचिव तथा सीओपी30 के अध्यक्ष आंद्रे कोरिया डो लागो ने ब्रासीलिया में आयोजित प्री-सीओपी30 बैठक के दौरान एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि बहुपक्षवाद को सुदृढ़ करने की इच्छा पर स्पष्ट सहमति है और सभी ने इसका उल्लेख किया।

उन्होंने कहा कि अमीर देशों से लेकर छोटे द्वीपों और मध्यम आय वाले देशों ने अनुकूलन पर भी जोर दिया और इस पर आम सहमति बन गयी है।

कार्यालय जिला पंचायत शाहजहांपुर

पत्रांक: सी-773/जि.पं.मेला कार्तिक/2025-26 दिनांक: 14.10.2025

सार्वजनिक सूचना

जिला पंचायत शाहजहांपुर द्वारा विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी श्रंगी ऋषि की तपोभूमि जी के तट पर मेला कार्तिक ढाई घाट गंगा नदी के पावन तट पर श्रद्धालुओं हेतु आयोजित किया जायेगा। इस वर्ष यह मेला दिनांक 31.10.2025 से प्रारंभ होकर दिनांक 08.11.2025 को समाप्त होगा। मेले का मुख्य पर्व कार्तिक पूर्णिमा दिनांक 5.11.2025 दिन बुधवार को है। इस मेले को सफलतापूर्वक संपन्द कराने हेतु मा. अध्यक्ष महोदया ने मेला स्थल चयन हेतु दिनांक 25.10.2025 को समय 12:00 बजे गंगा जी के पावन तट पर ढाई घाट पर निर्धारित किया है।

अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत शाहजहांपुर

कार्यालय ग्राम पंचायत मिलकिया विकास खंड निगोही जिला शाहजहांपुर

निविदा सूचना

समस्त पंजीकृत फर्मो एवं विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत मिलकिया की कार्य योजना 2025-26 के अन्तर्गत मनरेगा योजना के अन्तर्गत निम्न कार्यो को कराये जाने हेतु ईट, रेता, रोड़ी, सीमेन्ट, बजरी, बजरफुट, पन्नी, सरिया इत्यादि सामान की आवश्यकता है। उक्त सामग्री की सीलबन्द निविदायें दिनांक 15.10.2025 को ग्राम पंचायत कार्यालय पर दोपहर 2 बजे तक आमंत्रित की जायेगी जो उसी दिन दोपहर 3:00 बजे ग्राम पंचायत कार्यालय पर खोली जायेगी। निविदा को स्वीकृत एवं अस्वीकृत करने का अधिकार केवल ग्राम पंचायत को होगा।

क्र.सं.	कार्य का नाम	लम्बाई	अनु. लागत
1.	ग्राम सिन्दलखेड़ा में रामसेन के मकान से विशम्बर दयाल के मकान तक नाली व सी.सी. रोड	88X3.30 मी.	39305/-
2.	सेवा सिंह के मकान से प्रताप के मकान तक नाली व इण्टरलॉकिंग कार्य।	120X2.90 मी.	389966/-
3.	प्राथमिक स्कूल मिलकिया में एम.डी.एम. सेट निर्माण कार्य।	11X5 मी.	550000/-

ग्राम प्रधान- अनीता देवी गंगामहेश पाण्डे- सचिव

कार्यालय नगर पंचायत खुटार, जनपद-शाहजहांपुर

पत्रांक: 201/न.पं.खु./2025-26 दिनांक: 14.10.2025

प्रस्ताव आमंत्रण सूचना

समस्त पंजीकृत अनुभवी गैर सरकारी संगठनों (NGO) को सूचित किया जाता है कि शासनादेश संख्या पी.एम.यू./54/563/2023 दिनांक 01.09.2025 के अनुपालन में नगर पंचायत खुटार को गार्वेज फ्री सिटी बनाये जाने हेतु डोर-टू-डोर कूड़े के पृथक्करण (सोर्स सेग्रिगेशन) कार्य किये जाने के उद्देश्य से जनमानस में चेतना जाग्रत किये जाने के लिए वृहद स्तर पर जन जागरूकता अभियान आगामी 03 माह के लिए चलाया जाना है। जिसके अन्तर्गत संवाद, प्रेरणात्मक कार्यक्रम (नुक्कड़ नाटक इत्यादि) के माध्यम से जनसाधारण आगे में अपशिष्ट प्रबंधन हेतु व्यवहारात्मक, गुणात्मक परिवर्तन करते हुये स्वच्छता सम्बन्धी आदतों का विकास किया जा सकें। उक्त सन्दर्भ में पंजीकृत/अनुभवी गैर सरकारी (NGO) प्रस्ताव 20.10.2025 को समय 04:00 बजे तक सीलबन्द लिफाफे में नगर पंचायत खुटार जनपद-शाहजहांपुर में आमंत्रित है। इससे सम्बन्धित समस्त नियम व शर्ते कार्यालय में किसी भी कार्यदिवस में देखी जा सकती है।

अतिरिक्त मजिस्ट्रेट/अधिशासी अधिकारी, नगर पंचायत खुटार, शाहजहांपुर
अध्यक्ष, नगर पंचायत खुटार, शाहजहांपुर

न्यायालय श्रीमान् जनपद न्यायाधीश, बरेली

प्रकीर्ण वाद सं.- 18/2024

बाबा प्रचार गिरी आयु लगभग 51 वर्ष चेला महंत उमा शंकर गिरी निवासी मगनपुर, परगना तहसील फरीदपुर जिला बरेली .... प्रार्थी

बनाम 1. बाबा जागेश्वर गिरी आयु लगभग 40 वर्ष चेला महंत उमा शंकर गिरी निवासी सिसैय्या मगनपुर, परगना, तहसील फरीदपुर, जिला बरेली
2. बाबा राम नरेश गिरी आयु लगभग 38 वर्ष चेला महंत उमा शंकर गिरी निवासी सिसैय्या मगनपुर, परगना, तहसील फरीदपुर, जिला बरेली

.... विपक्षीगण

दरखास्त मुसम्मी बाबा प्रचार गिरी ने वास्ते सर्वराकार नियुक्त करने हेतु वाद योजित किफायत जाये याफतावी मुसम्मी बाबा प्रचार गिरी। अपने व मुजादि एक्स 7 सन् 1889 ई. व कैद।

हरगाह मुसम्मी बाबा प्रचार गिरी ने सर्वराकार नियुक्त करने और तारीख 17.10.2025 वास्ते समायत दरखास्त हाजा के मुकर्रर की है। लिहाजा इश्तहार जारी किया जाता है कि जिस किसी को दरखास्त हाजा के निसवत कोई उजर हो, असालतन या वकालतन बतारीख 17.10.2025 को पेश होकर दरखास्त हाजा की निसवत उजर पेश करें। दरसूरत इनकामें तारीख मुकर्रर कोई उजर निस्वत दरखास्त सुना नहीं जायेगा और मुनासिब हुक्म निस्वत दरखास्त हाजा सादिर होगा। आज दिनांक 3.10.2025 को मेरे दस्तखत व मोहर अदालत से जारी किया गया।

जिला जज, बरेली

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना : ओटी-09-2025

उप मुख्य विद्युत इंजीनियर-II/निर्माण, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिये ''खुली'' निविदा आमंत्रित की जाती है :-

निविदा सं. : ओटी-09-2025, **कार्य का विवरण :** पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मण्डल अन्तर्गत सहजनवाँ-दोहरीघाट नई लाईन परियोजना के तहत सहजनवाँ (Excl.) - बांसगाँव (Incl.) खण्ड के ओएचई (2x25 केवी, एसी, 50 हट्र्ज) सिस्टम के साथ-साथ बाउण्ड्री सेक्शनिंग पोस्ट (BSP), सब सेक्शनिंग पोस्ट (SSP) के रेलवे विद्युतीकरण हेतु डिजाइन, आपूर्ति, निर्माण, परीक्षण एवं कमीशनिंग का कार्य, **अनुमानित लागत :** रु. 34,25,74,214.11, **बयाना राशि :** रु. 18,62,900.00, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** रु. निल, **कार्य पूर्ण करने की अवधि :** 24 माह, **निविदा बन्द होने की अंतिम तिथि व समय :** 10.11.2025 को 15.00 बजे।

नोट : • इस निविदा के विरुद्ध कोई मैनुअल आफर स्वीकार नहीं किया जायेगा। ऐसे प्राप्त मैनुअल आफर को उपेक्षित कर दिया जायेगा। विस्तृत विवरण व निविदा जमा करने हेतु कृपया भारतीय रेलवे की वेबसाईट www.ireps.gov.in को देखें। • निविदा सूचना में यदि हिन्दी या अंग्रेजी के आलेखों में कोई भिन्नता होती है तो अंग्रेजी के ही आलेख मान्य होंगे।

उप मुख्य विद्युत इंजीनियर-II/निर्माण
मुजाधि/विद्युत-161 पूर्वोत्तर रेलवे/गोरखपुर

ट्रेनों में ज्वलनशील पदार्थ लेकर यात्रा न करें

स्टॉर्मर ने मुंबई यात्रा की जानकारी ब्रिटिश संसद को दी

लंदन, एजेंसी

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर ने मंगलवार को ब्रिटिश संसद के निचले सदन 'हाउस ऑफ कॉमन्स' को पिछले सप्ताह मुंबई की अपनी दो-दिवसीय यात्रा के बारे में जानकारी दी। उनकी इस यात्रा के तहत ब्रिटेन का सबसे बड़ा व्यापार प्रतिनिधिमंडल भारत पहुंचा था और इस दौरान लगभग 1.3 अरब पाउंड के करार हुए।

स्टॉर्मर ने संसद को संबोधित करते हुए कहा कि जुलाई में व्यवसायों के लिए नए अवसर खोलने और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए हुए एक ऐतिहासिक व्यापार समझौते के बाद, दोनों देश भविष्य को लेकर एकजुट हैं। दो महीने पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ब्रिटेन यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित भारत-ब्रिटेन व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (सीईटीए) से द्विपक्षीय व्यापार साझेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है, जो वर्तमान में 44 अरब पाउंड प्रति वर्ष है। स्टॉर्मर ने कहा कि भारत विश्व मंच पर एक उभरती

• भारत को विश्व मंच पर उभरती शक्ति बताया

हुई शक्ति है, जो 2028 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है। उन्होंने कहा जुलाई में, हमने एक ऐतिहासिक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए, ताकि भारत में ब्रिटिश व्यवसायों के लिए नये अवसर खुले। पिछले हफ्ते, मैंने भारत में अब तक के सबसे बड़े ब्रिटिश व्यापार प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के रूप में अपनी पहली आधिकारिक भारत यात्रा के दौरान मोदी के साथ अपनी बातचीत के बारे में ब्रिटिश सांसदों को जानकारी देते हुए स्टॉर्मर ने रेखांकित किया कि कई और ब्रिटिश विश्वविद्यालय भारत में अपने परिसर खोलने के लिए तैयार हैं, जिससे ब्रिटेन, भारत में एक अग्रणी अंतरराष्ट्रीय शिक्षा प्रदाता बन जाएगा।

इवेंट मैनेजमेंट कंपनी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

नोएडा, एजेंसी: राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के पूर्व अध्यक्ष एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) राष्ट्रीय परिषद के सदस्य अरुण हलदर ने बीती रात गौतमबुद्ध नगर जनपद के सेक्टर 63 थाने में एक इवेंट मैनेजमेंट कंपनी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। अरुण हलदर का आरोप है कि कंपनी के लोगों ने उनके गायक पुत्र अनुराग हलदर को एक कार्यक्रम के लिए बुलाया था, जहां उनके (पुत्र के) साथ जातिसूचक शब्द कहते हुए गाली-गलौज की गयी।

घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस आयुक्त लक्ष्मी सिंह की मीडिया प्रभारी ने मंगलवार को बताया कि बीती रात अरुण हलदर ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि इवेंट मैनेजमेंट कंपनी जर्नी के निदेशक यशवर्धन गोयल एवं अन्य ने उनके बेटे अनुराग को आपराधिक धमकी दी, गाली-गलौज किया और उन्हें जातिसूचक शब्द कहे।

अनुराग जाने-माने बॉलीवुड गायक एवं संगीतकार हैं। शिकायतकर्ता के अनुसार उनके बेटे अनुराग को 11 अक्टूबर को किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी, लखनऊ में जर्नी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के लिए बुलाया गया था।

हादसे में चचेरे भाइयों समेत तीन की गई जान

हादसे का शिकार हुए अंश, विनीत और धीरेंद्र।

संवाददाता, फर्रुखाबाद

अमृत विचार: मोहम्मदाबाद थाना क्षेत्र में सोमवार रात एक कोल्ड स्टोरेज के पास दो बाइकों में आमने-सामने की भिड़ंत में दो चचेरे भाइयों सहित तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे का शिकार हुए तीनों लोग मैनपुरी के रहने वाले थे।

पड़ोसी मैनपुरी जनपद के ऐलाऊ थाना क्षेत्र के अगहर गांव निवासी धीरेन्द्र जाटव (25), उसके चाचा बाल किशन (46), चाची ललिता (38) और चचेरा भाई अंश (5) मोहम्मदाबाद थाना क्षेत्र के मदनपुर गांव एक तेरहवीं संस्कार में शामिल होने आए थे। तेरहवीं संस्कार में

• मोहम्मदाबाद थाना क्षेत्र में दो बाइकों के बीच हुई सीधी भिड़ंत

शामिल होने के बाद सोमवार की रात एक ही बाइक से वापस घर लौट रहे थे, तभी मोहम्मदाबाद थाना क्षेत्र के मदनपुर कोल्ड स्टोरेज के पास सामने आई तेज रफ्तार बाइक से उनकी सीधी टक्कर हो गई।

हादसे में धीरेंद्र और अंश के साथ दूसरी बाइक पर सवार मैनपुरी जनपद के ही भोगांव थाना क्षेत्र के भीमनगर निवासी विनीत (25) पुत्र वीरेंद्र की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बाल किशन और उनकी पत्नी ललिता गंभीर रूप से घायल हो गई। दोनों लोगों को डॉ.राममनोहर लोहिया जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया।

उम्मीद हाउसिंग फाइनेंस प्रा. लिमिटेड

UMMEED HOUSING FINANCE — We bring your dreams to life

पंजीकृत कार्यालय: 2009-2014, 20वीं मंजिल, मैग्नम ग्लोबल पार्क, सेक्टर-58, गुरुग्राम (हरियाणा)-122002")
CIN: U65922HR2016PTC057984

सरफेसी अधिनियम की धारा(13)2 के तहत मांग सूचना

चूंकि ऋण खाता एनपीए बन गया है, इसलिए प्राधिकृत अधिकारी ने तालिका में दिए गए उधारकर्ता/आवेदक/गारंटर/बन्धककर्ता को वित्तीय संपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13[2] के तहत मांग नोटिस जारी किया है। नोटिस के अनुसार यदि उधारकर्ता 60 दिनों के भीतर पूरी राशि जमा नहीं करते हैं, तो राशि नीचे उल्लिखित बंधक संपत्ति/सुरक्षित संपत्तियों की नीलामी से वसूल की जाएगी। इसलिए, उधारकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि वे मांग नोटिस की तारीख से 60 दिनों के भीतर भविष्य के ब्याज और खर्चों के साथ पूरी ऋण राशि जमा कर दें, अन्यथा उक्त अधिनियम के प्रावधान 13 [4] और 14 के तहत प्राधिकृत अधिकारी नीचे दिए गए अनुसार बंधक संपत्ति/सुरक्षित संपत्तियों की बिक्री के लिए कब्जा ले लेंगे।
उधारकर्ताओं को ध्यान देना चाहिए कि अधिनियम, 2002 के 13 [13] के संदर्भ में इस नोटिस की प्राप्ति के बाद, आपको सुरक्षित लेनदार की पूर्व लिखित सहमति के बिना, बिक्री, पट्टे या अन्य किसी भी माध्यम से किसी भी सुरक्षित संपत्ति को स्थानांतरित करने से प्रतिबंधित और रोका जाता है।
उधारकर्ताओं का ध्यान सुरक्षा ब्याज (प्रवर्तन) नियम, 2002 अधिनियम की धारा-13[8] आर/डब्ल्यू नियम 3[5] की ओर आकर्षित किया गया है कि उधारकर्ता नीलामी नोटिस के प्रकाशन से पहले नीचे उल्लिखित पूर्ण बकाया राशि के भुगतान पर अपनी सुरक्षित संपत्तियों को प्राप्त करने का हकदार होगा, जो उसके बाद समाप्त हो जाएगी।

क्र सं	उधारकर्ता/आवेदक/गारंटर/बंधककर्ता का नाम	धारा 13 [2] के तहत मांग नोटिस की तारीख और राशि
1.	**1. सतीश कुमार पुत्र राधे लाल (उधारकर्ता), 2. लता पत्नी सतीश कुमार (सह-उधारकर्ता), 3. सौरभ कश्यप पुत्र सतीश कुमार (सह-उधारकर्ता), उपरोक्त सभी निवासी:** मकान संख्या 75/सी, रोड संख्या-07, गुड शेफर्ड स्कूल के पास, कृष्णा नगर, बरेली, उत्तर प्रदेश- 243122 **इसके अतिरिक्त,** इज्जत नगर रेलवे वर्कशॉप, रोड संख्या 7, इज्जत नगर, बरेली, उत्तर प्रदेश- 243122 **ऋण संख्या: LXBAR02923-240025154, ऋण अनुबंध की तिथि: 28 मई 2023, ऋण राशि: रु. 24,00,000/-**	**08-अक्टूबर-2025 रूपये 24,24,219/- (रूपये चौबीस लाख चौबी हजार दो सौ उन्नीस मात्र) 08-अक्टूबर-25 को, दिनांक 09-अक्टूबर-2025 से अतिरिक्त ब्याज और अन्य शुल्कों सहित।**
	बंधक संपत्ति का विवरण:- भूखंड संख्या 30 और 31 के एक हिस्से पर बने मकान समस्त अंश एवं खंड, जिसका क्षेत्रफल 83.61 वर्ग मीटर है, खसरा संख्या 63, ग्राम परतापुर चौधरी में स्थित, तहसील और जिला-बरेली, उत्तर प्रदेश जिसकी **सीमा इस प्रकार है: पूर्व-** भूखंड संख्या 38 और 39 हॉल राम प्रसाद का मकान, **पश्चिम-** आराजी गुरदयाल सिंह, भूखंड चमन लाल, **उत्तर-** मकान चमनलाल जो गुरदयाल सिंह की आराजी पर बना है, **दक्षिण-** सड़क 16 फीट चौड़ी मकान टेकचंद और लड़ैती देवी।	
2.	**1. नरेश कुमार पुत्र नन्हे लाल (उधारकर्ता), 2. सोनम पत्नी नरेश (सह-उधारकर्ता), 3, मीना देवी पत्नी नन्हे लाल (सह-उधारकर्ता) उपरोक्त सभी निवासी-** 196 मोहल्ला बेनी चौधरी, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश- 262001 **इसके अलावा** 178 मोहल्ला बेनी चौधरी पीलीभीत उत्तर प्रदेश-262001 **ऋण संख्या - LXBAR04124-250044040, ऋण अनुबंध की तिथि: 28-अक्टूबर-2024, ऋण राशि रु. रु. 12,25,000/-**	**08-अक्टूबर-2025 रूपये 12,76,455/- (केवल बारह लाख छिहत्तर हजार चार सौ पचपन रूपये) 08-अक्टूबर-25 को + 09-अक्टूबर-2025 की तिथि से अतिरिक्त ब्याज और अन्य शुल्क**
	बंधक संपत्ति का विवरण:- मकान का क्षेत्रफल 104.39 वर्ग मीटर, मोहल्ला बेनी चौचरी में स्थित, जिला- पीलीभीत, उत्तर प्रदेश, **सीमाएँ: पूर्व-** बाबू पुत्र प्रताप का मकान, **पश्चिम-** विक्रम पुत्र मुंशी लाल का मकान, **उत्तर-** सरन सिंह का मकान और 2 मीटर चौड़ा रास्ता, **दक्षिण-** नफीस बत्ती वाले का मकान।	

दिनांक: 15.10.2025,
स्थान: गुरुग्राम
प्राधिकृत अधिकारी श्री गौरव त्रिपाठी मोबाइल- 9650055701
उम्मीद हाउसिंग फाइनेंस प्रा. लिमिटेड

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड-लखीमपुर खीरी।

पत्रांक. 981/ग्रा0अभि0वि0/निविदा पत्रा0-1/2025-26, दिनांक. 24.09.2025

निविदा सूचना

महामहिम राज्यपाल महोदय, उत्तर प्रदेश, की ओर से अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड-लखीमपुर खीरी के अर्न्तगत जनपद लखीमपुर खीरी में निम्नलिखित कार्यों हेतु उ0प्र0 ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग में ए,बी,सी, डी0 श्रेणी के पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो से प्रतिशत दरों में अधोलिखित कार्य की ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र0 सं0/लाट सं0	विकास खण्ड	कार्य का नाम	लागत लाख में	2 प्रतिशत धरोहर धनराशि लाख में	निविदा पत्रक का मूल्य (समस्त करों सहित रू0 में)	कार्य पूर्ण करने का समय
1	2	3	4	5	6	7
		विधायक निधि				
1	लखीमपुर	धर्मसभा इण्टर कालेज, लखीमपुर में मुख्य प्रवेश द्वार से सभागार वाया समस्त प्रशासनिक कक्षों तक पहुंच हेतु इण्टरलाकिंग मार्ग व नाली निर्माण कार्य, 188.50 मी0। नं0पा0 लखीमपुर	15.695	0.314	944.00	2 माह
		जिला विकास विभाग				
2	लखीमपुर	विकास भवन लखीमपुर खीरी की 168.50 मीटर बाउण्ड्रीवाल की मरम्मत/निर्माण कार्य। लखीमपुर	10.000	0.200	856.00	2 माह

1. वेब साइट पर निविदा की उपलब्धता तिथि- 24.10.2025 से 30.10.2025 तक
2. ई-प्रोक्योरमेन्ट के माध्यम से निविदा प्राप्त करने की अन्तिम तिथि एवॅ समय-30.10.2025 समय -12.00 बजे दोपहर तक
3. ई-प्रोक्योरमेन्ट के माध्यम से तकनीकी निविदा खोलने की तिथि एवॅ समय 30.10.2025 समय - 12.30 बजे दोपहर से
4. निविदा आमंत्रण कर्ता को संशोधन/शुद्धि पत्र जारी करने का आई0 टी0 बी0 क्लाज-9 के अनुसार अधिकार है, जो आन लाइन उपलब्ध रहेगा जो किसी भी समाचार पत्र में प्रकाशित नहीं होगा। समस्त इच्छुक बिडर्स को सलाह दी जाती है कि वे ई-टेण्डर पोर्टल को नियमित रूप से अवलोकन करते रहें और अन्य आवश्यक जानकारी एवॅ निविदा प्रपत्र डाउन लोड करने हेतु विवरण वेबसाइट http:// etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।

UP - 238715 **दिनांक:** 08/10/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in **पर उपलब्ध है।**

(हेमंत सक्सेना)
अधिशासी अभियन्ता,
ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग,
प्रखण्ड-लखीमपुर खीरी।

सेना की लगाई गई जाली में फंसा तेंदुआ

अयोध्या कार्यालय।

अमृत विचार : सहादतगंज स्थित सैन्य एरिया में सुरक्षा के लिए लगाई लोहे की जाली में मंगलवार सुबह करीब छह बजे एक तेंदुआ फंस गया। उसने जाली से निकलने की काफी कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुआ। वन विभाग की टीम ने ट्रैंकुलाइज कर उसे बेहोशकर सुरक्षित निकाला। उसे मोहगी वन्य जीव प्रभाग महाराजगंज भेजा।

जाली में फंसने के बाद उग्र होकर तेंदुआ जोर-जोर से टक्कर मारकर दहाड़ता रहा। थककर बैठ जाता, फिर पूरी ताकत से जाली पर चढ़ने, उसे टक्कर मारकर गिराने का प्रयास करता। यह सिलसिला करीब एक घंटे तक चला। उधर से गुजर रहे लोगों ने जब तेंदुए की दहाड़ सुनी तब उन्हें इसकी जानकारी हुई। करीब 6:30 बजे इसकी सूचना वन विभाग को दी गई। सूचना

मौके पर मौजूद वन विभाग के कर्मी, थाना कैंट पुलिस व सेना के जवान।

पर पहुंचे सेना के जवान व वन विभाग की टीम ने पूरे इलाके को सील कर दिया गया। इसके बाद वन विभाग ने लखनऊ से ट्रैंकुलाइज करने वाले चिकित्सकों की टीम बुलाई। करीब 10 बजे टीम पहुंची व तेंदुए को बेहोश किया। जाली से निकाल कर उसका इलाज किया। बाद में उसे एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया गया। उक्त तेंदुआ काफी दिनों से कैंट एरिया से सटे जंगलों में दिखाई दे रहा था। हालांकि वह आवासीय इलाके में नहीं आया न

जाली में फंसा तेंदुआ।

ही किसी को नुकसान पहुंचाया। भूख मिटाने के लिए उसने नील गाय जैसे कुछ जंगली जानवरों का शिकार जरूर किया था।

नेशनल ब्रीफ

एनआईटी हमीरपुर के छात्र को मिला 3.40 करोड़ रुपये का पैकेज

हमीरपुर। हिमाचल प्रदेश के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), हमीरपुर के छात्र आर्यन मित्तल को इस साल प्लेसमेंट में सालाना 3.40 करोड़ रुपये का पैकेज मिला है। इंजीनियरिंग कॉलेज के एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। यह इस साल संस्थान के किसी छात्र को मिला सबसे ऊंचा पैकेज है। मित्तल कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन की दोहरी डिग्री के छात्र हैं। संस्थान के निदेशक एच एम सूर्यवंशी ने बताया कि पिछले वर्ष का उच्चतम पैकेज 2.05 करोड़ रुपये था। छात्राओं के बीच इलेक्ट्रॉनिक्स शाखा की दो छात्राओं को 1.68-1.68 करोड़ रुपये का वार्षिक पैकेज मिला है। सूर्यवंशी ने कहा कि इस साल संस्थान के 15 छात्रों ने 40 लाख रुपये से अधिक और 50 छात्रों ने 30 लाख रुपये से अधिक का पैकेज हासिल किया। उन्होंने छात्रों और स्टाफ को उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी।

राजनाथ ने सीडीएस जनरल चौहान की पुस्तक का विमोचन किया

नई दिल्ली। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष जनरल अनिल चौहान की नई पुस्तक भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा लक्ष्यों के अनुरूप भविष्य की ताकतवर सेना बनाने के लिए आवश्यक सिद्धांतों, रणनीतियों और नीतिगत आधार को पुष्ट करती है। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। 'हेडक्वार्टर इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ' ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने "रेडी, रेलेवेंट एंड रिसर्जेंट 2 : ए ब्लूप्रिंट फॉर द ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ इंडियाज मिलिट्री, शेपिंग ए फ्यूचर रेडी फोर्स" पुस्तक का विमोचन किया। इसमें कहा गया है, "यह रणनीतिक संकलन बदलते परिचालन परिदृश्य पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।

नीतीश के भाजपा से मतभेद कीअटकलों के बीच बिहार में तेज हुई सियासी हलचल

पहली बार मुख्यमंत्री आवास से बांटे गए जदयू के टिकट, भाजपा ने भी घोषित किए 71 प्रत्याशी

पटना, एजेंसी

बिहार में सत्तारूढ़ राजग में सीट बंटवारे को लेकर असंतोष की अटकलों के बीच मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को जदयू के उम्मीदवारों को विधानसभा चुनाव के टिकट सौंपे। इस बार पार्टी ने संवाददाता सम्मेलन में नामों की घोषणा की परंपरा को दरकिनार करते हुए सीधे मुख्यमंत्री आवास से टिकट बांटे। भाजपा ने भी कई चौंकाने वाले फैसलों के साथ अपने 71 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की। मौजूदा विधानसभा अध्यक्ष और सात बार के विधायक नंदकिशोर यादव का टिकट काट दिया गया, जबकि उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को करीब एक दशक बाद प्रत्यक्ष चुनाव में उतारा है।

स्वास्थ्य एवं कानून मंत्री मंगल पांडे जो अभी विधान परिषद के सदस्य हैं, उन्हें भी पार्टी ने विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी बनाया है। भाजपा को पहली बार सीट समझौते में जदयू के बराबर सीटें हैं। वहीं, यह स्पष्ट नहीं हुआ कि मंगलवार को नीतीश कुमार ने कुल कितने जदयू उम्मीदवारों को टिकट दिए। मुख्यमंत्री आवास पर पूरे दिन हलचल रही, जहां टिकट की उम्मीद में बुलाए गए प्रत्याशी आते-जाते रहे। टिकट पाने वालों में मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव, प्रदेश जदयू अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा (महनार) और बाहुबली नेता अनंत सिंह (मोकामा) जैसे नाम शामिल हैं। इनमें से कई ने नामांकन भी दाखिल कर दिया।

इस बीच, दिल्ली में रविवार को हुई सीट-बंटवारे की बातचीत में अपेक्षाकृत कम सीटें मिलने से नीतीश कुमार के नाराज होने की चर्चा पूरे दिन चलती रही। कुछ खबरों में यह भी दावा किया गया कि दिल्ली में बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री ने झा को फटकार लगाई थी। ये भी खबरें हैं कि कुछ सीटें जो पहले जदयू के खाते में थीं, वे पासवान की पार्टी को दे दी गई हैं, जिससे मुख्यमंत्री असंतुष्ट बताए जा रहे हैं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि लोजपा(राम विलास) इस बार कौन-कौन सी सीटों पर चुनाव लड़ेगी। वहीं, विपक्षी इंडिया गठबंधन के नेताओं ने राजग में दरार का दावा किया।

नीतीश कुमार के आवास के बाहर टिकट के लिए धरना देते कार्यकर्ता।

देनी पड़ी सफाई- गठबंधन में सबकुछ ठीक

पार्टी और गठबंधन के नेताओं को मीडिया और विपक्ष के बीच यह संदेश देने में मशक्कत करनी पड़ी कि सब कुछ ठीक है। जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा ने कहा, विपक्ष को हार साफ दिख रही है, इसलिए वह राजग में दरार की अफवाह फैला रहा है। असल में टूट की कगार पर तो इंडिया गठबंधन है। इस बीच, केंद्रीय मंत्री और कभी नीतीश कुमार के कट्टर आलोचक रहे चिराग पासवान ने भी सोशल मीडिया पर पोस्ट कर कहा कि राजग एकजुट है और नीतीश के नेतृत्व में चुनाव लड़ रहा है। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी सीट बंटवारे में छह सीटें मिलने से असंतुष्ट थे। उन्होंने भी सोशल मीडिया पर स्पष्ट किया कि सीटों की संख्या पर असहमति गठबंधन तोड़ने का कारण नहीं बन सकती। पासवान की लोजपा रा को 29 सीटें दी गई हैं, जबकि उपेंद्र कुशवाहा की दो साल पुरानी राष्ट्रीय लोक मोर्चा को मांझी की 'हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) जितनी यानी छह सीटें मिली हैं।

मुख्यमंत्री आवास पर धरने पर बैठे जदयू विधायक

दिनभर के घटनाक्रम में एक नाटकीय मोड़ तब आया, जब गोपालपुर के विधायक गोपाल मंडल बिना अनुमति लिए मुख्यमंत्री आवास पहुंच गए। बताया जाता है कि उनकी हरकतों से नाराज़ नीतीश कुमार ने उन्हें मिलने से मना किया था। सुरक्षाकर्मियों ने मंडल को जब अंदर जाने से रोका, तो उन्होंने धरना शुरू कर दिया। कई घंटे बाद पुलिस ने उन्हें वहां से हटा दिया। मंडल का क्षेत्र भागलपुर जिले में आता है, जहां उनका जदयू सांसद अजय मंडल से पुराना विवाद चल रहा है। इसी दौरान अजय मंडल ने भी यह आरोप लगाते हुए इस्तीफे की पेशकश की कि उनके क्षेत्र में टिकट उनकी सलाह के बिना बांटे जा रहे हैं।

तेजस्वी की नाराजगी के बाद लालू ने वापस लिए बांटे गए टिकट

पटना। राजद के अध्यक्ष लालू प्रसाद ने सोमवार को पार्टी उम्मीदवारों को टिकट बांटने की प्रक्रिया उस समय रोक दी जब उनके पुत्र और पार्टी के नेता तेजस्वी यादव ने हस्तक्षेप करते हुए यह याद दिलाया कि बिहार में इंडिया गठबंधन की सीट बंटवारे की औपचारिक घोषणा अभी बाकी है। सोमवार की शाम पटना के 10, सर्कुलर रोड स्थित पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के आवास के बाहर अफरातफरी जैसा माहौल देखने को मिला, जब लालू प्रसाद और राबड़ी देवी दिल्ली से लौटे थे। बड़ी संख्या में टिकट के दावेदार उनके आवास के बाहर एकत्र थे। बताया गया कि कुछ को पार्टी कार्यालय से फोन आने के बाद बुलाया गया था और वे कुछ ही देर में पार्टी का चुनाव चिन्ह लेकर बाहर निकले। इस बीच, देर रात दिल्ली से लौटे तेजस्वी यादव इस घटनाक्रम से नाराज बताए जाते हैं।

- गठबंधन में सीट बंटवारे की घोषणा से पहले ही बांट दिए थे टिकट

राजद सूत्रों के अनुसार, तेजस्वी ने अपने पिता से कहा कि पार्टी उम्मीदवारों को टिकट दिए जाने की तस्वीरें और वीडियो विपक्ष के गठबंधन इंडिया के सहयोगी दलों को गलत संदेश दे सकते हैं, क्योंकि सीट बंटवारे पर सहमति अभी नहीं बनी है। इसके बाद टिकट वितरण की प्रक्रिया तत्काल रोक दी गई और देर रात उन उम्मीदवारों से टिकट वापस ले लिए गए जिन्हें पहले प्रतीक दिए गए थे। पार्टी ने इसे तकनीकी कारण बताया। सूत्रों ने बताया कि उम्मीदवारों की औपचारिक घोषणा बुधवार शाम तक किए जाने की संभावना है।

भारत ने की मंगोलिया के लोगों के लिए मुफ्त ई वीजा देने की घोषणा

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगोलिया के राष्ट्रपति हुरेलसुख उखना के साथ व्यापक वार्ता के बाद मंगलवार को कहा कि मंगोलिया के विकास में भारत एक विश्वसनीय साझेदार रहा है और दोनों देश एक स्वतंत्र, खुले और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करते हैं। उखना सोमवार को भारत की चार दिवसीय यात्रा पर नई दिल्ली पहुंचे। राष्ट्रपति के रूप में यह उनकी पहली भारत यात्रा है।

उखना के साथ बातचीत के बाद मोदी ने कहा कि भारत मंगोलिया के लोगों को मुफ्त ई-वीजा उपलब्ध कराएगा। उन्होंने कहा कि भारत की 1.7 अरब अमेरिकी डॉलर की ऋण सहायता से कार्यान्वित तेल रिफाइनरी परियोजना मंगोलिया की ऊर्जा सुरक्षा को नई मजबूती प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि यह भारत की विश्व में सबसे बड़ी विकास साझेदारी परियोजना है और 2500 से भी अधिक भारतीय पेशेवर मंगोलिया के साथियों के साथ मिलकर इस परियोजना को साकार कर रहें हैं। मोदी ने कहा कि हम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर घनिष्ठ साझेदार के रूप में खड़े हैं और एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करते हैं। मंगोलिया के राष्ट्रपति ने स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में भारत की अग्रणी भूमिका की सराहना की तथा विशेष रूप से नई दिल्ली के नेतृत्व वाले अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का उल्लेख किया। अपने मीडिया वक्तव्य में मोदी ने यह भी कहा कि भारत और मंगोलिया के बीच संबंध महज कूटनीतिक संबंध से कहीं अधिक है। उन्होंने कहा कि सदियों से दोनों देश बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से बंधे हुए हैं, यही कारण है कि हमें आध्यात्मिक सहोदर भी कहा जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उखना के साथ हुई बातचीत में दोनों देशों के बीच इस परंपरा और ऐतिहासिक संबंधों को और मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

- भारत यात्रा पर आए मंगोलिया के राष्ट्रपति की मौजूदगी में कई घोषणाएं, मोदी ने कहा- भारत मंगोलिया के विकास में दृढ़ साझेदार

10 लाख प्राचीन पांडुलिपियों की डिजिटलीकरण जल्द

मोदी ने कहा कि मुझे यह बताते हुए खुशी है कि अगले वर्ष भगवान बुद्ध के दो महान शिष्यों सारिपुत्र और मौद्गल्या-यन के पवित्र अवशेषों को भारत से मंगोलिया भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत 'गंदन' बौद्ध मठ में एक संस्कृत शिक्षक भी भेजेगा, ताकि वहां के बौद्ध ग्रंथों का गहराई से अध्ययन किया जा सके और प्राचीन ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमने 10 लाख प्राचीन पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण की परियोजना को भी शीघ्र ही शुरू करने का निर्णय लिया है। मंगोलिया में बौद्ध धर्म के लिए नालंदा विश्वविद्यालय की अहम भूमिका रही है।

अब अहमदाबाद में न्यायाधीश की तरफ उछाला जूता

अहमदाबाद। अहमदाबाद सत्र अदालत में मंगलवार को फैसले से नाराज एक व्यक्ति ने न्यायाधीश की तरफ जूता उछाल दिया। यह घटना उस समय हुई, जब अदालत कक्ष में सुनवाई हो रही थी।

यह स्पष्ट नहीं है कि जूता अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश तक पहुंचा या नहीं। शहर के करंज थाने के निरीक्षक पी एच भाटी ने बताया कि न्यायाधीश के निर्देश पर उस व्यक्ति को छोड़ दिया गया और उसके खिलाफ कोई दंडात्मक कदम नहीं उठाया गया। व्यक्ति एक मामले में अपीलकर्ता था। भाटी ने कहा, अपील खारिज होने के बाद व्यक्ति गुस्से में आ गया और उसने न्यायाधीश की तरफ जूता फेंका। हालांकि, उसे अदालत के कर्मियों ने पकड़ लिया, लेकिन न्यायाधीश ने उसे जाने दिया और निर्देश दिया कि उसके खिलाफ कोई कार्रवाई न की जाए।

भारत के तीन कफ सिरप के खिलाफ डब्ल्यूएचओ ने जारी की चेतावनी

नई दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भारत में पाए गए खराब गुणवत्ता वाले खांसी के तीन सिरप कोल्ड्रिफ, रेस्पिफ्रेश टीआर और रीलाइफ के खिलाफ चेतावनी जारी की है। विश्वभर के राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरणों से कहा है कि यदि ये सिरप उनके देश में पाए जाएं, तो तुरंत डब्ल्यूएचओ को सूचना दें।

डब्ल्यूएचओ ने स्वास्थ्य पेशेवरों को भी सलाह दी है कि वे इन खराब गुणवत्ता की दवाओं का पता लगने तथा प्रतिकूल प्रभाव की किसी भी घटना की सूचना अपने राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरणों या 'नेशनल फार्माकोविजिलेंस सेंटर' को दें। यह

- कफ सिरप में कोल्ड्रिफ,रेस्पिफ्रेश टीआर और रीलाइफ का नाम

अलर्ट उस समय जारी किया गया है जब मध्य प्रदेश में 22 बच्चों की कोल्ड्रिफ सिरप पीने के बाद किडनी खराब होने के कारण मौत हो चुकी है। राजस्थान में भी तीन बच्चों की मौत यही सिरप पीने के बाद हुई है। डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी है कि इन घटिया उत्पादों से प्रभावित देशों और क्षेत्रों में आपूर्ति श्रृंखला पर निगरानी बढ़ाई जाए। सोमवार को जारी अलर्ट में कहा गया है, अनौपचारिक/अनियमित बाजार की निगरानी बढ़ाने की भी सलाह दी जाती है।

अयोध्या में बनेगा एनएसजी केंद्र, आपात स्थिति पर तुरंत पहुंचेंगे कमांडो

- केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने एनएसजी के 41वें स्थापना दिवस पर की घोषणा

मानेसर (हरियाणा), एजेंसी

गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कहा कि सरकार उत्तर प्रदेश के अयोध्या में ब्लैक कैट कमांडो बल एनएसजी का एक और क्षेत्रीय केंद्र स्थापित करेगी। मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद और गांधीनगर के मौजूदा केंद्रों के बाद यह राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) का छठा क्षेत्रीय केंद्र होगा। एनएसजी केंद्र इसके कमांडो को किसी भी आपात स्थिति में तुरंत और प्रभावी ढंग से पहुंचने में मदद करते हैं।

आतंकवाद रोधी कमांडो बल के 41वें स्थापना दिवस पर यहां उसके मुख्यालय में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि मोदी सरकार आने वाले दिनों में एनएसजी की कार्यप्रणाली में बड़ा बदलाव लाने वाली है। उन्होंने कहा अयोध्या में केंद्र बनने के बाद यहां एनएसजी के जवान चौबीसों घंटे तैनात रहेंगे। सरकार ने 30 जून और एक जुलाई 2009 को मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद और कोलकाता में एनएसजी के चार क्षेत्रीय केंद्रों का संचालन शुरू किया था। इन केंद्रों की स्थापना का निर्णय 2008 के 26/11 मुंबई आतंकवादी हमलों के बाद लिया गया था, ताकि विशिष्ट कमांडो को हमले वाली जगह पर पहुंचने में लगने वाला समय घटाया जा सके। इससे पहले, एनएसजी कमांडो को दिल्ली से हवाई मार्ग से लाना पड़ता था, जिससे देरी होती थी। एनएसजी की ये इकाइयां लंबे समय तक चलने वाले, उच्च जोखिम वाले आतंकवाद रोधी अभियानों के लिए एक विशेष 'बैकअप' बल के रूप में कार्य करती हैं। ये केंद्र कमांडो की पेशेवर कुशलता को निखारने में मदद करते हैं और राज्यों के प्रथम प्रतिक्रिया बलों, पुलिस बलों की क्षमता निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। एनएसजी का गठन 1984 में हुआ था। इसके अभियान में चूक नहीं होती, कम समय में किसी भी हमले का मुकाबला कर सकता है।

गुरुग्राम के मानेसर में स्थित एनएसजी के 41वें स्थापना दिवस पर प्रदर्शनी का अवलोकन करते अमित शाह।

आतंकवादियों के लिए कोई जगह सुरक्षित नहीं : शाह

मानेसर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान में आतंकवादी समूहों के मुख्यालयों, प्रशिक्षण केंद्रों और 'लॉन्च पैड्स' को तबाह कर दिया गया तथा अब आतंकवादियों के लिए कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं है। शाह ने यह भी कहा कि भारतीय सुरक्षा बल जमीन के अंदर घुसकर हर आतंकवादी कृत्य की सजा देने के लिए कृतसंकल्प हैं। ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान में आतंकवादी मुख्यालयों, उनके प्रशिक्षण केंद्रों और लॉन्च पैड्स को नष्ट किया है...ऑपरेशन महादेव में हमारे सुरक्षा बलों ने पहलगाम में आतंकी हमला करने वाले आतंकवादियों का सफाया करने के लिए सटीक कार्रवाई की। इससे नागरिकों का सुरक्षा बलों पर विश्वास और भी मजबूत हुआ है।

दिल्ली की यूनिवर्सिटी में छात्रा के कपड़े फाड़े, यौन उत्पीड़न

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली में साउथ एशियन यूनिवर्सिटी (एसएयू) की 18 वर्षीय एक छात्रा का विश्वविद्यालय परिसर में एक सुरक्षाकर्मी सहित चार लोगों ने यौन उत्पीड़न किया, उसके कपड़े उतार दिए और उसे गर्भपात की गोली खाने के लिए मजबूर किया। पीड़िता के साथ हुई इस भयावह घटना की दिल्ली पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की है।

पुलिस ने बताया कि बीटेक प्रथम

- पुलिस ने दर्ज की प्राथमिकी, चारों आरोपी फरार हुए

वर्ष की छात्रा 13 अक्टूबर को परिसर में घायल अवस्था में मिली थी, उसके कपड़े फटे हुए थे। इससे एक दिन पहले, उसके लापता होने की सूचना दी गई थी। पुलिस के अनुसार, इस मामले में मंगलवार को एक प्राथमिकी दर्ज की गई। पीड़िता का बयान जिला मजिस्ट्रेट के समक्ष दर्ज कर लिया गया है, जबकि चारों आरोपी फरार हैं।

छात्रा ने प्राथमिकी में आरोप लगाया है कि कन्वोकेशन सेंटर की ओर गई थी जहां निर्माण कार्य चल रहा था, लेकिन रात में वह बंद रहता है, और वहां कोई नहीं जाता। पीड़िता ने दावा किया कि वहां एक गार्ड ने एक अधेड़ व्यक्ति को बुलाया और दो लड़के भी उनके साथ आ गए। उसने प्राथमिकी में कहा, मैं सीढ़ियों पर बैठी थी। तभी वे चारों मेरे पास आए। उसके साथ मारपीट की, उसके कपड़े फाड़ दिए, उसकी जीभ के नीचे गर्भपात की एक गोली दबा दी और जान से मारने की धमकी दी।

प्राथमिकी के अनुसार, एक व्यक्ति ने उसे पकड़ रखा था और उसके कपड़े उतारने की कोशिश कर रहा था। विश्वविद्यालय का एक कर्मचारी जब घटनास्थल की ओर आया, तो हमलावर पीड़िता को घायल और बेसुध छोड़कर भाग गए। बाद में, उसे सहपाठियों ने ढूंढा और एक छात्रावास के कमरे में ले जाकर उसकी काउंसलिंग की गई।

विमान की अगरतला में आपात लैंडिंग

अगरतला। कोलकाता जाने वाले एक इंडिगो विमान को मंगलवार को उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद अगरतला हवाई अड्डे पर आपात स्थिति में उतारना पड़ा। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। विमान के किसी पक्षी के टकराने की आशंका थी। हवाई अड्डा निदेशक के सी मीणा ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि सभी यात्री सुरक्षित हैं और उन्हें अन्य उड़ानों से भेजा जा रहा है।

मुस्लिम लड़की को हिजाब के साथ कक्षा में बैठने की अनुमति दे ईसाई स्कूल

तिरुवनंतपुरम/कोच्चि, एजेंसी

केरल के सामान्य शिक्षा मंत्री वी. शिवनकुट्टी ने मंगलवार को कोच्चि में ईसाई संस्थान द्वारा संचालित एक निजी स्कूल को निर्देश दिया कि वह वहां पढ़ने वाली एक मुस्लिम लड़की को हिजाब पहनकर शिक्षा जारी रखने की अनुमति दे। उन्होंने स्कूल प्रशासन से भी रिपोर्ट तलब की, जिसमें पहले छात्रा को धार्मिक अधिकार देने से मना करने और उसे हुई मानसिक पीड़ा की जानकारी हो।

कोच्चि के पल्लुरुति स्थित सेंट रीटा पब्लिक स्कूल के पदाधिकारियों ने आठवीं कक्षा की छात्रा के हिजाब पहनने को लेकर उसके अभिभावकों के साथ विवाद बढ़ने के बाद सोमवार को दो दिन की छुट्टी घोषित कर दी थी। एक बयान में मंत्री ने

- केरल के शिक्षा मंत्री ने दिया आदेश, कहा- संविधान ने दिया है धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार

मंगलवार को स्कूल के प्रधानाचार्य और प्रबंधन को निर्देश दिया कि वे छात्रा और उसके माता-पिता को हो रही मानसिक परेशानी का समाधान करें, क्योंकि लड़की को संस्थान में हिजाब पहनकर कक्षाओं में आने की अनुमति नहीं दी जा रही है।

शिवनकुट्टी के कार्यालय द्वारा जारी एक बयान में कहा गया कि उन्हें बुधवार पूर्वाह्न 11 बजे तक इस संबंध में एक रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया गया है। शिवनकुट्टी ने यह निर्देश एर्णाकुलम के शिक्षा उपनिदेशक द्वारा प्रस्तुत एक रिपोर्ट के बाद जारी किया, जिन्हें इस मामले की जांच का काम सौंपा गया था। जांच रिपोर्ट में पाया गया कि स्कूल अधिकारियों की ओर से गंभीर चूक हुई है। मंत्री ने रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि छात्रा को हिजाब पहनने के आधार पर कक्षा से निकालना कर्तव्य और शिक्षा के अधिकार अधिनियम का गंभीर उल्लंघन है।

मंत्री ने कहा, रिपोर्ट के मुताबिक स्कूल की कार्रवाई भारतीय संविधान के तहत नागरिकों को दी गई मौलिक धार्मिक स्वतंत्रता के विपरीत है। शिवनकुट्टी ने जोर देकर कहा कि धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को कायम रखने वाले केरल में किसी भी छात्रा के सामने ऐसी कठिनाई पेश नहीं आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी शैक्षणिक संस्थान को संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

पूरण कुमार की मौत दलितों के सम्मान का मामला, फौरन हो कार्रवाई: राहुल

चंडीगढ़, एजेंसी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा कि हरियाणा के पुलिस अधिकारी वाई. पूरण कुमार की मौत सभी दलितों के सम्मान का मामला है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मामले में तत्काल कार्रवाई करने और घटना के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को गिरफ्तार करने की मांग की।

पिछले हफ्ते चंडीगढ़ स्थित अपने आवास पर मृत पाए गए वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के परिवार से मिलने के बाद, गांधी ने संवाददाताओं से कहा कि कुमार का मनोबल तोड़ने और उनके करियर को नुकसान पहुंचाने के लिए उनके साथ सुनियोजित भेदभाव किया जाता रहा। कांग्रेस नेता की यह टिप्पणी राज्य सरकार द्वारा सोमवार देर रात डीजीपी शत्रुजीत कपूर को छुट्टी पर भेजे जाने के कुछ घंटों बाद आई है। इससे पहले, राज्य सरकार ने रोहतक

- आईपीएस अफसर के परिवार से मिलने पहुंचे कांग्रेस नेता

के पूर्व एसपी नरेंद्र बिजारणिया का तबादला कर दिया था। कुमार ने आठ पन्नों के सुसाइड नोट में डीजीपी कपूर और रोहतक के पूर्व एसपी बिजारणिया सहित आठ वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों पर जाति-आधारित भेदभाव, लक्षित मानसिक उत्पीड़न, सार्वजनिक रूप से अपमानित और अत्याचार करने का आरोप लगाया है।

गांधी सुबह कुमार की पत्नी एवं हरियाणा की वरिष्ठ नौकरशाह अमनीत पी. कुमार, उनकी दो बेटियों और परिवार के अन्य सदस्यों से मिलने चंडीगढ़ पहुंचे तथा अंतिम संस्कार करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, लोकसभा में विपक्ष के नेता के तौर पर मेरा प्रधानमंत्री और हरियाणा के मुख्यमंत्री को संदेश है कि आपने इन दोनों बेटियों से जो वादा किया है उसे पूरा करें और उनके पिता का अंतिम संस्कार होने दें और यह 'तमाशा' बंद करें।

मल्लोजुला समेत 60 माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया

मुंबई। महाराष्ट्र में गढ़चिरौली जिले के जंगलों में शीर्ष माओवादी नेता मल्लोजुला वेणुगोपाल राव (70) ने मंगलवार को 60 अन्य माओवादियों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया।

गढ़चिरौली पुलिस ने ही मीडिया के एक वर्ग को शीर्ष भाकपा (माओवादी) पोलित ब्यूरो सदस्य सोनू उर्फ भूपति के कथित आत्मसमर्पण के बारे में एक अनौपचारिक बयान दिया है। महाराष्ट्र पुलिस या गृह मंत्रालय द्वारा इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। पुलिस के अनुसार मल्लोजुला वेणुगोपाल राव और उनके साथ गढ़चिरौली में आत्मसमर्पण करने वाले 60 माओवादी पुलिस सुरक्षा में हैं। उन्हें सुरक्षा का आश्वासन दिया गया है। सूत्रों ने बताया कि बयान जारी न करने का कारण यह हो सकता है कि वह गुरुवार को मुख्यमंत्री के सामने आधिकारिक रूप से हथियार डालकर आत्मसमर्पण करने वाले हैं।

यूपीएससी परीक्षा की अंतरिम उत्तर कुंजी प्रकाशित करने संबंधी बदलाव को मंजूरी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा के तुरंत बाद अंतरिम उत्तर कुंजी प्रकाशित करने की यूपीएससी की नीति में बदलाव को मंजूरी दे दी है। न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति अतुल एस चंदुरकर की पीठ ने लाखों उम्मीदवारों को बड़ी राहत देते हुए भविष्य की परीक्षाओं में पारदर्शिता बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया। पीठ याचिकाकर्ताओं को उच्च न्यायालयों के माध्यम से पिछली शिकायतों के समाधान की मांग करने की भी अनुमति दी।

महाराष्ट्र : खराब सड़क के कारण दुर्घटना होने पर मिलेगा मुआवजा

मुंबई हाईकोर्ट ने दिया आदेश, मृतकों के परिवारों के छह लाख, घायलों को मिलेगी 50 हजार तक धनराशि

मुंबई, एजेंसी

बॉम्बे हाईकोर्ट ने महाराष्ट्र भर में खराब रखरखाव वाली सड़कों और गड्ढों के कारण होने वाली दुर्घटनाओं के लिए मुआवजा देने का आदेश दिया है। न्यायमूर्ति रेवती मोहिते डेरे और न्यायमूर्ति संदेश पाटिल की पीठ ने मुंबई और राज्य के अन्य हिस्सों में गड्ढों से होने वाली मौतों और चोटों की बढ़ती संख्या से संबंधित एक स्वतः संज्ञान वाली जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिए।

अदालत ने निर्देश दिया कि गड्ढों से संबंधित दुर्घटनाओं में मरने वाले पीड़ितों के परिवारों को छह लाख रुपये मिलेंगे, जबकि घायलों को चोटों की गंभीरता के आधार पर 50,000 रुपये से ढाई लाख रुपये तक का मुआवज़ा मिलेगा। यह जनहित याचिका पूर्व न्यायमूर्ति जीएस पटेल की ओर से 2013 में लिखे गए एक पत्र से शुरू हुई थी, जिसमें मुंबई के सड़क बुनियादी ढांचे की चिंताजनक गिरावट के कारण लगातार हो रही जानमाल की हानि पर प्रकाश डाला गया था। पीठ ने इस बात पर गंभीर चिंता जताई कि 2015 से जारी न्यायिक निगरानी के बावजूद मानसून के मौसम में सड़कों की स्थिति हर साल बदतर होती जा रही है, जिससे गंभीर खतरे पैदा हो रहे हैं। पीठ ने कहा कि इस तरह की बार-बार होने वाली विफलताएं जिम्मेदार अधिकारियों की प्रणालीगत लापरवाही को दर्शाती हैं। न्यायालय ने मुंबई, ठाणे और भिवंडी में सड़क दुर्घटनाओं में लगातार हो रही जान-माल की हानि पर निराशा व्यक्त करते हुए ऐसी त्रासदियों को रोकने के लिए ठोस कार्रवाई करने के बजाय एक-दूसरे पर दोष मढ़ने में लगे सरकारी विभागों की आलोचना की।

- प्रभावित लोगों के अन्य कानूनी दावों से अलग होगा ये मुआवजा

सुरक्षित सड़कें सुनिश्चित करना सरकार का दायित्व

पीठ ने आदेश में कहा कि संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन के अधिकार की गारंटी देता है, इसके तहत सुरक्षित और वाहन योग्य सड़कें सुनिश्चित करना सरकार और नगर पालिका एजेंसियों का संवैधानिक दायित्व है। न्यायालय ने कहा कि गड्ढों से मुक्त और सुरक्षित सड़कें नागरिकों के मौलिक अधिकारों का अभिन्न अंग हैं और सरकार द्वारा उन्हें बनाए रखने में विफलता इन अधिकारों का उल्लंघन है। पीठ ने स्पष्ट किया कि पीड़ितों या उनके परिवारों को दिया जाने वाला मुआवज़ा उनकी ओर से किए जाने वाले अन्य कानूनी दावे से स्वतंत्र होगा। न्यायालय यह भी निर्देश दिया कि मुआवज़ा देने वाले अधिकारियों को लापरवाही के लिए जिम्मेदार ठेकेदारों या अधिकारियों से राशि वसूलने का अधिकार होगा।

अमृत विचार

बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

सपने वह नहीं होते, जो हम सोते में देखते हैं। सपने वह होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।

–एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

इस नोबेल से सबक

इस वर्ष का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार जिन प्रख्यात अर्थशास्त्रियों को दिया गया है, उनके शोध ने यह स्पष्ट किया है कि इनोवेशन अथवा नवाचार तथा क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं की जीवनरेखा हैं। ये सिद्धांत बताते हैं कि आर्थिक विकास केवल पूंजी या श्रम के विस्तार से नहीं, बल्कि नए विचारों, तकनीकी नवाचारों और उद्यमशीलता से संचालित होता है। 'क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन' की अवधारणा नई नहीं है। जोसेफ शुंपीटर इसे पहले ही स्थापित कर चुके हैं, लेकिन तीनों अर्थशास्त्रियों ने आधुनिक संदर्भ में शोध के द्वारा इस अवधारणा को वैज्ञानिक एवं तार्किक आधार दिया। किएटिव डिस्ट्रक्शन या रचनात्मक विनाश का मतलब है, विकास की प्रक्रिया में जो नई तकनीक, नए उत्पाद और नए व्यापार मॉडल रचे जाते हैं, वे पुरानी तकनीक, उत्पाद और व्यापार प्रारूप का विनाश करते है, उन्हें विस्थापित करते हैं, लेकिन साथ ही वे नई संभावनाओं का निर्माण भी करते हैं। बेशक, प्रक्रिया में पुरानी नौकरियां और उद्योग नष्ट होते हैं, लेकिन यही विनाश सृजन का मार्ग खोलता है।

आज तेजी से बदलती तकनीकी दुनिया में यह सिद्धांत बहुत प्रासंगिक है। आफिशियल इंटेलिजेंस, हरित ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी और डिजिटल वित्त इत्यादि नई तकनीक पुराने औद्योगिक ढांचे को बदल रही हैं, जिससे पारंपरिक नौकरियां जा रही हैं, पर इससे नए रोजगार, नए कौशल और नए उद्योग भी जन्मते हैं। वाकई औद्योगिक क्रांति और बाद के तकनीकी युग में ज्ञान के प्रसार और नवाचार ने उत्पादकता को कई गुना बढ़ा दिया है। साफ है कि समाज में ज्ञान संस्कृति यानी प्रयोग, अनुसंधान की प्रवृत्ति ही दीर्घकालिक विकास की कुंजी है। जब नवाचार की प्रतिस्पर्धा सतत आर्थिक विकास को गति देती है तब सरकारी नीतियां नवाचार को प्रोत्साहित करती हैं, जैसे शिक्षा, अनुसंधान निवेश, स्टार्टअप संस्कृति या खुला बाजार। इससे अर्थव्यवस्था अपने आप में ही सुधार करने लग जाती है।

भारत जैसे विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्था वाले देश के लिए इस शोध में कई नीतिगत सबक छिपे हैं। सबसे पहला, नवाचार को सिर्फ वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, इसे व्यवसाय, कृषि, शिक्षा और शासन की प्रत्येक परत में समाहित किया जाना चाहिए। दूसरा, सरकार को ऐसी नीतियां बनानी होंगी जो उद्यमिता को बढ़ावा दें- जैसे कर प्रोत्साहन, सरल नियम और असफलता को दंडित करने के बजाय सीखने का अवसर मानना। भारत में स्टार्टअप क्रांति, डिजिटल इंडिया और उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन जैसी योजनाएं इसी दिशा की शुरुआत हैं, पर इन्हें ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की ओर रूपांतरित करने की जरूरत है। तकनीकी बदलावों से विस्थापित श्रमिकों के पुनः कौशल-प्रशिक्षण की नीति भी उतनी ही आवश्यक है, ताकि 'विनाश' का पक्ष 'सृजन' में सहज रूप से बदल सके। असल में विकास का अर्थ केवल बढ़ते आंकड़ों में नहीं, बल्कि नए विचारों की गति और उसे अपनाने में छिपा है। भारत को यदि तीसरी वैश्विक अर्थव्यवस्था बनना है, तो उसे नवाचार को नीति और संस्कृति, दोनों का मजबूत केंद्र बनाना होगा। देश के लिए 'क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन' यही सबक समीचीन होगा।

प्रसंगवश

कलाम ने कहा, चेक भुनाएं वरना वापस लें सामान

आज 15 अक्टूबर को पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे कलाम की जयंती है। वह ऐसे व्यक्ति थे, जो जहां भी रहे, वहां अपनी अमिट छाप छोड़ी। पहले उनसे जुड़े एक किस्से की बात करते हैं- एक बार डॉ. कलाम तमिलनाडु के एक कार्यक्रम में पहुंचे। वह एक कंपनी का प्रोग्राम था। कंपनी ग्राइंडर मशीन बनाया करती थी। उन्होंने औपचारिकतावश अपने सामान का डेमो कलाम साहब को दिखाया। डॉ. कलाम को एक ग्राइंडर पसंद आ गया। उन्होंने उसे खरीदने की इच्छा जाहिर की। कंपनी ने तुरंत ही एक शानदार ग्राइंडर पैक करा कर उन्हें गिफ्ट दे दिया। उन्होंने कहा कि वह इसे मुफ्त में नहीं लेना चाहते, बल्कि इसे खरीदना चाहते हैं। कलाम साहब गिफ्ट में ग्राइंडर लेने के लिए किसी भी हाल में राजी नहीं हुए। डॉ. कलाम ने कंपनी को ग्राइंडर की कीमत 4850 रुपये का चेक दे दिया।

डॉ. नंद किशोर साह

लखनऊ

कंपनी ने इसे अपना सौभाग्य मानते हुए उस चेक को शानदार फ्रेम में करा कर अपने ऑफिस में लगवा लिया। उन्होंने सोचा होगा कि ऐसा शायद ही कोई होगा, जिसके पास कलाम साहब का चेक होगा। यह उनके लिए एक कीमती तोहफा था। दो महीने गुजरने के बाद भी जब चेक जमा नहीं हुआ तो एक दिन कलाम साहब के ऑफिस से कंपनी के पास फोन आया और इन्क्वायरी की गई कि अब तक चेक क्यों जमा नहीं किया गया है। कंपनी ने सच-सच सारी बात बता दी। कलाम साहब की तरफ से कंपनी से कहा गया कि या तो वह चेक को कैश कराएं या फिर अपना ग्राइंडर वापस मंगा लें।

अबुल पकीर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम, जिन्हें डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के नाम से जाना जाता है, भारत के एक महान वैज्ञानिक, राजनेता और देश के पूर्व राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था। उनके पिता जैनुलआब्दीन एक साधारण स्कूल शिक्षक थे और उनकी माता आशियम्मा एक गृहिणी थीं। कलाम के परिवार ने उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत की। कलाम ने अपनी स्कूली शिक्षा रामेश्वरम से पूरी की और बाद में तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में पढ़ाई की। डॉ. कलाम का सपना भारतीय वायु सेना में लड़ाकू पायलट बनने का था, लेकिन दुर्भाग्यवश यह सपना पूरा नहीं हो सका। उन्होंने प्रवेश परीक्षा में नौवां स्थान प्राप्त किया था, जबकि भारतीय वायु सेना ने केवल शीर्ष 8 उम्मीदवारों का चयन किया था। कलाम ने हार नहीं मानी और अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की।

डॉ. कलाम ने करियर की शुरुआत भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में एक वैज्ञानिक के रूप में की। उन्होंने भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में, उन्होंने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में काम किया और भारत के मिसाइल कार्यक्रम के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. कलाम को भारत के मिसाइल मैन के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में भारत ने 1998 में पोखरण में परमाणु परीक्षण किया। 2002 में, कलाम साहब को भारत के राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। उन्होंने छात्रों और युवाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. कलाम एक अच्छे लेखक और वक्ता थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'विंग्स ऑफ फायर' और 'इग्नाइटेड माइंड्स' प्रमुख हैं।

भू-राजनीतिः बदल रहे हैं दोस्त और दुश्मन के रिश्ते

दिग्विजय सिंह

कानपुर

ज्योपॉलिटिक्स तेजी से बदल रही है। दोस्त और दुश्मन के रिश्ते भी बदल रहे हैं। पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सेनाएं आमने-सामने हैं तो बगराम एयरबेस के मुद्दे पर भारत-पाक साथ हैं।

तहरीके तालिबान पाकिस्तान के बहाने पाकिस्तान ने अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में एयर स्ट्राइक कर युद्ध का एक नया मोर्चा खोल लिया। पाकिस्तानी एयर स्ट्राइक के जवाब में अफगानी सैनिकों द्वारा किए गए हमले में पाकिस्तान के चार दर्जन से अधिक सैनिकों की मौत हुई और सात सैनिक बंधक बना लिए गए। अफगानी सैनिकों ने कई पाकिस्तानी सुरक्षा चौकियों पर कब्जा कर लिया। कतर के दबाव में फिलहाल दोनों तरफ से बंदूकें तो थम गई हैं, लेकिन जो हालात हैं, उससे नहीं लगता कि यह शांति स्थायी है। कभी भी किसी भी समय दोनों तरफ से हमले हो सकते हैं। इस संघर्ष के बाद हर किसी की निगाह सऊदी अरब पर है, क्योंकि हाल ही में पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच सुरक्षा समझौता हुआ है, जिसके तहत एक देश पर हमला दोनों देशों पर माना जाएगा। ऐसे में अब सवाल यह है कि क्या पाकिस्तान की सुरक्षा के लिए सऊदी अरब तालिबान से मोर्चा लेगा। वैसे सऊदी की तरफ से अभी कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

बगराम एयरबेस के बहाने अफगानिस्तान में फिर से जड़ें जमाने की कोशिश में जुटे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को पाकिस्तान ने हाल ही में बड़ा झटका दिया था। भारत, रूस, चीन तो पहले से ही नहीं चाहते कि अमेरिका पुनः अफगानिस्तान में अपने कदम रखे, लेकिन पाकिस्तान ने भी इन देशों के सुर में सुर मिलाकर अमेरिका को सकते में डाल दिया था। अब अफगानिस्तान से पाकिस्तान की ठन गई है, तो अमेरिका ने भी चुप्पी साध ली है। बगराम के मुद्दे पर अमेरिका के विरोध में पाकिस्तान के कदम को रूस से रिश्ते को प्रगाढ़ करने और चीन को खुश करने के लिए लिए उठाया गया कदम माना जा रहा है। अमेरिका के साथ उसकी बढ़ती दोस्ती से चीन खफा है।

मंगलवार को अफगानिस्तान पर मॉस्को फॉर्मेट के बाद जारी बयान में अमेरिका का नाम लिए बिना ही भारत समेत 10 प्रभावशाली देशों ने अफगानिस्तान और अन्य पड़ोसी देशों में किसी दूसरे देश के सैन्य ढांचे को अस्वीकार कर दिया। इस फार्मेट पर भारत के साथ ही पाकिस्तान ने भी हमला किया है। पाकिस्तान के इस कदम से अमेरिका को बड़ा झटका लगा है। अगर बगराम एयरबेस पर अमेरिका कदम रखता है, तो इसका सबसे ज्यादा नुकसान रूस, चीन और ईरान को होगा। वह यहां से जहां चीन के परमाणु ठिकानों पर निगाह रख सकेगा, वहीं आसानी से ईरान पर हमला भी कर सकेगा।

अफगानिस्तान के बगराम एयरबेस पर दो दशक से अधिक समय तक अमेरिका का नियंत्रण रहा है। अगस्त 2021 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की मंजूरी के बाद अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी हुई थी। इस दौरान अमेरिका ने इस एयरबेस को लावारिस छोड़ दिया था। खरबों रुपये के अत्याधुनिक हथियार, लड़ाकू विमान, तोप आदि अमेरिकी सैनिक यहीं छोड़ गए थे। अब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चाहते हैं कि यह एयरबेस अमेरिका के नियंत्रण में आ जाए। इसके लिए वे लगातार अलग-अलग मंचों पर अपनी इच्छा जाहिर कर चुके हैं, हालांकि अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज तालिबान ने इसका विरोध किया है।

बगराम से महज दो हजार किलोमीटर दूरी पर संवेदनशील चीनी परमाणु केंद्र है। यह केंद्र लोप नूर के पास है। कोको नूर परमाणु केंद्र भी इसके काफी नजदीक है। अमेरिका इन केंद्रों पर बारीकी से नजर रखना चाहता है। चीन और तालिबान की नजदीकी किसी से छिपी नहीं है। अफगानिस्तान में लिथियम, तांबा, लोहा, सोना और यूरेनियम जैसे खनिज प्रचुर मात्रा में हैं। चीन प्रशासन तालिबान के साथ मिलकर इसका दोहन करना चाहता है, इसीलिए चीन ने काबुल के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास शुरू किया है। अमेरिका यहां से रूस के मध्य एशियाई इलाकों तक सैन्य नजर रख सकता है। उत्तर में ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान, पश्चिम में ईरान, दक्षिण में पाकिस्तान और पूर्व में चीन है। पर वह बगराम से आसानी से निगरानी कर सकता है। रूस से भी अमेरिका का तनाव चल रहा है। राजधानी मास्को में मंगलवार को हुए कार्यक्रम में 10 देशों ने अमेरिका के इस कदम का विरोध किया है।

खास बात यह रही कि ऑपरेशन सिंदूर में करारी हार के बाद बार-बार हमले की गीदड़ भभकी देने वाला पाकिस्तान, भारत के साथ इस मुद्दे पर खड़ा नजर आया। पाकिस्तान लगातार अमेरिका से व्यापारिक और रक्षा सौदे करने में जुटा है। इससे चीन नाराज है। मॉस्को में आयोजित सातवें 'मॉस्को फॉर्मेट' सम्मेलन में भारत ने बगराम एयरबेस का नाम नहीं लिया पर कहा कि अफगानिस्तान की संप्रभुता और स्थिरता सबसे पहले है। खास बात यह रही कि इस बैठक में तालिबान की तरफ से विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी भी शामिल हुए। भारत का अफगानिस्तान के समर्थन में खड़ा होना दोनों देशों के रिश्तों के लिए शुभ संकेत है। आमिर खान मुत्ताकी ने भारत के विरुद्ध किसी भी देश को अफगानिस्तान की धरती का उपयोग न होने का भरोसा दिया है, तो भारत ने भी अपने राजनयिक संबंध को पूर्ण रूप से बहाल करते हुए काबुल में दूतावास खोलने की घोषणा कर दी है।

उधर, अगर अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच यह संघर्ष युद्ध में बदलता है, तो चीन के रुख पर भी हर किसी की निगाह होगी। चीन ने दोनों देशों में भारी भरकम निवेश कर रखा है। सऊदी अरब का क्या रुख होगा यह भी खाड़ी देश जानना चाहते हैं। वैसे सऊदी अरब कभी नहीं चाहेगा कि उसके तालिबान से रिश्ते खराब हों, पर सवाल यह है कि अगर वह पाकिस्तान के समर्थन में नहीं आता है, तो फिर समझौते का क्या होगा जो हाल ही में दोनों देशों ने किया है।

आमने

दुर्गापुर मेडिकल छात्रा से दुष्कर्म मामला चौंकाने वाला है। हमारी सरकार ऐसी घटनाओं को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करती। वारदात में शामिल तीन आरोपी गिरफ्तार कर लिए गए हैं। निजी कॉलेजों को परिसर के भीतर और आसपास सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

–ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री पश्चिम बंगाल

सामने

ममता बनर्जी एक बार फिर झूठा बयान जारी कर रही हैं, क्योंकि घटना परिसर के अंदर नहीं, कॉलेज के बाहर हुई है। यह प्रशासन की पूर्ण विफलता है। इस सरकार में जांच में दक्षता की कमी है, जो इन बलात्कारियों को प्रोत्साहित कर रही है।

–सुकांत मजूमदार केंद्रीय मंत्री

निकोबार द्वीप परियोजना और उठते सवाल

प्रमोद भार्गव

वरिष्ठ पत्रकार

'महान निकोबार द्वीप परियोजना' के तहत 75 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने जनजातियों के अस्तित्व को लेकर कुछ सवाल उठाए हैं।

'महान निकोबार द्वीप परियोजना' पर कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने नाराजगी जताते हुए अंग्रेजी अखबार में लेख लिखा है। उसमें उन्होंने कहा है कि शोंपेन और निकोबारी जनजातियों का अस्तित्व इस परियोजना के चलते दांव पर है। भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एक विषिश्ट पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश की अनुमति नहीं दे सकती। हमें न्याय के इस उपहास और राष्ट्रीय मूल्यों के साथ इस विश्वासघात के विरुद्ध अपनी आवाज उठानी चाहिए। इसके पहले राहुल गांधी ने भी जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल ओराम को लिखे पत्र में इस परियोजना पर आपत्ति जताई थी।

दूरांचल में समुद्र तटीय क्षेत्रों में भारत विकास की दृष्टि से पीछे रहा है। उन तटीय क्षेत्रों पर भी हमने ध्यान नहीं दिया, जो आर्थिक और चीन जैसे धोखेबाज देश से चुनौती के लिए सामरिक दृष्टि से अहम हो सकते हैं। निकोबार अर्थात अंडमान-निकोबार द्वीप समूह इस नाते अछूता है। इस क्षेत्र को प्रसिद्ध सेल्यूलर जेल की वजह से जानते हैं, जो अब राष्ट्रीय स्मारक है। दूसरे, उन जनजातियों के लिए जानते हैं, जो आज भी भारत की मुख्यधारा का हिस्सा नहीं बन पाई हैं। नतीजतन अपनी परंपरागत प्राकृतिक अवस्था में रहकर प्रकृति के सानिध्य में ही गुजर-बसर कर रही हैं। अब इस क्षेत्र की तस्वीर बदलने जा रही है। सिंगापुर की तर्ज पर निकोबार के तट का विकास, केंद्र सरकार बड़ी मात्रा में निवेश करके 'महान निकोबार द्वीप परियोजना' (जीएनआई) के अंतर्गत कर रही है। 75 हजार करोड़ की इस बृहद परियोजना के तहत कई परियोजनाओं को अंजाम तक पहुंचाने की तैयारी है, हालांकि परियोजना के अमल से बड़े स्तर पर पर्यावरण को नुकसान भी होगा।

निकोबार द्वीप समूह 10 हजार 44 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है। बंगाल की खाड़ी में पोत परिवहन को नया आयाम देते हुए 10 हजार करोड़ रुपये की लागत से एक पोतांतरण बंदरगाह (ट्रांसशिपमेंट पोर्ट) का निर्माण करने की योजना प्रस्तावित है। यह बंदरगाह विकास से जुड़ी गतिविधियों के बड़े केंद्र के रूप में विकसित होगा। इस बंदरगाह को समुद्री जल मार्ग की प्रमुख गतिविधियों के केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। वैसे भी यह क्षेत्र दुनिया के कई पोतांतरण बंदरगाहों की तुलना में काफी प्रतिस्पर्धा दूरी पर स्थित है। बदलती जरूरतों के परिप्रेक्ष्य में पूरी दुनिया यह मानकर चल रही है कि जिस देश में हवाई अड्डों और बंदरगाहों का नेटवर्क और कनेक्टिविटी जितनी बेहतर होगी, 21वी सदी के व्यापार में वही देश अग्रणी रहेंगे। ऐसे में इस दूरांचल में ढांचागत सुविधाएं बढ़ेंगी तो अंचल का विकास तो होगा ही, अन्य भारतीयों से समरसता भी बढ़ेगी। बड़ी नदियों से मछली पकड़कर गुजारा करने वाले भी करीब तीन करोड़ मछुआरे हैं। अंडमान-निकोबार क्षेत्र में तटवर्ती मछुआरों को इस क्षेत्र के विकास का सीधा लाभ मिलेगा। मछली और सीवीड का कारोबार बढ़ेगा, जिससे इस समुदाय की समृद्धि बढ़ेगी।

महान अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का निकोबार क्षेत्र आरक्षित जैवमंडल (बायोस्फीयर) क्षेत्र में आता है। इसे 2013 में विशेष जैवमंडल का दर्जा दिया गया था। भारत में कुल 18 जैवमंडल क्षेत्र हैं, उनमें से एक निकोबार जनजातीय (आदिवासी) आरक्षित वन-भूमि की श्रेणी में है। इस समुद्री क्षेत्र में विशेष प्रजाति के लैदरबैक कछुए, खारे पानी में रहने वाले मगरमच्छ, निकोबारी केकड़े खाने वाले मकाक और प्रवासी पक्षी शामिल हैं, जिनका इस बहुआयामी विकास परियोजना से प्रभावित होना तय है। निर्माणाधीन पोतांतरण टर्मिनल, ऊर्जा संयंत्र, हवाई अड्डा और आवासीय भवन भी बनाए जा रहे हैं। उत्तरी और मध्य अंडमान के बीच सड़क सुविधा को बेहतर बनाने के लिए दो बड़े पुल निर्माणाधीन हैं और यहां के राष्ट्रीय राजमार्ग का चौड़ीकरण किया जा रहा है। इस सभी परियोजनाओं के लिए जो भूमियां अधिसूचित की गई हैं, उन पर खड़े 8,52,000 पेड़ों को भी काटा जाना है।

इस कारण पर्यावरणविद् यह आशंका जता रहे हैं कि इससे यहां के प्राचीन वर्षा वनों को भारी क्षति होगी। इन्हें हानि होगी तो कई दुर्लभ प्राणी व वनस्पतियों की प्रजातियां और इस भू-भाग का मानसून भी प्रभावित होगा। यही नहीं निकोबार द्वीप समूह में गिनती के रह गए जो जनजातीय समूह आदिम अवस्था में रहते हैं, उनका नैसर्गिक जीवन भी प्रभावित होने की आशंका जताई जा रही है। इनमें शोंपेन और निकोबारी वनवासी जनजातियां शामिल हैं। इनकी संख्या करीब 1761 है।

निकोबार में एक विशेष प्रजाति का नहीं उड़ सकने वाला पक्षी मेगापॉड का भी घर है। इनके कुल 51 घोंसले हैं, जिनमें से 30 पूरी तरह नष्ट कर दिए जाएंगे। दरअसल, यह विकास गलाथि खाड़ी और कैंपबेल खाड़ी राष्ट्रीय उद्यानों की दस किमी परिधि में होना है, जो पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र माना जाता है, हालांकि भारतीय प्राणी सर्वेक्षण और अंडमान-निकोबार प्रशासन के वन एवं पर्यावरण विभाग ने दावा किया है कि परियोजना से वन और प्राणियों को नुकसान नहीं होने दिया जाएगा। मैंग्रोव वृक्षों के संरक्षण और दस हेक्टेयर में फैली मूंगा चट्टानों की 20,668 बस्तियों में से 16,150 बस्तियों की सुरक्षा मूल स्थान से खिसकाकर की जा रही है।

सोशल फोरम

चिड़ियों का प्रोटेस्ट

देश के एक विख्यात और वरिष्ठ पत्रकार सईद नकवी का मानना है की गाजा और इजरायल शांति समझौते की सबसे बड़ी वजह यूरोप और पूरे विश्व में (भारत को छोड़ कर) युद्ध को रोकने और शांति को स्थापित करने के लिए चले विशाल जन आंदोलन हैं। करोड़ों लोग प्रदर्शन करते सड़कों पर उतर आए थे और सरकारों को अपना अस्तित्व खतरे में नजर आ रहा था।

असगर वजाहत

चर्चित साहित्यकार

लोकतंत्र में जनमत से बड़ी कोई शक्ति नहीं है, और जनमत बनाने तथा लोगों तक जानकारी पहुंचाने का सबसे बड़ा माध्यम मीडिया/सोशल मीडिया है, लेकिन दुख की बात है कि हमारे कुछ बुद्धिजीवी सोशल मीडिया को महत्व नहीं देते।

बोलने का असर सिर्फ इंसानी समाज पर ही नहीं बल्कि जानवरों और चिड़ियों पर भी पड़ता है।

एक सच्ची घटना बताता हूं, जिस पर मैंने एक छोटी कहानी भी लिखी है।

दूसरी मंजिल पर मेरा फ्लैट था। वहां से एक पेड़ पर लगा चिड़िया का घोंसला दिखाई देता था। चिड़िया ने अंडे दिए थे।

एक दिन मैंने देखा कि एक बिल्ली पेड़ पर चढ़ रही है। निश्चित रूप से उसका इरादा चिड़िया के अंडे खाना था।

चिड़िया ने यह देख लिया और वह बिल्ली के ऊपर उड़ कर ची-ची करने लगी।

थोड़ी देर में दो-चार चिड़िया वहां और आ गईं और वह भी बिल्ली के सिर पर मंडरा कर ची-ची करने लगीं। बिल्ली उनकी परवाह के बिना पेड़ पर चढ़ती रही, लेकिन धीरे-धीरे चिड़ियों की तादाद और आवाज इतनी तेज हो गई कि बिल्ली रुक गई और नीचे उतरने लगी।

बोलिए, लिखिए और बताइए, नहीं तो आप गूंगे, बहरे और अंधे हो जाएंगे।

-फेसबुक वाल से

सामयिकी

'सोने के पिंजरे में कैद' राज्यपाल की पीड़ा

पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कल जयपुर में एक पुस्तक विमोचन समारोह के दौरान जो कहा, वह केवल एक बुजुर्ग नेता का आत्म संवाद मात्र नहीं है, बल्कि इससे एक राज्यपाल के रूप में तमाम तामझाम के बीच रहकर भी अकेलापन महसूस कर रहे नेता का दर्द झलकता है। उन्होंने कहा कि हमारी पहचान पद से नहीं, जनता के बीच रहने वाले कार्यकर्ता के रूप में होनी चाहिए। पद आज है, कल चला जाएगा, लेकिन कार्यकर्ता की पहचान कोई नहीं मिटा सकता। मैं महामहिम बन गया तो क्या जनता से दूर हो जाऊं। कार्यकाल खत्म होते ही मैं फिर से कार्यकर्ता हो जाऊंगा। सबको लगता है कि राज्यपाल बनकर मेरे मजे हैं, लेकिन मुझे तो सोने के पिंजरे में कैद कर दिया गया है।

अमरपाल सिंह वर्मा

स्वतंत्र पत्रकार

राज्यपाल कटारिया का यह कथन केवल किसी व्यक्ति की निजी व्यथा नहीं है, बल्कि यह उस पूरे दौर की आत्म स्वीकृति है, जिसने राजनीति को सेवा से सत्ता में और जन संवाद को जन प्रबंधन में बदलते हुए देखा है। इस वक्तव्य में उस व्यक्ति का दर्द है, जिसने एक शिक्षक के रूप में, स्वयंसेवक के रूप में, कार्यकर्ता, विधायक और मंत्री के रूप में, यानी जिंदगी के हर पड़ाव पर जनता से सीधा रिश्ता बनाया। उन्होंने वह दौर देखा है, जब राजनीति में प्रवेश का अर्थ पद प्राप्ति की लालसा न होकर जनसेवा का संकल्प होता था, जब नेताओं के दरवाजे बिना किसी अपॉइंटमेंट के खुले रहते थे।

जयपुर में कटारिया जब कह रहे थे कि पद आज है, कल चला जाएगा, तो वे हमें उस मूलभूत सच्चाई की याद दिला रहे थे कि सत्ता अस्थायी होती है, पर सेवा स्थायी, लेकिन दुर्भाग्य यह है कि मौजूदा राजनीति इस सत्य को भुला बैठी है। अब पद ही पहचान बन गया है और जनता से रिश्ता केवल औपचारिकता का प्रतीक बनकर रह गया है। नेताओं और जनता के बीच संवाद का जो पुल कभी लोकतंत्र की जान हुआ करता था, वह अब सुरक्षा घेरे, नौकरशाही की परतों और ट्रांसफर-पोस्टिंग की फाइलों में टूट चुका है। राजनीति की भाषा में 'सेवा' का स्थान 'प्रबंधन' ने ले लिया है।

कटारिया ने भाषण के दौरान पूछा, "मैं महामहिम बन गया तो क्या जनता से दूर हो जाऊं? उनका यह सवाल केवल एक वाक्य नहीं बल्कि उस असहजता का प्रतीक है, जो हर सच्चे कार्यकर्ता के भीतर तब जन्म लेती है, जब उसे सत्ता के ऊंचे पदों पर आसीन कर दिया जाता है। पद की गरिमा और मर्यादा जरूरी है, लेकिन जब यह आम आदमी से संवाद में बाधक बन जाती है, तो लोकतंत्र की आत्मा घुटने लगती है।"

कटारिया जिस सोने के पिंजरे की बात करते हैं, वह 'सोने का पिंजरा' वास्तव में उस स्थिति का परिचायक है, जिसमें बाहरी वैभव है, लेकिन भीतर सन्नाटा पसरा है। उसमें चमक है, लेकिन प्राणवायु नहीं। मर्यादा है, पर जीवंतता का नितांत अभाव है। कटारिया की यह पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं है। यह नेताओं की उस पीढ़ी की पीड़ा है, जिसने राजनीति को हमेशा सेवा समझा, धंधा नहीं बनाया। यह पीढ़ी मानती थी कि नेता जनता से ताकत लेता है, लेकिन जनता पर शक्ति नहीं दिखाता। नेताओं की यह पीढ़ी दरी बिछाने में शर्म नहीं करती थी, लेकिन लोकतंत्र की आत्मा को जीवित रखती थी। पर अब दौर बदल चुका है। किसी भी दल को देख लीजिए, आज उसका कार्यकर्ता व्यवस्था के किनारों पर खड़ा उपेक्षित महसूस कर रहा है, इसीलिए दलगत राजनीति भी अब जनता के बीच से नहीं, सत्ता के गलियारों से संचालित होती दिखाई देती है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

कला और सौंदर्य की मिसाल है ओरछा का किला

हर किले का अपना अलग रूप और सौंदर्य होता है। यह अपने अंदर सिर्फ इतिहास ही नहीं समेटे रहते हैं, बल्कि इसमें कला के भी दीदार होते हैं। इन कलाकृतियों का सौंदर्य ही अनोखा नहीं है, बल्कि इसका भी अपना इतिहास और परंपरा है। ओरछा का किला भी कुछ ऐसा ही है। अपने अंदर बहुत नायाब सौंदर्य समेटे हुए। मध्य प्रदेश के ओरछा को भगवान राम की नगरी कहा जाता है। यहां के राजा राम हैं। इसलिए राम राजा मंदिर में प्रभु को सुबह शाम गार्ड ऑफ ऑनर देने की परंपरा है। ओरछा का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रही है। आज भी यहां के किले को देखने और राजा राम के दर्शन को भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया से पर्यटक आते हैं। यहां के किले आज भी अपने गौरवशाली इतिहास की कहानी कहते हैं।

उमंग अग्रवाल
कानपुर

16 वीं शताब्दी में बसा ओरछा शहर

ओरछा शहर की स्थापना 16वीं शताब्दी में हुई थी। बुंदेला महाराजा रुद्र प्रताप सिंह ने इस शहर की नींव 1501 में रखी थी। महाराजा रुद्र प्रताप सिंह ने महल का निर्माण शुरू कराया था, लेकिन यह उनके जीवन काल में पूरी तरह बनकर तैयार नहीं हो पाया। उनके बेटे भारतीचंद ने राजा महल का निर्माण पूरा कराने की कोशिश की पर वे भी इसमें सफल नहीं हुए। बाद में उनके बेटे मधुकर शाह ने महल को पूर्ण निर्माण 1531 में करवाया। महल के अंदर बुंदेली चित्रकारी के अद्भुत और नायाब नमूने देखने को मिलते हैं। कमरों में रामायण से संबंधित चित्र हर किसी को आकर्षित करते हैं।

नृत्यांगना के नाम पर भी एक महल

महाराज रुद्रप्रताप सिंह के वंशज राजा इंद्रसेन ने उस समय की मशहूर नृत्यांगना राय प्रवीण के सम्मान में एक महल की स्थापना कराई थी। इस महल को राय प्रवीण महल के नाम से लोग जानते हैं। यहां उकेरी गईं नृत्य की मुद्राएं यह दर्शाती हैं कि राजा नृत्य और संगीत को कितना बढ़ावा देते थे। बताते हैं कि शहंशाह अकबर को जब पता चला, तो उन्होंने राय प्रवीण और उनके गुरु केशवदास को दिल्ली स्थित महल बुलाया। जब राय प्रवीण ने देखा कि शहंशाह अकबर को उनके प्रति आसक्ति हो रही है, तो उन्होंने सांकेतिक रूप से गीत के जरिए उन्हें बताया कि मैं किसी और की प्रिय हूं। इसलिए उनका उपयोग करना आपकी गरिमा के अनुकूल नहीं होगा। इसके बाद शहंशाह अकबर ने राय प्रवीण को पूरे सम्मान के साथ ओरछा भेज दिया था।

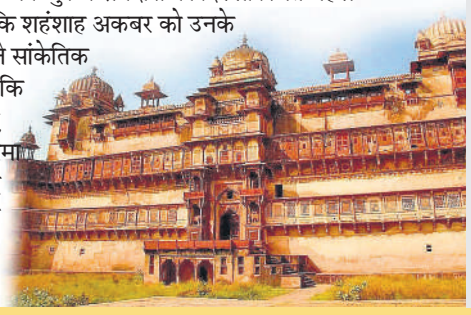

यहां जहांगीर भी एक रात ठहरे

ओरछा के किले पर मुगलों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। 1605 से लेकर 1627 तक बीरसिंह देव यहां के राजा थे। राजा बीर सिंह देव और मुगल बादशाह जहांगीर के बीच गहरी दोस्ती थी। महाराज ने अपने दोस्त जहांगीर के लिए महल की स्थापना कराई थी। इस महल में जहांगीर भी रुके। इसकी कलाकारी और भव्यता देखते ही बनती है। बीर सिंह के बेटे जुझार सिंह और जहांगीर के बेटे शाहजहां के बीच जब मनमुटाव हुआ तो शाहजहां ने जुझार सिंह से दिखावटी रिश्ता बनाया। जुझार सिंह और उनके छोटे भाई हरदौल सिंह के बीच दरार डाल दी। जुझार सिंह ने शाहजहां के कहने पर ही अपनी पत्नी से हरदौल की हत्या करा दी थी। रानी ने खीर में जहर डालकर हरदौल को खिला दिया था। कहा जाता है कि हरदौल अपनी भाभी से बहुत प्रेम करता था, लेकिन पति के कहने पर महारानी ने अपने देवर को मौत की नींद सुला दिया।

राजा बीर सिंह ने दतिया में बनवाया महल

दतिया जिले में स्थित सतखंडा महल पहाड़ पर स्थित है। यह महल राजपूत वास्तुकला और मुगल वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है। ओरछा के राजा बीर सिंह देव द्वारा स्थापति किए गए 52 महलों में से एक है। सतखंडा महल अपनी अद्भुत कला के लिए प्रसिद्ध है। इस महल में 440 कमरे हैं। 1620 में ओरछा के राजा बीर सिंह ने इस महल की स्थापना की थी। इस सात मंजिला महल के निर्माण में न तो लकड़ी और न ही लोहे का इस्तेमाल किया गया है। यह सिर्फ पत्थर और ईटों से बनाया गया है। मजबूती का प्रमाण यही है कि यह 1620 से आज तक खड़ा है और पर्यटकों को लुभा रहा है। इस सात मंजिला खूबसूरत इमारत को केवल एक रात में रुकने के लिए ही इस्तेमाल किया जाता है। राजा बीर सिंहदेव को दतिया जिला उपहार में मिला था।

कहानियों के देश में रंगकर्म

हम कहानियों का देश हैं। हम हमेशा से कहानियां सुनते-सुनाते आए हैं। दादी-नानी की कहानियां, या फिर गांव की चौपाल पर बैठकर बड़े-बूढ़ों की कहानियां। कोई तमाशा आया तो हमने उसमें भी कहानी सुनी। हर बरस होने वाली रामलीलाओं में हमने राम-रावण की कहानी सुनी।

हमारे देश में बरसों से कहानियां कही और सुनी जा रही हैं। गली-मोहल्लों, चौबारों और चौपालों से होती हुई ये कहानियां मंच तक आईं। संगीत, प्रकाश, वस्त्र-परिधान, उच्च अभिनय और उत्कृष्ट निर्देशनों से जब ये कहानियां सजाई गईं तो जैसे जादू हो गया। लोगों के दिल-दिमाग पर जैसे कोई नशा तारी हो गया। कोई चमत्कार जैसे किसी को बांध लेता है, उसी तरह रंगमंच ने अपने दर्शकों, अपने चाहने वालों को बांध लिया। एक लंबी परंपरा चल पड़ी।

लव तोमर
रंगकर्मी

एक दौर में, जब सिनेमा उतना हावी नहीं था, लोगों के पास मनोरंजन के साधन के रूप में केवल रंगमंच या मंच पर प्रदर्शित होने वाली कलाएं ही थीं। तब हम वे कहानियां कह रहे थे जो लोगों की कहानियां थीं। लोग उनसे जुड़ते थे। वे अपने आपको उन नाट्य-प्रदर्शनों में खोजते थे और खोज लेने पर उनसे जुड़कर हंसते थे, रोते थे, साथ में गाते थे।

समय बदला। दर्शक और निर्देशक, एक ही तरह के काम बनाकर और देखकर ऊबने लगे। तब जरूरत महसूस हुई नए प्रयोगों की, जो समय की मांग को देखते हुए बड़े अभिनेताओं और निर्देशकों द्वारा किए भी गए। कुछ सफल हुए, कुछ असफल भी। एक संतुलन चाहिए था, जिसमें नई कहानियों या फिर पुराने नाटकों पर नए प्रयोग किए जाते, लेकिन प्रयोगों की अंधाधुंध दौड़ ने संतुलन बिगाड़ दिया। कहानियां नाटकों से इस तरह गायब हो गईं जैसे कभी थीं ही नहीं। बचे रह गए केवल खोखले प्रयोग, अवसादों से भरे अभिनय, शून्य में देर तक बिना भाव या बेहोशी से ताकते हुए अभिनेता, ऊल-जलूल आवाजें, चीख-चिल्लाहट।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि निर्देशकों की 'कुछ नया करने', 'कुछ अलग करने' की हवस ने कहानियों को कहीं बहुत पीछे छोड़ दिया है। प्रयोग, जो रंगमंच के लिए वरदान की तरह प्रकट हुए थे, धीरे-धीरे कब श्राप में बदल गए, यह न तो दर्शक भांप पा रहे हैं, न निर्देशक, लेकिन इनका असर दिख रहा है-नाटकों के प्रदर्शनों में दर्शकों की लगातार गिरती संख्या इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। ऑडिटोरियमों (नाट्यगृहों) में अब आपको दर्शक के रूप में ज्यादातर या तो आलोचक दिखाई देंगे, या फिर रंगकर्मी और कुछ दर्शक। इन 'महान प्रयोगों' वाले नाटकों में यदि आपको कुछ समझ न आए, तो गलती नाटक की नहीं, आपकी है। जैसा कि हरिशंकर परसाई जी ने कहा है- "जो समझ न आए, वो और पवित्र होता है।"

अब अपने मन के अवसादों और असुरक्षाओं को निर्देशकों और अभिनेताओं ने मिलकर मंच पर परोसना शुरू कर दिया है। इस सबमें से लेखक और उसकी लिखी गई कहानी को नाटक के लिए अब न तो ज़रूरी समझा जाता है, न ही कोई उसकी बात करता है। हिंदी रंगमंच में उच्च-स्तरीय नाटकों की कमी का मुख्य कारण लेखकों की लगातार होती उपेक्षा भी है।

आधुनिक समय में, जब स्क्रीन मनोरंजन इतना अधिक बढ़ गया है, तब यह कहा जा सकता है कि रंगमंच और लाइव आर्ट्स का भविष्य उज्ज्वल है, ख़ासकर नाटकों का, क्योंकि एक समय के बाद लोगों को स्क्रीन से ऊब होगी, रोज बनते सिनेमा से ऊब होगी, रील्स और यूट्यूब वीडियो से ऊब होगी। तब मानव-मन लौटेगा वापस उस खोज में, जहां वह खोजेगा इंसान का इंसान से सीधा कलात्मक संपर्क।

तब हमें कहानियों की ज़रूरत होगी। हमें जरूरत होगी प्रयोगों के साथ फिर से कहानियां कहने की। हमें समझना होगा कि दर्शक अपने अभिनेता के साथ रोना, हंसना, प्रेम करना, किसी सुंदर कहानी का किरदार बनकर खुद को भूल जाना चाहता है। नाटक देखते हुए वह डेढ़ से दो घंटे अपनी दुनिया से परे कहीं चले जाना चाहता है। वह तैयार है आपके साथ यात्रा करने को, लेकिन क्या हम तैयार हैं? यदि उत्तर 'न' में है, तो हमें तैयारियां करनी होंगी, इससे पहले कि देर हो जाए।

रंगकर्म को लेकर देश, शहर, राज्य में यदा-कदा कुछ-न-कुछ कार्यक्रम होते रहते हैं, जिनका उद्देश्य या तो दिखावा होता है, जिससे सरकारी मदद लेकर रंगकर्म के नाम पर किया जाए, या फिर आत्म केंद्रित होकर खुद ही खुद को प्रसन्न करने का आडंबर।

समय आ गया है कि हम इस जड़ता को तोड़ें। रंगकर्म को नई ऊर्जा देने के लिए ज़्यादा से ज्यादा युवाओं को इसमें शामिल किया जाए। उन्हें बागडोर दी जाए, मौका दिया जाए, स्थान और सम्मान दिया जाए। नई पीढ़ी न केवल नई दृष्टि लेकर आती है, बल्कि वह उन प्रश्नों के स्थायी समाधान की भी संभावना रखती है, जो बरसों से रंगकर्म को घेरे हुए हैं। जैसे जीविका, संरचना और सामाजिक प्रासंगिकता के प्रश्न।

भारत त्योहारों का देश है। त्योहार मतलब उल्लास। इस उल्लास में कला का बड़ा ही महत्व था। किसी भी त्योहार को ले लीजिए, उसमें आपको हर स्तर पर कला का समावेश मिलेगा। कहीं घर और जमीन पर सुंदर रंगोली और कलाकृतियां उकेरी जाती हैं तो दीपावली जैसे त्योहारों में भी दीवारों की रंगाई-पुताई कर उस पर सुंदर चित्र उकेरे जाते थे। जमीन पर रंगोली बनाई जाती थी। तमाम तरह आकार-प्रकार के दीये बनाए जाते थे। अहम यह था कि इन सारे ही कामों में सभी की सहभागिता होती थी। लोगों को रोजगार मिलता था। त्योहारों की अर्थ व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि सभी के घर दीपावली की खुशहाली बराबर से रहती थी। दौर बदल गया है। पुराना कहकर नई जनरेशन ने परंपराओं और मान्यताओं को किनारे कर दिया है।

ऋतु चौधरी
लेखिका

आधुनिकता लील गई कला और धरोहर

कभी दीपावली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि पूरे जीवन का उत्सव हुआ करती थी। त्योहार आते ही घरों में हर्ष की लहर दौड़ जाती थी। बच्चे से लेकर बड़ों तक सब किसी न किसी तैयारी में जुट जाते थे। घरों की दीवारें, आंगन, गलियां सब अपनेपन की महक से भर उठती थीं। वह समय था जब त्योहार खरीदे नहीं जाते थे, बल्कि जीए जाते थे।

घर-आंगन की रौनक और मिट्टी की खुशबू

दीपावली से महीनों पहले ही घरों की लिपाई-पुताई शुरू हो जाती थी। दीवारें गोबर, लाल मिट्टी, गेरू और चुने से रंगी जाती थीं। महिलाएं अपने हाथों से आंगन में रंग-बिरंगे चित्र बनाती थीं। कहीं कमल खिला होता, कहीं मोर नाचता, तो कहीं पत्तियों और बेलों की लहराती सजावट होती। इन कलात्मक रचनाओं के लिए कोई प्रशिक्षण केंद्र नहीं था, न ही कोई 'आर्ट क्लास'। यह कला तो मां से बेटी और भाभी से ननद तक, स्नेह और अनुभव के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती थी। हर घर में कला थी, हर दीवार में स्नेह।

बाजार ने खत्म की कला की जीवंतता

बाजार त्योहारों पर हावी हो गए हैं। इसमें कला कब मर गई पता भी नहीं चला। बाजार ने हमारी परंपराओं को धीरे-धीरे निगल लिया। अब त्योहारों की तैयारी दुकानों और ऑनलाइन स्टोर्स पर पूरी होती है। न घर की लिपाई-पुताई के रंग हैं, न मिट्टी की खुशबू। बाजारीकरण ने उत्सवों को उत्पाद बना दिया है। दीये अब प्लास्टिक या बिजली के हो गए हैं, मिठाइयां डिब्बों में पैक होकर आती हैं। घरों में रौनक अब रोशनी की नहीं, एलईडी की चमक की हो गई है।

कुम्हारों का मौसम और दीयों की लौ

गांवों में कुम्हारिन नानी महीनों पहले से मिट्टी जमा करती थीं। उनके हाथों से गढ़े सैकड़ों दीये घर-घर की रौनक बनते थे। बाजारों और हाटों में दीयों की पंक्तियां सजी होती थीं। मिट्टी के ये दीपक न केवल घर को रोशन करते थे, बल्कि श्रम, परंपरा और आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी थे। दीवाली से पहले के दिन कुम्हारों, रंगसाजों और बनिया के लिए उत्सव जैसे होते थे। हर कोई किसी न किसी रूप में त्योहार का हिस्सा था। कोई दीप बनाता, कोई मिठाई, कोई सजावट।

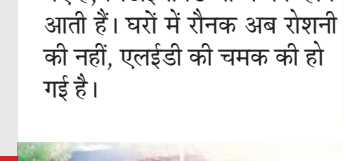

मां अन्नपूर्णा की चतुराई और सहेजने की परंपरा

उस समय घरों में गाय-भैंसें होती थीं, दूध की कोई कमी नहीं। पर त्योहारों के खर्चे का हिसाब बड़ी चतुराई से घर की महिलाएं संभालती थीं। वे रोजमर्रा के उपयोग से थोड़ा दूध बचा लेतीं, दही और मावा तैयार करतीं और त्योहार के दिन वही स्वादिष्ट पकवान बनते। जलेबी, गुझिया, मठरी, चिरौंजी का हलवा और खुरमा। स्त्रियां केवल घर की रसोइया नहीं थीं, वे तो संस्कृति की संरक्षिका थीं। उनका हर काम परिवार के सुख और उत्सव से जुड़ा था। सच ही कहा गया है। मां अन्नपूर्णा की उपाधि यूं ही नहीं दी गई।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	82,029.98	25,145.50
गिरावट	297.07	81.85
प्रतिशत में	0.36	0.32

सोना 1,30,000 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,85,000 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 15 अक्टूबर 2025

www.amritvichar.com

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2550, राज श्री 1830, फॉर्चून कि. 2245, रविन्द्रा 2490, फॉर्चुन 13 किग्रा 1975, जय जवान 1990, सचिन 2040, सूरज 1990, अवसर 1920, उजाला 1920, गृहणी 13 किग्रा 1920, क्लासिक (किग्रा) 2130, मोर 2185, चक्र टिन 2315, ब्लू 2150, आशीर्वाद मस्टर्ड 2410, स्वास्तिक 2505

किराना (प्रतिकु.) : हल्दी निजामाबाद 14000, जीरा 24000, लाल मिर्च 14000-17000, धनिया 9000-11000, अजवायान 13500-20000, मेथी 7000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 27000, (प्रतिकि.) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 880, किसमिस पीली 300-400, मखाना 800-1100

चावल (प्रति कु.) : डबल चाबी सेला 9600, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 4950, शर्बती स्टीम 5100, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 7300, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1-5 किग्रा) 10100, हरी पति नेचुरल 9100, जेनिथ 8100, गलैक्सी 7400, सूमो 4000, गोल्डन सेला 7900, मंसूरी पनघट 4350, खजाना 4300

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9800, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 12800-13500, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली 7250-7450 मलका दाल 7550-8900, मलका छाँटी 7550, दाल उड़द बिलासपुर 8000-9000, मसूर दाल छोटी 9500-11200, दाल उड़द दिल्ली 10300, उड़द साबुत दिल्ली 9900, उड़द धोवा इंदौर 12800, उड़द धोवा 10000-11000,चना काला 7050, दाल चना 7450, दाल चना मोटी 7600, मलका विदेशी 7300, रूपकिशोर बेसन 8200, चना अकोला 7200, डबरा 7200-9200, सच्चा हीरा 8600, मोटा हीरा 10700, अरहर गोला मोटा 7700, अरहर पटका मोटा 8100, अरहर कोरा मोटा 8600, अरहर पटका छोटा 9800-10300, अरहर कोरी छोटी 10300

चीनी : डालमियां 4480, पीलीभीत 4400, सितारगंज 4360, धामपुर 4480

मांग बढ़ने से बढ़ा रत्न-आभूषण का निर्यात

वैश्विक चुनौतियों के बावजूद सितंबर में निर्यात 6.5% बढ़कर 2.9 अरब डॉलर पर पहुंचा

मुंबई, एजेंसी

रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद (जीजेईपीसी) ने मंगलवार को कहा कि त्योहारी और शादी-ब्याह के मौसम में मांग बढ़ने से वैश्विक चुनौतियों के बावजूद सितंबर में कुल रत्न एवं आभूषण निर्यात 6.55 प्रतिशत बढ़कर 2,914.29 करोड़ डॉलर (25,737.50 करोड़ रुपये) का हो गया।

जीजेईपीसी ने कहा कि सितंबर, 2024 में रत्न एवं आभूषण निर्यात 2,735.26 करोड़ डॉलर (22,925.81 करोड़ रुपये) का रहा था। वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही में, कुल रत्न एवं आभूषण निर्यात में 3.66% की वृद्धि देखी गई और यह पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि के 13.60 अरब डॉलर की तुलना में 14.09 अरब डॉलर पर पहुंच गया।

जीजेईपीसी के चेयरमैन किरीट भंसाली ने कहा कि इस वित्त वर्ष की पहली छमाही में उद्योग में सुधार के उत्साहजनक संकेत दिखाई दे रहे हैं। संयुक्त अरब अमीरात, हांगकांग और ब्रिटेन जैसे प्रमुख बाजारों में रत्न एवं आभूषण उत्पादों की मांग मजबूत हुई है और निर्यात में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। प्रवासी भारतीयों के बीच आगामी त्योहारी और शादी-ब्याह के मौसम के साथ-साथ वैश्विक बाजारों में छुट्टियों के मौसम की मांग से आने वाली तिमाही

में इस सकारात्मक गति के बने रहने की उम्मीद है। जीजेईपीसी के अनुसार, भारतीय रत्न एवं आभूषण निर्यात के लिए एक प्रमुख गंतव्य - अमेरिका - को शुल्क संबंधी कारकों के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। वर्ष 2025 की अप्रैल-सितंबर अवधि के लिए, अमेरिका को कुल निर्यात 40.28%घटकर 277 करोड़ 6.6 लाख डॉलर रह गया, जबकि तराशे और पॉलिश किए हुए हीरों का निर्यात 53.62% घटकर 117 करोड़ 50.9 लाख डॉलर रह गया।

भंसाली ने कहा कि जीजेईपीसी सरकार के साथ निकट समन्वय में है क्योंकि अमेरिकी बाजार को आपूर्ति करने वाले निर्यातक और निर्माता मौजूदा शुल्क स्थिति के कारण काफी तनाव का सामना कर रहे हैं। हम इस क्षेत्र को स्थिर करने के लिए राहत-उन्मुख उपायों की वकालत करने के लिए सरकार के साथ सक्रिय रूप से बातचीत कर रहे हैं।

मोबाइल फोन निर्यात 95% चढ़कर 1.8 अरब डॉलर पर

नई दिल्ली। देश का मोबाइल फोन निर्यात सितंबर में सालाना आधार पर 95% चढ़कर 1.8 अरब डॉलर से अधिक हो गया। उद्योग निकाय आईसीईए ने मंगलवार को अनुमानित आंकड़ों के आधार पर यह जानकारी दी। 'इंडिया सेल्युलर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन' (आईसीईए) ने कहा कि अगस्त एवं सितंबर महीने उत्पादन समायोजन और मौसमी आपूर्ति चक्र के कारण पारंपरिक रूप से निर्यात के लिहाज से सुस्त माने जाते हैं। लेकिन इस बार का मजबूत प्रदर्शन देश में विकसित हुए मजबूत मोबाइल फोन विनिर्माण पारिस्थितिकी को दर्शाता है। संघ ने कहा कि अप्रैल-सितंबर के दौरान मोबाइल फोन निर्यात अनुमानित रूप से 13.5 अरब डॉलर रहा, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 8.5 अरब डॉलर था। यह 60% से अधिक की वृद्धि है। यह दर्शाता है कि भारत का मोबाइल फोन निर्माण क्षेत्र निरंतर पैमाना, दक्षता एवं विश्वसनीयता के तीन स्तंभों पर टिके हुए वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार है। अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ऑस्ट्रिया, नीदरलैंड और ब्रिटेन को भारत में निर्मित मोबाइल फोन का प्रमुख रूप से निर्यात होता है। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में अमेरिका को 9.4 अरब डॉलर का फोन निर्यात होने का अनुमान है, जो पिछले साल इसी अवधि में 3.1 अरब डॉलर था। इसमें सालाना आधार पर 200% की वृद्धि दर्ज की गई। कुल फोन निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी लगभग 70 प्रतिशत रही जबकि पिछले साल यह 37 प्रतिशत थी। आईसीईए ने वित्त वर्ष 2025-26 में भारत के मोबाइल फोन निर्यात के 35 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान जताया है।

एमईडीएफ में भुगतान के बाद जमे मांस के निर्यात की अनुमति

ठंडा और जमे हुए मांस उत्पादों के निर्यात को वाणिज्य मंत्रालय की इकाई एपीडा द्वारा प्रबंधित मांस निर्यात विकास कोष (एमईडीएफ) में भुगतान के बाद ही अनुमति दी जाएगी। यह निर्णय 29 अक्टूबर, 2025 से लागू होगा। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) देश के कृषि और संबद्ध उत्पाद निर्यात से संबंधित मुद्दों की देखता है। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने कहा कि ठंडे और जमे हुए मांस उत्पादों के निर्यात की अनुमति, केवल एपीडा द्वारा संचालित मांस निर्यात विकास कोष (एमईडीएफ) में धन भेजने पर ही दी जाएगी। पशु उत्पादों का निर्यात भारतीय कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है। पशु उत्पादों के निर्यात में भैंस का मांस, भेड़/बकरी का मांस, पॉल्ट्री उत्पाद, पशु आवरण, दूध और दुग्ध उत्पाद और शहद शामिल हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में देश का पशु उत्पादों का निर्यात 4.5 अरब डॉलर का हुआ था।

भारत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान मुद्राकोष ने बढ़ाकर किया 6.6%

नई दिल्ली, एजेंसी

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने मंगलवार को चालू वित्त वर्ष के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर के अनुमान को बढ़ाकर 6.6% कर दिया। इससे पहले इसके 6.4% रहने का अनुमान लगाया था।

पहली तिमाही में मजबूत आर्थिक वृद्धि के साथ यह अनुमान बढ़ाया गया है, जो अमेरिकी शुल्क के प्रभाव को सीमित करेगा। हालांकि, मुद्राकोष (आईएमएफ) ने अपनी ताजा विश्व आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में 2026-27 के लिए वृद्धि दर के अनुमान को 0.2% घटाकर 6.2% कर दिया है। रिपोर्ट में कहा गया कि जुलाई के विश्व आर्थिक परिदृश्य की अद्यतन रिपोर्ट की तुलना में, 2025 के लिए वृद्धि दर के अनुमान को बढ़ाया गया है। इसमें पहली तिमाही की मजबूत वृद्धि जुलाई से भारत से आयात पर अमेरिकी शुल्क दर में वृद्धि की भरपाई से कहीं अधिक है। इसके साथ 2026 के लिए आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को कम किया गया है।

- **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने इससे पहले 6.4 प्रतिशत रहने का लगाया था अनुमान**

उल्लेखनीय है कि भारत की आर्थिक वृद्धि दर अप्रैल-जून में 7.8 प्रतिशत रही, जो पांच तिमाहियों में सबसे अधिक है। इस महीने की शुरुआत में विश्व बैंक ने भी चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर का अनुमान 6.3 से बढ़ाकर 6.5% किया था। साथ ही कहा था कि देश सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा। आईएमएफ ने जुलाई में भारत की आर्थिक वृद्धि के अपने अनुमान को संशोधित कर 2025 और 2026 दोनों के लिए 6.4 प्रतिशत कर दिया था।

परमाणु ऊर्जा में वृद्धि को कानून में बदलाव

नई दिल्ली, एजेंसी

सरकार की समिति ने 2047 तक 100 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए विधायी संशोधनों से लेकर देश में यूरेनियम उत्पादन बढ़ाने समेत कई उपायों की सिफारिश की है। ये उपाय न केवल परमाणु क्षेत्र में निजी निवेश को आकर्षित करेंगे, बल्कि ऐसी परियोजनाओं की स्थापना के लिए आवश्यक मंजूरी में तेजी लाने में भी मदद करेंगे।

विद्युत मंत्रालय ने फरवरी में '2047 तक 100 गीगावाट परमाणु क्षमता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक समिति का गठन किया था।

- **यूरेनियम उत्पादन बढ़ाने समेत कई उपायों की सिफारिश**

समिति ने 2047 तक 100 गीगावाट का लक्ष्य हासिल करने के लिए सभी पहलुओं पर कई दौर की चर्चा की है और लक्ष्य के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करने के साथ उन्हें कम करने के लिए आवश्यक उपायों की सिफारिश की है। देश में वर्तमान में स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता 8.88 गीगावाट है।

समिति का अनुमान है कि 100 गीगावाट क्षमता प्राप्त करने के लिए 19 लाख करोड़ रुपये के निवेश की जरूरत होगी। परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 और परमाणु क्षति के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010 (सीएलएनडीए) में संशोधन, आवश्यक निजी पूंजी लाने और आपूर्तिकर्ताओं एवं संभावित निवेशकों की जोखिम धारणा को कम करने के लिए आवश्यक होंगे। परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 वर्तमान में परमाणु परियोजनाओं में निजी क्षेत्र और यहां तक कि राज्य सरकारों की भागीदारी की भी अनुमति नहीं देता है।

कीमतों में नरमी से थोक महंगाई घटकर 0.13 प्रतिशत

नई दिल्ली, एजेंसी

खाद्य पदार्थों, ईंधन एवं विनिर्मित वस्तुओं की कीमतों में नरमी के बीच सितंबर में थोक मुद्रास्फीति (महंगाई) घटकर 0.13% रह गई। मंगलवार को जारी सरकारी आंकड़ों से यह जानकारी दी गई। थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति पिछले साल अगस्त में 0.52% और सितंबर में 1.91% थी।

आंकड़ों के अनुसार, खाद्य वस्तुओं की कीमतें सितंबर में 5.22% कम हुईं जबकि अगस्त में यह आंकड़ा 3.06% था। सब्जियों की कीमतों में भी गिरावट देखी गई। सब्जियों की कीमत सितंबर में 24.41% घटी जबकि अगस्त में यह 14.18% कम हुई थी। विनिर्मित उत्पादों के मामले में महंगाई अगस्त के 2.55% के मुकाबले घटकर 2.33% रह गई। ईंधन और बिजली की कीमतें सितंबर

में 2.58% कम हुईं जबकि पिछले महीने इनमें 3.17% गिरावट आई थी।

वित्तीय सेवा कंपनी बार्कलेज इंडिया की मुख्य अर्थशास्त्री आस्था गुडवानी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर वस्तुओं की कीमतों में सामान्य रूप से कमी के कारण थोक महंगाई के लंबे समय तक कम बने रहने की उम्मीद है। इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च के एसोसिएट निदेशक पारस जसराय ने कहा कि सितंबर, 2025 में मुख्य मुद्रास्फीति बढ़कर 31 महीने के उच्चस्तर 1.9% पर पहुंच गई। इसकी वजह सालाना आधार पर आभूषणों की कीमतों में 34.1% की रिकॉर्ड वृद्धि रही।

पीएचडीसीसीआई के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं महासचिव रंजीत मेहता ने कहा कि थोक कीमतों में कमी की मुख्य वजह खाद्य एवं ऊर्जा की कम लागत, मजबूत कृषि उत्पादन और वैश्विक स्तर पर जिंस की स्थिर कीमतें रहीं। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) खुदरा मुद्रास्फीति पर नजर रखता है। केंद्रीय बैंक ने इस महीने की शुरुआत में नीतिगत दरों को 5.5% पर अपरिवर्तित रखा था। सोमवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, सितंबर में खुदरा मुद्रास्फीति घटकर आठ साल के निचले स्तर 1.5% पर आ गई।

बिजनेस ब्रीफ

एलजी के शेयर 48% बढ़त के साथ बंद

नई दिल्ली। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया लिमिटेड के शेयर ने मंगलवार को बाजार में शानदार शुरुआत की और 1,140 रुपये प्रति के निर्गम मूल्य के मुकाबले 48 प्रतिशत से अधिक बढ़त के साथ बंद हुआ। बीएसई पर शेयर 50.43 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,715 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। बाद में, यह 52.31 प्रतिशत उछलकर 1,736.40 रुपये पर पहुंच गया। कारोबार के अंत में 48.19 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,689.40 रुपये पर बंद हुआ। एनएसई पर शेयर ने 50 प्रतिशत की बढ़त के साथ 1,710.10 रुपये शुरुआत की। अंत में 48.23 प्रतिशत चढ़कर 1,689.90 रुपये पर बंद हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन सुबह के कारोबार में 1,14,671.81 करोड़ रुपये रहा। दिन में मात्रा के संदर्भ में बीएसई पर कंपनी के 78.56 लाख शेयर और एनएसई पर 687.94 लाख शेयर का कारोबार हुआ।

फिक्की के अगले अध्यक्ष होंगे अनंत गोयनका

नई दिल्ली। उद्योग मंडल फिक्की ने मंगलवार को आरपीजी समूह के वाइस चेयरमैन अनंत गोयनका को 2025-26 के लिए अध्यक्ष बनाने की घोषणा की। फिक्की ने कहा कि फिलहाल संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष गोयनका अगले महीने के अंत में होने वाली वार्षिक आम बैठक के बाद हर्षवर्धन अग्रवाल की जगह अध्यक्ष पद संभालेंगे। आरपीजी समूह पांच अरब डॉलर का विविधीकृत समूह है। इसका कारोबार टायर, बुनियादी ढांचा, औषधि, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में फैला हुआ है। वह इसके पहले प्रमुख टायर विनिर्माता सिएट के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (एमडी एवं सीईओ) रह चुके हैं।

सोना की खरीदारी में बरतें समझदारी

हॉलमार्क और मेकिंग चार्ज की जानकारी बेहद जरूरी

अर्थ डेस्क, बरेली : त्योहारी सीजन शुरू होते ही सोने-चांदी की खरीदारी में तेजी आ जाती है, लेकिन इसके साथ ही धोखाधड़ी के मामले भी बढ़ने लगते हैं। ग्राहकों को अक्सर शुद्धता, हॉलमार्क और मेकिंग चार्ज के नाम पर ठगा जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि थोड़ी-सी सावधानी बरतकर आप न केवल धोखाधड़ी से बच सकते हैं, बल्कि अपनी गाढ़ी कमाई को सुरक्षित भी रख सकते हैं।

हॉलमार्क ही शुद्धता की गारंटी

सोने की शुद्धता की पहचान करने का सही तरीका भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) का हॉलमार्क है। हॉलमार्क वाले सोने पर चिह्न होते हैं- **बीआईएस लोगो :** कैरेट की शुद्धता : जैसे 22 कैरेट के लिए 916 (91.6% शुद्ध सोना), 18 कैरेट के लिए 750 (75% शुद्ध सोना)। **6 अंकों का एचयूआईडी नंबर :** यह यूनिक अल्फान्यूमेरिक कोड है, जो हर आभूषण के लिए अलग होता है।

बीआईएस केयर एप से करें जांच

सरकार ने ग्राहकों की सुविधा के लिए बीआईएस केयर एप लॉन्च किया है। इस एप से आप हॉलमार्क वाले आभूषण के एचयूआईडी नंबर को स्कैन करके उसकी शुद्धता और अन्य जानकारी को सत्यापित कर सकते हैं। यदि एप में दी जानकारी और बिल में दी जानकारी मेल नहीं खाती, तो आप इसकी शिकायत कर सकते हैं।

ऑनलाइन खरीदारी में सावधानी जरूरी

आजकल डिजिटल गोल्ड, गोल्ड ईटीएफ और सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड का चलन भी बढ़ा है। इनकी खरीदारी हमेशा विश्वसनीय प्लेटफॉर्म और डीलर से ही करनी चाहिए ताकि धोखाधड़ी से बचा जा सके।

सोना कितना सोना है, करें जानकारी

सर्राफा कारोबारी राघव अग्रवाल बताते हैं कि सोने की खरीदारी करते समय उसकी शुद्धता की जांच जरूर कर लें। सोना कितना शुद्ध है इसके लिए सोने के कैरेट को 24 से विभाजित करके 100 से गुणा करके शुद्धता का प्रतिशत निकाला जा सकता है।

उदाहरण : 22 कैरेट सोने की शुद्धता = (22 / 24) x 100 = 91.6%

इसी तरह, 18 कैरेट में 75% और 14 कैरेट में 58.33% शुद्ध सोना होता है।

कैरेट के अनुसार शुद्धता व मूल्य

24 कैरेट : शुद्धता : 100% (लगभग) मूल्य : 1,30,000 प्रति 10 ग्राम

22 कैरेट : शुद्धता : 91.67% (22/24) मूल्य : 1,30,000 X 0.9167 = 1,19,171 प्रति 10 ग्राम

18 कैरेट : शुद्धता : 75% (18/24) मूल्य : 1,30,000 X 0.75 = 97,500 प्रति 10 ग्राम

14 सोना : शुद्धता : 58.33% (14/24) मूल्य : 1,30,000 X 0.5833 = 75,829 प्रति 10 ग्राम

(**नोट :** इसमें केवल सोने का मूल्य शामिल है। आभूषण पर मेकिंग चार्ज लागू हो सकता है)

अमेरिका के लिए सभी श्रेणियों की डाक सेवाएं 15 से बहाल

नई दिल्ली। भारतीय डाक विभाग ने मंगलवार को कहा कि वह 15 अक्टूबर से अमेरिका के लिए सभी श्रेणियों की अंतर्राष्ट्रीय डाक सेवाएं बहाल करने जा रहा है। डाक विभाग ने कहा कि अमेरिकी सीमा-शुल्क एवं सीमा संरक्षण (सीबीपी) के दिशानिर्देशों के अनुरूप, भारत से अमेरिका जाने वाली डाक खेप पर शुल्क दर घोषित सामान मूल्य का 50 प्रतिशत तय की गई है जो नए शुल्क नियमों के तहत लागू होगी।

डाक विभाग ने कहा कि विभाग यह घोषणा करते हुए प्रसन्न है कि 15 अक्टूबर, 2025 से अमेरिका के लिए सभी श्रेणियों की अंतर्राष्ट्रीय डाक सेवाएं दोबारा शुरू की जा रही हैं। अमेरिकी आदेश के बाद 22 अगस्त को डाक सेवाओं को अस्थायी रूप से निलंबित किया गया था। डाक सेवाओं का निलंबन अमेरिकी सरकार के नए नियामकीय प्रावधानों के कारण आवश्यक था।

सोना 1.3 लाख के उच्चतम स्तर पर, चांदी 1.85 लाख के पार

नई दिल्ली, एजेंसी

धनतेरस से पहले खुदरा विक्रेताओं और भारी त्योहारी खरीदारी से मंगलवार को सर्राफा बाजार में सोने की कीमतें 2,850 रुपये मजबूत होकर 1.3 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर को पार कर गईं।

अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार, 99.9% शुद्धता वाले सोने की कीमत 2,850 रुपये बढ़कर 1,30,800 रुपये प्रति 10 ग्राम (सभी करों सहित) के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई, जबकि पिछली सत्र में यह 1,27,950 रुपये पर बंद हुई थी। 99.5% शुद्धता वाला सोना भी 2,850 रुपये बढ़कर 1,30,200 रुपये प्रति 10 ग्राम (सभी करों सहित) के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया, जबकि इसका पिछला बंद भाव 1,27,350 रुपये प्रति 10 ग्राम था। चांदी भी 6,000 रुपये के उछाल के साथ 1,85,000 रुपये प्रति किग्रा

- **धनतेरस से पहले हुई खरीदारी से सोने की कीमतें 2,850 रुपये का आया उछाल**

(सभी करों सहित) के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गई, जो पांचवें दिन की बढ़त है। पिछले बाजार सत्र में यह 1,79,000 रुपये प्रति किग्रा पर बंद हुई थी। व्यापारियों ने सर्राफा कीमतों में तेज वृद्धि का श्रेय त्योहारी और शादी-ब्याह के मौसम से पहले आभूषण विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं की निरंतर मांग और साथ ही डॉलर के मुकाबले रुपये में आई कमजोरी को भी दिया, जो 12 पैसे गिरकर 88.80 के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर आ गया।

अब 12 माह बाद पीएफ, 36 माह बाद निकाल सकेंगे पेंशन

नई दिल्ली, एजेंसी

- **ईपीएफओ के सीबीटी की हुई बैठक में लिया गया निर्णय**

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के बेरोजगार सदस्य अब अपनी भविष्य निधि से 12 महीनों के बाद पीएफ और पेंशन खाते से 36 महीनों के बाद पूरी राशि निकाल सकेंगे। फिलहाल लगातार दो महीने बेरोजगार रहने वाले अंशधारकों को अपनी भविष्य निधि एवं पेंशन खाते से पूरी राशि निकालने की मंजूरी है।

सेवानिवृत्ति कोष निकाय ईपीएफओ के केंद्रीय न्यासी मंडल (सीबीटी) की हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। इस बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने की। वरिष्ठ अधिकारी ने मंगलवार को कहा कि राशि की निकासी की अवधि बढ़ाने का उद्देश्य औपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा लाभ सुनिश्चित करना है। अधिकांश बेरोजगार युवा नया रोजगार मिलने पर ईपीएफओ का फिर से हिस्सा बन जाते हैं, लेकिन दो महीने की बेरोजगारी के बाद राशि निकालने से वे पेंशन एवं अन्य लाभ के अवसर खो देते हैं। इसकी वजह यह है कि 10 साल या अधिक की कुल सेवा के बाद ही पेंशन की पात्रता होती है। श्रम मंत्रालय ने कहा था कि अब कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) की समय से पहले अंतिम निकासी की अवधि दो महीने से बढ़ाकर 12 और पेंशन की अंतिम निकासी की अवधि दो महीने से बढ़ाकर 36 महीने कर दी गई है।

चार प्रौद्योगिकियां वैश्विक श्रम बाजारों को देंगी नया रूप

नई दिल्ली। चार उभरती प्रौद्योगिकियां - एआई, रोबोटिक्स, उन्नत ऊर्जा प्रणालियां और सेंसर नेटवर्क - वैश्विक श्रम बाजारों को नया रूप देने को तैयार हैं। एक अध्ययन में मंगलवार को यह बात कही गई।

इसका सबसे अधिक प्रभाव दुनिया भर के 80% श्रमिकों को रोजगार देने वाले 7 प्रमुख क्षेत्रों पर पड़ने का अनुमान है। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) ने अपनी 'कल की नौकरियां: प्रौद्योगिकी और दुनिया के सबसे बड़े कार्यबलों का भविष्य' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा कि ये प्रौद्योगिकियां उत्पादकता बढ़ाने में मददगार होंगी। इसमें आगे कहा गया कि कृषि, विनिर्माण, निर्माण, थोक और खुदरा व्यापार, परिवहन और लॉजिस्टिक, व्यवसाय और प्रबंधन, तथा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों की नौकरियों में व्यापक बदलाव होंगे।

एथनॉल उद्योग | चीनी और जैव ईंधन उद्योग निकायों का ई-20 मिश्रण लक्ष्य से आगे राष्ट्रीय एथनॉल गतिशीलता मसौदा बनाने का आग्रह

फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों पर कर कटौती करे सरकार

नई दिल्ली, एजेंसी

देश के चीनी और जैव ईंधन उद्योग निकायों ने मंगलवार को सरकार से मौजूदा ई-20 मिश्रण लक्ष्य से आगे एक राष्ट्रीय एथनॉल गतिशीलता मसौदा बनाने का आग्रह किया। उद्योग निकाय ने साथ ही देश में जैव ईंधन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 'फ्लेक्स-फ्यूल' वाहनों पर कर कम करने की अपील भी की।

भारतीय चीनी एवं जैव-ऊर्जा निर्माता संघ (इस्मा) और भारतीय हरित ऊर्जा महासंघ (आईएफजीई) ने फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों (एफएफवी) और स्मार्ट हाइब्रिड वाहनों पर जीएसटी को युक्तिसंगत बनाने के साथ ही फेम योजना के तहत इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए दिए जाने वाले उपभोक्ता प्रोत्साहनों के समान राहत की मांग की। इस्मा ने कहा कि

यह अपील भारत के अपने ई-20 एथनॉल मिश्रण लक्ष्य (पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल मिलाने) को निर्धारित समय से पांच साल पहले हासिल करने के बाद की गई है।

इस्मा के महानिदेशक दीपक बल्लानी ने कहा कि भारत के चीनी क्षेत्र ने चुनौती का सामना किया है और तय समय से पहले अपने एथनॉल उत्पादन के वादे को पूरा किया है। उन्होंने कहा कि उद्योग का मानना है कि इस एथनॉल क्रांति को बनाए रखना अब नीतिगत निरंतरता पर निर्भर करता है। एथनॉल उद्योग ने तेल विपणन कंपनियों की 10.50 अरब लीटर की जरूरत के मुकाबले 17.76 अरब लीटर की पेशकश की है, जो 2.7% इथेनॉल मिश्रण का समर्थन करने की तत्परता को दर्शाता है। ई-20 से आगे की स्पष्ट रूपरेखा के बिना, उत्पादन क्षमता का पूरा उपयोग नहीं हो पाएगा, जिससे निवेश बेकार रहेगा और मिलों का राजस्व कम होगा।

900 करोड़ लीटर के लिए 40,000 करोड़ का निवेश

इस्मा ने कहा कि चीनी उद्योग ने 900 करोड़ लीटर प्रति वर्ष से अधिक एथनॉल उत्पादन क्षमता बनाने के लिए 40,000 करोड़ रुपये का निवेश किया है। उद्योग ने तीन वर्षों में बी-हैवी शीरे और गन्ने के रस से बने एथनॉल खरीद की स्थिर कीमतों से वित्तीय दबाव का भी संकेत दिया। आईएफजीई के अध्यक्ष प्रमोद चौधरी ने कहा कि भारत को ई-20 से आगे स्पष्ट लक्ष्यों के साथ एक राष्ट्रीय एथनॉल गतिशीलता मसौदा 2030 घोषित करना चाहिए। निकायों ने कहा कि एफएफवी और स्मार्ट हाइब्रिड वाहनों पर वर्तमान 43% जीएसटी, ईवी पर 5% की दर की तुलना में बहुत अधिक है।

ई-20 मिश्रण तय लक्ष्य से कहीं अधिक

नई एथनॉल नीति की मांग इसलिए की जा रही है क्योंकि भारत ने ई-20 मिश्रण लक्ष्य तय समय से पहले हासिल कर लिया है और अब एथनॉल उत्पादन क्षमता उससे कहीं अधिक हो चुकी है। उद्योग ने 10.50 अरब लीटर की मांग के मुकाबले 17.76 अरब लीटर की पेशकश की है। यदि स्पष्ट नीति नहीं बनी तो यह अतिरिक्त एथनॉल बेकार हो जाएगा, जिससे निवेश और राजस्व प्रभावित होंगे। साथ ही, फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों को बढ़ावा देने के लिए कर छूट और प्रोत्साहनों की जरूरत है। यह नीति ऊर्जा सुरक्षा, किसानों की आय और पर्यावरण संरक्षण के लिए भी आवश्यक है।

ब्रिटेन ने वीजा आवेदकों के लिए अंग्रेजी की परीक्षा की और कठिन

लंदन। ब्रिटेन की सरकार ने भारत सहित दूसरे देशों के वीजा आवेदकों के लिए अंग्रेजी भाषा की अनिवार्य परीक्षा को मंगलवार को और कठिन बनाने की शर्तें पेश कीं। ब्रिटेन में बढ़ते आव्रजन पर बड़ी कार्रवाई के तहत संसद में यह प्रस्ताव रखा गया।

ब्रिटेन का गृह विभाग अंग्रेजी भाषा की यह नई परीक्षा आयोजित की जाएगी। आठ जनवरी, 2026 से सभी कुशल श्रमिकों के लिए आगामी वीजा आवेदन प्रक्रिया के हिस्से के रूप में परिणामों का सत्यापन किया जाएगा। वीजा आवेदक का अंग्रेजी बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने का

- **बढ़ते आव्रजन पर व्यापक कार्रवाई के लिए संसद में रखा गया प्रस्ताव**

स्तर ए-लेवल अथवा 12वीं कक्षा के समकक्ष होना चाहिए, जिसे लेवल बी2 कहा जाता है। गृह विभाग का मानना है कि इससे तय होगा कि वीजा आवेदक ब्रिटेन के जीवन में घुलमिल सकेंगे। गृहमंत्री शबाना महमूद ने कहा, इस देश ने हमेशा उन लोगों का स्वागत किया है जो यहां आकर देश के विकास में योगदान देते हैं, लेकिन प्रवासियों का हमारी भाषा सीखे बिना यहां आना, हमारे राष्ट्रीय जीवन में योगदान देने में असमर्थ होना अस्वीकार्य है।

मारिया को नोबेल देने से नाराज वेनेजुएला ने नार्वे दूतावास पर ताला लगाया

नार्वे और ऑस्ट्रेलिया में अपने दूतावास पहले ही किए बंद, देश की सरकार की नाक में दम करती रही हैं विपक्ष की नेता माचादो

काराकस, एजेंसी

देश की विपक्षी नेता मारिया कोरिना माचादो को 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार देने से नाराज वेनेजुएला सरकार ने नार्वे के दूतावास पर ताला लगा दिया है। वेनेजुएला में नोबेल समिति के फैसले की ही कड़ी आलोचना का ज्वार थम नहीं रहा है। कहा जा रहा है कि माचादो देश में सत्ता पलटने के लिए विदेशी सैन्य हस्तक्षेप की मांग करती रही हैं और खुद भी तख्तापलट के प्रयासों में भागीदार रही हैं।

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने माचादो को धुर दक्षिणपंथी नेता बताते हुए कहा कि वह देश में बाहरी हस्तक्षेप की मांग करती रही हैं, जबकि लोग इसे अस्वीकार कर चुके हैं। हाल के जनमत सर्वेक्षणों से पता चला है कि 90 प्रतिशत से अधिक वेनेजुएलावासी देश के खिलाफ किसी भी बाहरी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं। वेनेजुएला के विदेश मंत्रालय ने सोमवार को संसाधनों के रणनीतिक पुनर्वितरण का हवाला देते हुए नॉर्वे और ऑस्ट्रेलिया में अपने दूतावासों को बंद करने की घोषणा कर दी थी।

सामाजिक अधिकार के लिए काम करने वाले कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने माचादो को पुरस्कार देने की घोषणा के बाद से ही इस फैसले की निंदा की और निराशा जताते हुए हुए कहा शांति के पुरस्कार को आधुनिक उपनिवेशवाद के साधन के रूप में बदल दिया गया है। डोमनिकन राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के एक गठबंधन ने संयुक्त रूप से इस फैसले की आलोचना करते हुए कहा, किसी ऐसे व्यक्ति को नोबेल शांति पुरस्कार देना जिसने खुले तौर पर अमेरिकी और इजराइली सैन्य हस्तक्षेप का आह्वान किया है, उस शांतिवादी भावना का अपमान है जिसने अल्फ्रेड नोबेल को प्रेरित किया था।

देश में तख्तापलट की वकालत करती रही हैं मारिया

माचादो 2002 के तख्तापलट में भाग लेकर चर्चा में आई थीं। तब तत्कालीन राष्ट्रपति ह्यूगो शावेज़ को कुछ समय के लिए सत्ता से बेदखल कर दिया गया था। वह 2014 की ला सालिडा सड़क हिंसा में भी शामिल रही थीं, जिसमें दर्जनों लोग मारे गए थे। माचादो वेनेजुएला पर अमेरिका के आर्थिक प्रतिबंधों का समर्थन करने के साथ इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू से वेनेजुएला में सत्ता पलटने के लिए सैन्य सहयोग भी मांग चुकी हैं।

रूबियो ने किया था नोबेल पुरस्कार के लिए समर्थन

नोबेल पुरस्कार के लिए माचादो का समर्थन अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने किया था, जो वेनेजुएला के प्रति वर्तमान अमेरिकी नीतियों के कट्टर समर्थक रहे हैं। माचादो नोबेल मिलने के बाद कई बार उसे ट्रंप को समर्पित करने की घोषणा कर चुकी हैं। अमेरिका ने मादक पदार्थ विरोधी अभियान के नाम पर कैरेबियन सागर में वेनेजुएला क्षेत्र के किनारे बड़े पैमाने पर सैन्य तैनाती कर रखी है। अमेरिकी सेना ने सितंबर से अब तक कम से कम चार नावों पर बमबारी की है, जिसमें कुल मिलाकर 20 से ज्यादा नागरिक मारे गए हैं।

वर्ल्ड ब्रीफ

स्पेसएक्स ने स्टारशिप रॉकेट की 11वीं परीक्षण उड़ान शुरू की

वाशिंगटन। स्पेसएक्स ने सोमवार को अपने एक और विशाल स्टारशिप रॉकेट को परीक्षण उड़ान पर भेजा, जो पिछली बार की तरह इस बार भी सफलतापूर्वक दुनिया के आधे हिस्से में पहुंचा और साथ ही नकली उपग्रहों को भी प्रक्षेपित किया। स्टारशिप अब तक का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली रॉकेट है और यह टेक्सास के दक्षिणी सिरे से शाम को गर्जना के साथ उड़ा। उड़ान के बाद इससे बूस्टर अलग हो गया और यह मेक्सिको की खाड़ी में योजनाबद्ध तरीके से पहुंचा। अंतरिक्ष यान हिंद महासागर में उतरने से पहले अंतरिक्ष में उड़ता रहा। स्पेसएक्स के डैन ह्यूट ने घोषणा की 'धरती पर वापसी पर स्वागत है स्टारशिप । क्या दिन है।' यह स्टारशिप की 11वीं परीक्षण उड़ान थी।

चीन कर रहा है अपने चौथे विमानवाहक पोत का निर्माण

बीजिंग। चीन चौथे विमानवाहक पोत का निर्माण कर रहा है और साथ ही समुद्री परीक्षण पूरा होने के बाद 'फुजियान' नामक तीसरे विमानवाहक पोत को सेवा में शामिल करने की तैयारी में है। हांगकांग आधारित 'साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट' ने मंगलवार को विमानवाहक पोत के उपग्रह से लिए गए चित्र पोस्ट करते हुए कहा कि चौथे विमानवाहक पोत का निर्माण कार्य लियाओनिंग प्रांत के डालियान स्थित एक शिपयार्ड में प्रगति पर है। चीनी सैन्य प्रवक्ता झांग शियाओगांग ने पिछले महीने कहा था कि तीसरा विमानवाहक पोत 'फुजियान' जल्द ही नौसेना में शामिल कर लिया जाएगा। चीन के तीनों ही विमानवाहक पोत पारंपरिक ऊर्जा से संचालित हैं।

रूस के आर्कान्जेस्क क्षेत्र में मिला 340 कैरेट का बड़ा हीरा

मॉस्को। रूस के आर्कान्जेस्क क्षेत्र में एक भंडार से 340 कैरेट का एक उच्च गुणवत्ता वाला हीरा मिला है। गवर्नर अलेक्जेंडर त्सिबुल्स्की ने कहा कि यह हीरा आधुनिक रूस में खोजे गए पांच सबसे बड़े हीरों में से एक है और यह स्थानीय वी. ग्रिब भंडार के औद्योगिक विकास के दौरान मिला। यह अब तक का सबसे बड़ा हीरा है। गवर्नर के अनुसार, यह रत्न न केवल अपने असाधारण आकार के लिए, बल्कि अपनी गुणवत्ता और बाजार के दामों के लिए भी खास है। उन्होंने कहा, ऐसे सभी प्राकृतिक हीरों की तादाद दो प्रतिशत से अधिक नहीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए एकजुट वैश्विक दृष्टिकोण जरूरी

संयुक्त राष्ट्र सैन्य योगदानकर्ता देशों के सैन्य प्रमुखों के सम्मेलन में बोले सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी

नई दिल्ली, एजेंसी

सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य की अभूतपूर्व चुनौतियों से निपटने के लिए शांति स्थापना मिशनों में एकजुटता और वैश्विक दृष्टिकोण का आह्वान किया। जनरल द्विवेदी ने मंगलवार को यहां संयुक्त राष्ट्र सैन्य योगदानकर्ता देशों (यूएनटीसीसी) के सैन्य प्रमुखों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि आज दुनिया एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है जहां 56 से अधिक संघर्ष चल रहे हैं और इनमें लगभग 90 देश शामिल हैं।

सेना प्रमुख ने कहा, विघटनकारी तकनीकों का प्रसार, गैरसरकारी तत्वों का बढ़ता प्रभाव, हाइब्रिड युद्ध और दुष्प्रचार के प्रकोप ने संघर्ष की पारंपरिक सीमाओं को धुंधला कर दिया है। उन्होंने कहा, बदलती भूराजनीतिक स्थिति उस आम सहमति की भावना को कमजोर कर रही हैं जो संयुक्त राष्ट्र की एकजुट कार्रवाई का आधार है। ऐसी वास्तविकताएं अधिक लचीली,

- **कहा- 56 से ज्यादा संघर्षों में उलझे हैं 90 देश, संवेदनशील मोड़ पर खड़ी है दुनिया**

त्वरित और एकीकृत प्रतिक्रियाओं की मांग करती हैं जो केवल शांति रक्षक ही मिलकर कर सकते हैं।

सेना प्रमुख ने कहा कि ये उभरते ख़तरे बदलती भूराजनीतिक स्थितियों से और भी जटिल हो गए हैं, जो पारंपरिक रूप से एकजुट संयुक्त राष्ट्र कार्रवाई की नींव रखने वाली आम सहमति की भावना को लगातार कमज़ोर कर रहे हैं। वैश्विक शांति स्थापना प्रयासों के प्रति भारत की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा, शांति स्थापना में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक के रूप में भारत ने संयुक्त राष्ट्र के कुल 71 शांति अभियानों में से 51 अभियानों में लगभग तीन लाख पुरुषों और महिलाओं को भेजा है। इनमें कोरिया (1950) और कांगो (1960) में हमारी शुरुआती तैनाती से लेकर अभी चल रहे 11 मिशनों में से 9 में हमारी सेना तैनात है।

यूएनटीसीसी के सम्मेलन में 32 देशों के सैन्य प्रमुखों के साथ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह।

सम्मेलन में शामिल है 32 देशों का शीर्ष सैन्य नेतृत्व

सम्मेलन में 32 देशों का वरिष्ठ सैन्य नेतृत्व हिस्सा ले रहा है। इनमें अल्जीरिया, आर्मेनिया, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, घाना, भूटान, ब्राज़ील, बुरुंडी, कंबोडिया, मिस्र, इथियोपिया, फिजी, फ्रांस, इटली, कज़ाकिस्तान, किर्गिस्तान, मेडागास्कर, मलेशिया, मंगोलिया, मोरक्को, नेपाल, नाइजीरिया, पोलैंड, रवांडा, श्रीलंका, सेनेगल, तंजानिया, थाईलैंड, युगांडा, केन्या, उरुग्वे, वियतनाम शामिल हैं। सम्मेलन में साझा क्षमता निर्माण के लिए रक्षा प्रदर्शनी भी आयोजित की जा रही हैं।

राजनाथ ने कहा- खुलेआम वैश्विक नियमों का उल्लंघन कर रहे कुछ देश

नई दिल्ली। सम्मेलन में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि कुछ देश अंतरराष्ट्रीय नियमों का खुलेआम उल्लंघन कर रहे हैं जबकि कई अन्य देश अगली सदी में वर्चस्व स्थापित करने के लिए अपने खुद के मानदंड बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि भारत पुरानी पड़ चुकी अंतरराष्ट्रीय संरचनाओं में सुधार की वकालत करते हुए अंतरराष्ट्रीय नियम-आधारित व्यवस्था को कायम रखने में मजबूती से खड़ा है। रक्षा मंत्री ने उन देशों का नाम नहीं लिया जो वैश्विक मानदंडों का उल्लंघन कर रहे हैं या अपने नए मानदंड बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हम आज की चुनौतियों का सामना पुराने बहुपक्षीय ढांचों से नहीं कर सकते। व्यापक सुधारों के बिना संयुक्त राष्ट्र विश्वास के संकट का सामना कर रहा है।

जेलेंस्की-ट्रंप की मुलाकात से पहले रूस का यूक्रेन में अस्पताल पर हमला

कीव, एजेंसी

रूसी सेना ने यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खारकीव पर रातभर शक्तिशाली ग्लाइड बम और ड्रोन से हमला किया, जिसमें एक अस्पताल को निशाना बनाया गया। इसमें सात लोग घायल हो गए।

यह हमला ऐसे समय हुआ है जब यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की वाशिंगटन जाने तथा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से और अधिक अमेरिकी सैन्य मदद मांगने की तैयारी कर रहे हैं। क्षेत्रीय प्रमुख ओलेह सिनीहुबोव ने कहा कि यूक्रेन के खारकीव पर हुए हमले में शहर का मुख्य अस्पताल प्रभावित हुआ, जिससे 50 मरीजों को निकालना पड़ा। जेलेंस्की ने कहा कि हमले का मुख्य लक्ष्य ऊर्जा प्रतिष्ठान थे। जेलेंस्की ने टेलीग्राम पर कहा, हर दिन, हर रात रूस बिजली संयंत्रों, बिजली लाइनों और हमारी प्राकृतिक गैस सुविधाओं पर हमला करता है।

यूक्रेनी नेता ने विभिन्न देशों से आग्रह किया कि वे रूस के लंबी दूरी के हमलों को रोकने में मदद करें और इसके लिए वे यूक्रेन को अधिक वायु रक्षा प्रणालियां उपलब्ध कराएं। जेलेंस्की ने कहा, हम अमेरिका और यूरोप, जी-7 तथा उन सभी साझेदारों की कार्रवाई पर भरोसा कर रहे हैं, जिनके पास ये प्रणालियां हैं और जो हमारे लोगों की सुरक्षा के लिए इन्हें उपलब्ध करा सकते हैं। दुनिया को मॉस्को को वास्तविक वार्ता के लिए मेज पर बैठने के लिए मजबूर करना होगा। लेकिन यूक्रेन को विदेशी सैन्य सहायता के नवीनतम आंकड़ों से पता चला है कि हाल ही में सहायता में भारी गिरावट आई है।

यूक्रेन को मिलने वाली सहायता पर नजर रखने वाले जर्मनी के कील इंस्टीट्यूट ने बताया कि जुलाई और अगस्त में सैन्य सहायता में वर्ष की पहली छमाही की तुलना में 43 प्रतिशत गिरावट आई है। जेलेंस्की शुक्रवार को वाशिंगटन में ट्रंप से मिलने वाले हैं। वार्ता के केंद्र में यूक्रेन को अमेरिका द्वारा लंबी दूरी तक मार करने वाले अत्याधुनिक अस्त्र उपलब्ध कराने पर चर्चा होने की उम्मीद है।

- **खारकीव शहर पर रात भर बरसाए शक्तिशाली ग्लाइड बम, ड्रोन से किया हमला, अस्पताल से निकाले गए मरीज**

यूनाइटेड अगेंस्ट न्यूक्लियर ईरान की ओर से यूक्रेन से प्राप्त ईरानी शाहिद-136 ड्रोन को मंगलवार को लंदन की संसद में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रदर्शित किया गया। यह वही हथियार है जिसका इस्तेमाल रूस ने यूक्रेन के खिलाफ विनाशकारी प्रभाव के लिए किया है।

गाजा युद्धविराम पर बंधकों के शवों को लेकर अनिश्चितता का साया बरकरार

हमास ने लौटाए सिर्फ चार शव, 24 अभी भी उसी के कब्जे में

तेल अवीव, एजेंसी

इजराइल-हमास युद्ध में मंगलवार को भी संघर्ष विराम कायम रहा, हालांकि कई जटिल मुद्दे अनसुलझे होने के कारण इस पर अनिश्चितताओं का दौर जारी है। सबसे बड़ा प्रश्न यह उठ रहा है कि हमास 28 बंधकों के शव इजराइल को कब लौटाएगा, साथ ही उससे रिहा किए गए बंधकों और कैदियों की स्वास्थ्य स्थिति के बारे में भी सवाल पूछे जा रहे हैं।

मृत बंधकों में से चार के शव ही सोमवार को इजराइली अधिकारियों को सौंपे गए जो युद्धविराम समझौते के पहले चरण का हिस्सा है। मंगलवार को इनमें से दो की पहचान इजराइल के गाइ इलूज और नेपाल के छात्र बिपिन जोशी के तौर पर की गई। सात अक्टूबर, 2023 को हमास के हमले के दौरान दोनों को अगवा किया गया था। इजराइल ने कहा कि इलूज की मौत उपचार के बिना बंदी बनाने के दौरान हुए घावों के कारण हुई, जबकि जोशी की युद्ध के पहले महीनों में हत्या कर दी गई थी। मुक्त किए गए बंधकों का मंगलवार को इलाज किया गया। इलाज कुछ सप्ताह जारी रहने का अनुमान है।

इजराइल की कैद से रिहा किए गए फिलिस्तीनियों का गाजा में हुआ जोरदार स्वागत।

इजराइल ने सारे शव लौटाने के लिए दिया शाम तक का वक्त

यरूशलम। इजराइल ने मंगलवार को हमास की ओर से अपने सभी 28 बंधकों के शव न सौंपे जाने से गहरी निराशा जताई और आगे किसी भी प्रगति के लिए शाम तक की समयसीमा तय की है। शीर्ष इजराइली अधिकारियों ने हमास पर जानबूझकर वादे से पीछे हटने का भी आरोप लगाया है। इजराइल का मानना है कि हमास पहले से ही कुछ शवों को अपने पास रखे हुए है और संभवत: उसके अधिकारियों पर दबाव बनाने के लिए उन्हें सौंपने से इन्कार कर रहा है। एक मध्यस्थ देश के अरब राजनयिक ने हिब्रू मीडिया एजेंसियों को बताया कि मध्यस्थ इस मुद्दे पर काम कर रहे हैं और उन्हें नहीं लगता कि गाजा समझौता खतरे में है। सोमवार को हमास ने चार बंधकों के शव सौंपे थे, 24 उसी के कब्जे में हैं।

मेडागास्कर में सैन्य तख्तापलट, राष्ट्रपति देश छोड़कर भागे

एंटानानारिवो, एजेंसी

हिंद महासागर में स्थित द्वीपीय राष्ट्र मेडागास्कर में सैन्य तख्तापलट हो गया है। सशस्त्र बल यहां सत्ता संभाल रहे हैं। मेडागास्कर में एक विशिष्ट सैन्य इकाई के कर्नल ने मंगलवार को यह जानकारी सार्वजनिक की।

उनकी यह घोषणा संसद द्वारा राष्ट्रपति एंड्री राजोएलिना के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पर मतदान के तुरंत बाद आई है। राष्ट्रपति राजोएलिना सैनिकों के

विद्रोह के कारण देश छोड़कर भाग गए हैं। कर्नल माइकल रैंड्रियनिरिना ने कहा कि सेना एक परिषद बनाएगी जिसमें सेना और अर्द्धसैनिक कानून प्रवर्तन बल के अधिकारी शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि एक नागरिक सरकार का शीघ्र गठन करने के लिए एक प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाएगा। इससे पहले राष्ट्रपति राजोएलिना सात वर्षों से सत्ता पर काबिज थे जिनके कार्यकाल का अब अंत होना माना जा रहा है।

युवा कर रहे थे देश भर में सरकार विरोधी प्रदर्शन सेना की एक इकाई ने भी लिया था हिस्सा

इससे पहले एक विशिष्ट सैन्य इकाई ने सप्ताहांत में युवाओं के नेतृत्व वाले सरकार विरोधी प्रदर्शनों में भाग लिया था और उनसे पद छोड़ने का आह्वान किया था। राष्ट्रपति ने सोमवार रात सोशल मीडिया पर प्रसारित एक भाषण में कहा कि उन्होंने अपनी जान के डर से देश छोड़ दिया है। तख्तापलट की कोशिशों के बीच मंगलवार को राजोइलिना ने देश की संसद के निचले सदन को भंग करने की घोषणा भी की। उनका ठिकाना बताया जा रहा है। युवा प्रदर्शनकारियों ने 25 सितंबर को पानी और बिजली की कमी के खिलाफ प्रदर्शन शुरू किया। कुछ प्रदर्शन हिंसक हो गए और जल्द ही राष्ट्रपति के इस्तीफे की मांग तक पहुंच गए। छह अक्टूबर को देश भर में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए थे।

बांग्लादेश में कारखाने और गोदाम में आग से 16 की मौत

ढाका। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में मंगलवार को कपड़े के कारखाने और रसायन के एक गोदाम में आग लगने से कम से कम 16 लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि कपड़ा कारखाने के बगल में स्थित रसायन गोदाम में भीषण आग लग गई। बाद में कपड़ा कारखाने से 16 शव बरामद किए गए। उन्होंने बताया कि ऐसा संदेह है कि आग रसायन गोदाम में लगी और अनवर फैशन गारमेंट्स कारखाना तथा शाह आलम रसायन गोदाम तक फैल गई।

बातचीत ठप, अमेरिका में लंबे समय तक शटडाउन रहने की आशंकाएं बढ़ीं

वाशिंगटन। रिपब्लिकन पार्टी से स्पीकर माइक जॉनसन ने सोमवार को कहा कि संघीय सरकार का 'शटडाउन' (सरकारी वित्तपोषण रुकने से कामकाज ठप होना) अब तक का सबसे लंबा 'शटडाउन' हो सकता है। जॉनसन ने कहा कि जब तक डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसद स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित अपनी मांगों को नहीं छोड़ते और इसे पुनः शुरू नहीं करते, तब तक वह उनके साथ बातचीत नहीं करेंगे।

'शटडाउन' के 13वें दिन कैपिटल में

- **स्पीकर माइक जॉनसन ने कहा- अमेरिकी इतिहास में हो सकता है सबसे लंबा शटडाउन**

स्पीकर ने कहा कि उन्हें ट्रंप प्रशासन द्वारा बर्खास्त किए जा रहे हजारों संघीय कर्मचारियों के विवरण की जानकारी नहीं है। यह एक बेहद असामान्य सामूहिक छंटनी है जिसे व्यापक रूप से सरकार के दायरे को सीमित करने के लिए 'शटडाउन' का लाभ उठाने के तरीके के रूप में देखा जा रहा है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 15 अक्टूबर, बुधवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-कार्तिक, पक्ष-कृष्ण पक्ष, नवमी 10.33 तक तत्पश्चात दशमी।

आज का पंचांग

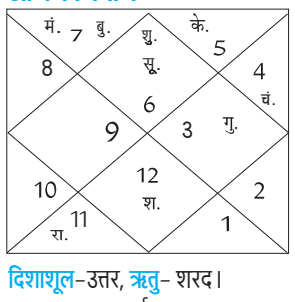

दिशाशूल-उत्तर, **ऋतु**- शरद।
चन्द्रबल-वृषभ, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र- पुष्य 12.00 तक तत्पश्चात अश्लेषा।

मेष — आज आप वैचारिक रूप से थोड़ा कमजोर महसूस करेंगे। गुप्त शत्रु आपको आपके शुभचिंतकों के प्रति भड़काने का प्रयास कर सकते हैं। अनावश्यक कार्यों में धन बर्बाद हो सकता है। माता के प्रति अपना व्यवहार अच्छा रखें।

वृष — आज शुभ समाचार मिलने से पूरा दिन बहुत ही अच्छा रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। मित्रों के साथ करियर को लेकर चर्चा करेंगे। काम की अधिकता के बावजूद नौकरी में शानदार प्रदर्शन करेंगे। जीवनसाथी आपकी भावनाओं को समझेगा।

मिथुन — आज परिवार के छोटे सदस्यों की प्रसन्नता देखकर आप भी खुश रहेंगे। व्यापार की चुनौतियों का समाधान निकाल लेंगे। आज आप धन कमाने के अलग-अलग तरीकों पर विचार कर सकते हैं। दांपत्य संबंध बहुत ही अच्छे रहेंगे। गले में खराश जैसी समस्या हो सकती है।

कर्क — आज घर में धार्मिक आयोजन होने से आप सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहेंगे। आज आप अच्छे मूड में रहेंगे। सिद्धांतों के बजाय व्यवहारिक तरीके से समस्याओं का समाधान करें। विद्यार्थियों को पढ़ाई में आ रही परेशानियां दूर होंगी।

सिंह — आज प्रतिक्रियावादी होने के बजाय ज्यादातर शान्त रहें। घर की देखरेख को आज समय देना पसंद करेंगे। आज रोगियों को सेहत का विशेष ध्यान रखना चाहिए। नकारात्मक लोग आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते

कन्या — आज करियर के तरक्की के बेहतरीन अवसर आपको मिल सकते हैं। काफी समय से लंबित कार्य अब शुरू होने के अच्छे योग हैं। आपकी आमदनी में वृद्धि होगी। आपको अच्छे कार्यों के कारण पुरस्कार मिल सकता है। दांपत्य संबंध काफी रोमान्टिक हो सकते हैं।

तुला — आज आप शांति से अपना दिन बिताना चाहेंगे। आर्थिक दृष्टिकोण से समय बहुत ही अच्छा है। धर्म-कर्म के प्रति आपकी आस्था बढ़ेगी। पारिवारिक उत्तरदायित्व का भली-भांति निर्वाह करेंगे। जॉब में आपको नया काम सौंपा जा सकता है।

वृश्चिक — आज कारोबारी यात्रा के लिए जा सकते हैं। वाद-विवाद से आपको बचना चाहिए। कई दिनों बाद प्रेमीजन से मुलाकात होगी। उच्च शिक्षा में बेहतरीन परिणाम मिलेंगे। मित्रों के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके विचारों को समाज में प्रमुखता मिलेगी।

धनु — आज जिसका हित करने का प्रयास करेंगे हो सकता है वही आपको धोखा दे दे। भूमि-संपत्ति विवादों को लेकर थोड़े परेशान रहेंगे। परिवार में थोड़ी अशांति रहेगी। किसी से आज बड़ा लेन-देन न करें। हृदय रोगियों को दवाइयों और दिनचर्या का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

मकर — आज दांपत्य संबंध काफी रोमान्टिक रहेंगे। आय में वृद्धि होने से आपका आत्मविश्वास भी बढ़ा हुआ रहेगा। मित्रों के साथ आनंद का समय बितायेंगे। सरकारी नौकरी कर रहे लोगों को प्रमोशन मिल सकता है। भाई-बहनों की सहायता से आपको कार्यक्षेत्र में उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे।

कुंभ — आज नए संपर्क विकसित होने से मन प्रसन्न रहेगा। परिजनों के लिए खरीदारी कर सकते हैं। बिना मतलब दूसरों के मामलों में न पड़ें। अपनी योजनाओं को फिलहाल अपने तक ही सीमित रखें। संतान को शिक्षा में अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

मीन — आज आपकी कार्यशैली में बेहतरीन सुधार होगा। किसी पॉलिसी में बड़ा पूंजी निवेश कर सकते हैं। मन में परोपकार का हित जागृत होगा। यश और कीर्ति मिलने से आपके मन में अहंकार का भाव भी जागृत हो सकता है। वैवाहिक संबंध मधुर रहेंगे।

सुडोकू-130

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

		3		5				
6			4			9		
	4				3			8
9					5			
8		6			1	3		5
			2					4
5			1	3			2	
	7	1			4			9
			5	9		6		

सुडोकू - 129 का हल

3	2	5	9	6	8	1	4	7
4	8	7	2	1	3	9	5	6
9	6	1	7	4	5	8	3	2
8	5	6	3	2	9	4	7	1
2	1	4	8	7	6	3	9	5
7	3	9	4	5	1	2	6	8
6	7	2	1	9	4	5	8	3
1	9	3	5	8	7	6	2	4
5	4	8	6	3	2	7	1	9

मुझे लगता है कि हम जानते हैं कि पांच-छह महीनों में हम किस तरह की क्रिकेट खेल रहे हैं। इसलिए एक टीम के रूप में यह अच्छा संकेत है कि हम ऐसा करने में सफल रहे हैं। जब से गंभीर ने कहा कि मुझे छठे नंबर पर बल्लेबाजी करनी है तब से मैं बल्लेबाज के रूप में सोच रहा हूं। -रविंद्र जडेजा

स्टेडियम

बरेली, बुधवार 15 अक्टूबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

फिडे विश्व कप: गुकेश को मिली शीर्ष वरीयता

नई दिल्ली : गोवा में 30 अक्टूबर से शुरू हो रहे फिडे विश्व कप में मौजूदा विश्व चैंपियन डी गुकेश शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी होंगे, उनके बाद हमवतन अर्जुन एरिगैसी और आर प्रज्ञानानंदा का स्थान है। यह टूर्नामेंट 27 नवंबर तक चलेगा। इसमें दुनिया भर के प्रमुख सितारे भाग लेंगे और डेनमार्क के अनीश गिरि को चौथी वरीयता दी गई है। इस प्रतियोगिता में 20 लाख डॉलर की बड़ी पुरस्कार राशि होगी और इसमें दुनिया भर से 206 प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। पुरस्कारों के अलावा खिलाड़ी 2026 कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में तीन स्थानों के लिए भी प्रतिस्पर्धा करेंगे। गोवा में शीर्ष तीन पर रहने वाले खिलाड़ियों को कैंडिडेट्स में सीधे प्रवेश मिलेगा। इस प्रतियोगिता में अमेरिका के वेस्ले सो पांचवीं वरीयता प्राप्त खिलाड़ी हैं, जिनके बाद क्रमशः विन्सेंट केमर, वेई यी, नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव, शखरियार मामेदयारोव और हंस नीमन का स्थान है।

जोश और जम्पा, भारत के साथ पहले वनडे से बाहर

पर्थ : ऑस्ट्रेलिया के विकेटकीपर जोश इंगलिस और लेग स्पिनर एडम जम्पा क्रमशः चोट और पारिवारिक कारणों से भारत के खिलाफ रविवार को होने वाले पहले वनडे मैच में नहीं खेल पाएंगे। भारत ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की वनडे शृंखला खेलेगा, जिसके बाद पांच मैचों की टी-20 शृंखला होगी। अगले दो वनडे मैच एडिलेड (23 अक्टूबर) और सिडनी (25 अक्टूबर) में होंगे। इंगलिस पिंडली की चोट से उबर रहे हैं, जिससे वह इस महीने की शुरुआत में न्यूजीलैंड के खिलाफ टी-20 शृंखला में नहीं खेल पाए थे। उनकी जगह जोश फिलिप को विकेटकीपर के रूप में ऑस्ट्रेलियाई टीम में शामिल किया गया है।

पैरा पावरलिफ्टिंग में मैथ्यू ने कांस्य जीता

नई दिल्ली : भारत के अनुभवी पैरा पावरलिफ्टर जोबी मैथ्यू ने मिस्र के काहिरा में आयोजित पैरा पावरलिफ्टिंग विश्व चैंपियनशिप के लेजेंड्स (मास्टर्स) वर्ग में कांस्य पदक जीता। मैथ्यू ने अपने पहले प्रयास में 147 किग्रा के भार उठाया लेकिन इसे अमान्य घोषित कर दिया गया। उन्होंने इसके बावजूद दूसरे प्रयास में 148 किग्रा वजन आसानी से उठा लिया। मैथ्यू ने इस लय को जारी रखते हुए अपने अंतिम प्रयास में 152 किग्रा का वजन उठाकर अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इससे पहले उनका पिछले व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 150 किग्रा था जिसे उन्होंने दो महीने पहले बीजिंग विश्व कप में हासिल किया था। थाईलैंड के फोंगसाकोन चुमचाई ने 162 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता जबकि पेरू के नील ग्रेसिया ने 161 किग्रा वजन उठाकर रजत पदक जीता।

डेनमार्क ओपन : पोपोव से कड़े मुकाबले में हारे शेट्टी

ओडेन्से। युवा भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी आयुष शेट्टी ने मंगलवार को डेनमार्क ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट में फ्रांस के टोमा जूनियर पोपोव को कड़ी टक्कर दी लेकिन तीन गेम तक चले मुकाबले में हार गए। भारतीयों के लिए मंगलवार का दिन निराशाजनक रहा। इस साल यूएस ओपन में पहला सुपर 300 खिताब जीतने वाले शेट्टी ने एक घंटे 17 मिनट तक चले कड़े मुकाबले में फ्रांसीसी खिलाड़ी को कड़ी टक्कर दी, लेकिन हार गए। महिला एकल में भारत की अनमोल खरब, इंडोनेशिया की पुत्री कुसुमा वर्दानी से हार गईं। पृथ्वी कृष्णमूर्ति रॉय और साई प्रतीक की जोड़ी चीनी ताइपे के लियू कुआंग हेंग और यांग पो हान की जोड़ी से हार गई। कविप्रिया सेल्वम और सिमरन सिंघी महिला युगल में बुल्गारिया की गैब्रिएला और स्टेफनी के सामने नहीं टिक पाईं।

रोहित-कोहली के भविष्य पर गंभीर ने कहा- मौजूदा समय में रहने की जरूरत

नई दिल्ली, एजेंसी

विराट कोहली और रोहित शर्मा 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप खेलने के इच्छुक हैं, लेकिन भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने मंगलवार को इस स्टार जोड़ी के भविष्य को लेकर कोई वादा नहीं किया। गंभीर ने कहा कि वनडे विश्व कप में अभी दो साल से अधिक का समय है और वर्तमान में रहना जरूरी है।

शुभमन गिल की वनडे कप्तान के रूप में नियुक्ति के साथ राष्ट्रीय चयनकर्ताओं ने पहले ही वनडे क्रिकेट में बदलाव की प्रक्रिया शुरू कर दी है और 2027 में कोहली (39) और रोहित (40) की उम्र को देखते हुए उनके भविष्य पर काफी संदेह है। गंभीर ने कहा कि 50 ओवर का विश्व कप अभी ढाई साल दूर है। वर्तमान में रहना बहुत जरूरी है। जाहिर है वे बेहतरीन खिलाड़ी हैं। वे वापसी कर रहे हैं। उनका अनुभव ऑस्ट्रेलिया में काम आएगा। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट के समापन पर कहा कि उम्मीद है कि ये दौरा दोनों खिलाड़ियों के लिए सफल साबित होगा, लेकिन इससे जरूरी बात यह है कि टीम एक सफल शृंखला खेले। ऐसा माना जा रहा है कि अगले कुछ महीनों में होने वाले नौ वनडे मैचों (ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन-तीन मैच) में इन दोनों खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर काफी कुछ निर्भर करेगा। भारतीय टीम पिछले एक साल में गंभीर की कोचिंग में सभी प्रारूपों में बदलाव के दौर से गुजर रही है। राष्ट्रीय टीम में शामिल करते समय किसी खिलाड़ियों के गुणों पर गंभीर ने कहा कि इस सूची में प्रतिभा सबसे पहली चीज है। फिर काम के प्रति लगन और ड्रेसिंग रूम में आपके व्यवहार खासकर टेस्ट क्रिकेट में काफी मायने रखता है। हम यह भी परखने की कोशिश करते है कि रन बनाने और विकेट लेने के अलावा आप किस तरह से टीम के लिए योगदान दे सकते हैं। आप में खेल के लिए जज्बा होना भी काफी जरूरी है। आप में अगर ये सारे गुण है तो आप निश्चित रूप से एक सफल टेस्ट करियर बना सकते हैं।

के. श्रीकांत से गंभीर बोले- 23 साल के खिलाड़ी को निशाना बनाना शर्मनाक

भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने तेज गेंदबाज हर्षित राणा को ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए वनडे टीम में चुने जाने पर सवाल उठाने वाले पूर्व कप्तान क्रिस श्रीकांत पर पलटवार करते हुए कहा कि 23 वर्षीय खिलाड़ी को निशाना बनाना शर्मनाक है। श्रीकांत ने अपने यूट्यूब चैनल पर आरोप लगाया था कि राणा केवल गंभीर की वजह से राष्ट्रीय टीम में हैं। उन्होंने कहा कि राणा को ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए वनडे टीम में इसलिए चुना गया क्योंकि वह गंभीर की जी-हुजूरी करते हैं। गंभीर ने वेस्टइंडीज पर भारत की टेस्ट शृंखला जीत के बाद कहा कि यह शर्मनाक है कि कोई व्यक्ति अपना यूट्यूब चैनल चलाने के लिए 23 साल के खिलाड़ी को निशाना बना रहा है। अगर आप मुझे निशाना बनाना चाहते हैं, तो बनाइए। मैं इससे निबट सकता हूं, लेकिन यूट्यूब व्यूज के लिए 23 साल के युवा खिलाड़ी को ट्रोल करना शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि उनके (राणा के) पिता चयनकर्ता नहीं हैं। उन्होंने अपनी योग्यता के आधार पर टीम में जगह बनाई है। इन युवा लड़कों को निशाना मत बनाइए। हालांकि यह पता नहीं चल सका है, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से यह निशाना श्रीकांत के बेटे अनिरुद्ध पर लगाया जा सकता है, जिन्हें एक बार ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए भारत ए टीम में चुना गया था। तब श्रीकांत चयन समिति के अध्यक्ष थे। श्रीकांत ने हाल ही में कहा था कि केवल एक सदस्य है, हर्षित राणा... कोई नहीं जानता कि वह टीम में क्यों है। सबसे अच्छा यही है कि हर्षित राणा की तरह बनें और टीम में चयन के लिए गंभीर की लगातार हां में हां मिलाते रहें। गंभीर ने कहा कि अगर राणा अच्छा प्रदर्शन नहीं करते हैं तो चयन समिति उन्हें हटा देगी। राणा ने अब तक तीनों प्रारूप में 10 मैच खेले हैं, जिनमें उन्होंने 19 विकेट लिए हैं। भारत के मुख्य कोच ने कहा कि लोगों को उनके प्रदर्शन के आधार पर निशाना बनाइए और चयनकर्ता इसी काम के लिए हैं। अगर आप सोशल मीडिया पर किसी 23 साल के खिलाड़ी के बारे में बुरी बातें कहेंगे, तो इससे उसकी मानसिकता पर क्या असर पड़ेगा। अगर आपका बच्चा कल क्रिकेट खेलता है, तो कल्पना कीजिए कि उसके साथ दुर्व्यवहार हो। वह 23 साल का है, 33 साल का नहीं। मेरी आलोचना करो, मैं इसे बर्दाश्त कर सकता हूं, लेकिन वह 23 साल का लड़का है, इसलिए यह स्वीकार्य नहीं है। गंभीर ने कहा कि भारतीय क्रिकेट के प्रति नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए और आपको अपना यूट्यूब चैनल चलाने के लिए ये चीजें नहीं करनी चाहिए। यह केवल हर्षित के मामले में ही नहीं है। भविष्य में अन्य खिलाड़ियों के साथ भी ऐसा हो सकता है। आप लोगों (मीडिया) से भी मेरा यही कहना है कि आप मुझे निशाना बनाइए, लेकिन खिलाड़ियों को नहीं।

शुभमन को कप्तान बनाकर किसी ने कोई एहसान नहीं किया, वह इसके हकदार

भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने युवा कप्तान शुभमन गिल की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने इंग्लैंड में कप्तान के रूप में अपनी सबसे कठिन परीक्षा पास कर ली है और किसी ने भी उन्हें टेस्ट और वनडे दोनों प्रारूपों में कप्तान नियुक्त करके कोई एहसान नहीं किया है। भारत ने गिल की कप्तानी में इंग्लैंड में पांच टेस्ट मैच की शृंखला बराबर कराई थी जबकि अब उसने वेस्टइंडीज को दोनों मैच में हराया। गिल को अब रोहित शर्मा की जगह वनडे टीम का कप्तान बनाया गया है, जिसकी शुरुआत ऑस्ट्रेलिया के दौरे से होगी। गंभीर से जब पूछा गया कि वह मुख्य कोच के रूप में नए कप्तान को कैसे संभालते हैं, उन्होंने कहा कि उन्हें अपना स्वाभाविक दृष्टिकोण बनाए रखने की इजाजत देकर। मुझे लगता है कि उन्हें टेस्ट या वनडे कप्तान बनाकर किसी ने उन पर कोई एहसान नहीं किया है। मुझे लगता है कि वह इसके हकदार हैं। उन्होंने कड़ी मेहनत की है। कप्तान के रूप में इंग्लैंड दौरे में वह पहले ही सबसे कठिन परीक्षा पास कर चुके हैं। इंग्लैंड का दौरा काफी कठिन था क्योंकि हमारा मुकाबला विदेशी परिस्थितियों में मजबूत टीम से था। गिल ने आगे बढ़कर नेतृत्व किया और खिलाड़ियों के बीच सम्मान अर्जित किया। गंभीर फिलहाल वर्तमान पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और इसे लेकर चिंतित नहीं हैं कि भारत 2027 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल खेलेगा या नहीं।

द. अफ्रीका शृंखला से पहले रणजी खेलें खिलाड़ी

गौतम गंभीर चाहते हैं कि टेस्ट विशेषज्ञ खिलाड़ी बेंगलुरु स्थित उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) में कौशल विशेष अभ्यास की जगह आगामी दक्षिण अफ्रीका शृंखला से पहले मैच अभ्यास के लिए अपने-अपने राज्यों के लिए रणजी ट्रॉफी खेलें। गंभीर ने कहा कि भारतीय टीम का कार्यक्रम काफी व्यस्त है क्योंकि भारत की टी-20 टीम नौ नवंबर को ब्रिस्बेन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपना आखिरी मैच खेलेगी और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहला टेस्ट 14 नवंबर को कोलकाता में शुरू होगा। कोच ने कहा कि कभी-कभी यह मुश्किल होता है, लेकिन पेशेवरता इसी को कहते हैं। खिलाड़ियों को अपने दिनों का सर्वश्रेष्ठ तरीके से इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि हम जानते हैं कि यहां से वन-डे क्रिकेट, फिर टी-20 और चार दिन बाद फिर टेस्ट मैच खेलना काफी मुश्किल है। जो खिलाड़ी केवल टेस्ट का हिस्सा हैं, उनके लिए तैयारी करना और घरेलू क्रिकेट खेलना बहुत महत्वपूर्ण है।

लोकेश राहुल।

राहुल का अर्धशतक, भारत ने किया क्लीन स्वीप

पांचवें दिन वेस्टइंडीज को सात विकेट से हराकर दो मैचों की टेस्ट शृंखला की अपने नाम

- मैच में आठ विकेट लेने पर 'प्लेयर ऑफ द मैच' बने बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव
- बल्ले-गेंद से शानदार प्रदर्शन के लिए 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' चुने गए ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा

नई दिल्ली, एजेंसी

सलामी बल्लेबाज केएल राहुल के नाबाद अर्धशतक की मदद से भारत ने दूसरे और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच के पांचवें दिन मंगलवार को वेस्टइंडीज को सात विकेट से हराकर दो मैच की शृंखला में क्लीन स्वीप किया। भारत ने 121 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पांचवें दिन एक विकेट पर 63 रन से अपनी पारी आगे बढ़ाई। उसे जीत के लिए केवल 58 रन की जरूरत थी। भारत ने आखिर में 35.2 ओवर में तीन विकेट पर 124 रन बनाए। राहुल 58 रन बनाकर नाबाद रहे।

भारत ने सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल (175) और कप्तान शुभमन गिल (नाबाद 129) के शतकों की मदद से अपनी पहली पारी पांच विकेट पर 518 रन बनाकर समाप्त घोषित की थी जिसके जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 248 रन ही बना पाई थी और उसे फॉलोऑन करना पड़ा था। वेस्टइंडीज की दूसरी पारी में जॉन कैम्पबेल (199 गेंदों पर 115 रन) और शाई होप (214 गेंदों पर 103 रन) ने तीसरे विकेट के लिए 177 रन की साझेदारी की जिससे उसकी टीम 390 रन बनाने में सफल रही। इससे मैच पांचवें दिन तक खिंच गया। भारत ने अहमदाबाद में खेला गया पहला टेस्ट मैच तीन दिन के अंदर पारी और 140 रन से जीता था।

अरुण जेटली स्टेडियम में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज जीतने के बाद ट्रॉफी के साथ जश्न मनाते भारतीय खिलाड़ी।

- भारत पहली पारी : 518/5 (घोषित)
- वेस्टइंडीज पहली पारी : 248/10
- वेस्टइंडीज दूसरी पारी: 390/10

भारत

124/3 (35.2 ओवर) (दूसरी पारी)

■	यशस्वी का फिलिप बो वारिकन	08
■	केएल राहुल नाबाद	58
■	साई सुदर्शन का होप बो चेज़	39
■	शुभमन गिल का ग्रीव्स बो चेज	13
■	ध्रुव जुरेल नाबाद	06

गेंदबाजी : जेडन सील्स 3-0-14-0, जोमेल वारिकन 15.2-4-39-1, खारी पियरे 8-0-35-0, रोस्टन चेज़ 9-2-36-2

भारत की घरेलू धरती पर श्रेष्ठता की पुष्टि करने के अलावा यह जीत भारत के टेस्ट कप्तान के रूप में शुभमन गिल की शृंखला में पहली जीत के रूप में भी दर्ज की जाएगी। राहुल ने छह चौके और दो छक्के लगाए तथा साई सुदर्शन (39) के साथ दूसरे विकेट के लिए 79 रन जोड़े। गिल ने 13 रन बनाए जबकि ध्रुव जुरेल छह रन बनाकर नाबाद रहे।

बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव को मैच में आठ विकेट लेने के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया, जिसमें पहली पारी में लिए गए पांच विकेट भी शामिल हैं। ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा को बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द सीरीज चुना गया। वेस्टइंडीज के खिलाड़ियों ने इस मैच में अपना जज्बा दिखाया लेकिन इसके बावजूद रोस्टन चेज, क्रैग ब्रैथवेट के बाद, कप्तान के रूप में अपने पहले पांच टेस्ट मैच हारने वाले वेस्टइंडीज के दूसरे कप्तान बन गए। चेज़ ने पुरस्कार वितरण समारोह में कहा कि मुझे लगता है कि हमारे खिलाड़ी कैरेबियाई देशों के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से हैं। इसलिए हमें इस आखिरी टेस्ट मैच को एक मानदंड के रूप में उपयोग करना होगा। हमें यहां से जितना संभव हो सके उतना सुधार करना होगा। दो टेस्ट मैचों में भारतीय गेंदबाजों ने विपक्षी टीम के सभी 40 विकेट चटकाए। भारतीय बल्लेबाजों की ओर से दो मैचों में पांच शतक बनाए गए। भारतीय बल्लेबाजों की असली परीक्षा दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ होने वाली आगामी टेस्ट शृंखला में होगी।

खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराने के लिए कभी-कभी आपको साहसिक फैसले लेने पड़ते हैं: गिल

भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि वह अपने खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराने के लिए साहसिक फैसले लेने में नहीं हिचकिचाते और वह इस भूमिका के आदी हो चुके हैं। गिल ने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में जीत के बाद कहा कि मैं खेल की परिस्थितियों के अनुसार फैसला करता हूं। कभी-कभी आपको साहसिक फैसले लेने होते हैं और यह इस पर निर्भर होता है कि कौन सा खिलाड़ी आपके लिए विकेट ले सकता है या रन बना सकता है। मुझे लगता है कि मैं इस टीम के सभी खिलाड़ियों से काम लेने का आदी हो रहा हूं। मुझे ज़िम्मेदारी निभाना अच्छा लगता है। मुझे ज़िम्मेदारी निभाना पसंद है और मैं इसे अपने तरीके से करता हूं। कुछ अहम फ़ैसलों में शामिल होना मुझे बहुत पसंद है और मुझे लगता है कि इससे मेरे अंदर का सर्वश्रेष्ठ सामने आता है।

बारिश की भेंट चढ़ा मैच, श्रीलंका और न्यूजीलैंड को एक-एक अंक

कोलंबो, एजेंसी

श्रीलंका और न्यूजीलैंड के बीच मंगलवार को आईसीसी महिला वनडे विश्व कप मुकाबले को लगातार बारिश के कारण रद्द करना पड़ा, जिससे दोनों टीमों को एक एक अंक मिला। मेजबान टीम ने दमदार प्रदर्शन कर 6 विकेट पर 258 रनों का स्कोर खड़ा किया, लेकिन न्यूजीलैंड के खेलने से ठीक पहले आर प्रेमदासा स्टेडियम में बारिश शुरू हो गई, जिससे मैच नहीं हो सका।

मैच के बाद अटापट्टू ने कहा कि हमने परिस्थितियों का आकलन कर अच्छा क्रिकेट खेला। दुर्भाग्य से हम मैच पूरा नहीं कर सके। अगला मैच बेहद अहम है। हमें तीन मैच जीतने होंगे। उम्मीद करते हैं कि हमारे मैच में बारिश नहीं हो। श्रीलंका चार मैचों में दो अंक लेकर सातवें स्थान पर है जबकि न्यूजीलैंड तीन अंक से तालिका में पांचवें स्थान पर है। यह नतीजा न्यूजीलैंड के लिए भी बड़ा झटका है जो पहले ही दो हार झेल चुका है और अब उसके लिए सेमीफाइनल की दौड़ मुश्किल हो गयी है। न्यूजीलैंड की कप्तान सोफी डिवाइन ने कहा कि दुर्भाग्य से मौसम ने हमें मैच नहीं खेलने दिया, हम लक्ष्य का पीछा करने को उत्साहित थे। आंकड़े और संख्याएं केवल यहीं तक सीमित रह सकती हैं। यह विश्व कप का दूसरा मैच है जो बारिश के कारण रद्द हो गया। इससे पहले पिछले हफ्ते श्रीलंका का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच भी बारिश के कारण रद्द हो गया था। इससे पहले बल्लेबाजी का फैसला करने के बाद श्रीलंका ने निलाक्षिका डिसिल्वा (नाबाद 55 रन) के आक्रामक और कप्तान चामरी अटापट्टू (53 रन) के संयमित अर्धशतक से छह विकेट पर 258 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया।

कोलंबो में खेले जा रहे महिला विश्व कप मैच के दौरान श्रीलंकाई कप्तान चामरी अटापट्टू और विश्मी गुणारत्ने।

भरत 8,000 मीटर ऊंची नौ चोटियों पर चढ़ने वाले पहले भारतीय बने

कोलकाता। आंध्र प्रदेश के कुरनूल के पर्वतारोही भरत थम्मिनेनी मंगलवार को छठे सबसे ऊंचे पर्वत 'माउंट चो ओयू' (8,188 मीटर) पर चढ़ाई करने के साथ दुनिया की 14 सबसे ऊंची चोटियों में से नौ पर फतह करने वाले पहले भारतीय बन गए। इस 36 वर्षीय पर्वतारोही के करीबी सूत्रों ने यह जानकारी दी।

सूत्रों ने बताया कि इस उपलब्धि से पहले थम्मिनेनी ने मई 2017 में माउंट एवरेस्ट, सितंबर 2018 में मनास्लू, मई 2019 में ल्होत्से, मार्च 2022 में अन्नपूर्णा, अप्रैल 2022 में कंचनजंगा, मई 2023 में मकालू, अक्टूबर 2024 में शीशपंगमा और अप्रैल 2025 में धौलागिरी पर चढ़ाई की थी। ये सभी 8,000 मीटर से अधिक ऊंची चोटियां हैं। बची हुई पांच शीर्ष चोटियां के2, नंगा पर्वत, गशेरब्रुम 1 और 2 तथा ब्रॉड पीक पाकिस्तान में हैं।

सुल्तान जोहोर कप | भारत ने दो गोल से पिछड़ने के बाद बनाई बढ़त, पाकिस्तान ने अंतिम क्षणों में बराबरी की

भारत-पाकिस्तान के बीच मैच 3-3 से ड्रॉ रहा

जोहोर बाहरु (मलेशिया), एजेंसी

भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने मंगलवार को सुल्तान जोहोर कप के अपने ग्रुप चरण के तीसरे मैच में पाकिस्तान के खिलाफ 3-3 से ड्रॉ खेला। भारत ने रोमांचक मुकाबले में दो गोल से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए बढ़त बनाई लेकिन पाकिस्तान ने गोल करके अंक बराबर कर लिए। इस परिणाम का मतलब है कि भारत को अब तक टूर्नामेंट में हार का सामना नहीं करना पड़ा है।

भारत के लिए अरिजीत सिंह हुंडल (43वें मिनट), सौरभ आनंद कुशवाहा (47वें मिनट), मनमीत सिंह (53वें मिनट) ने गोल दागे। पाकिस्तान के लिए हन्नान शाहिद (5वें मिनट) के अलावा सूफियान खान (39वें मिनट, 55वें मिनट) ने दो गोल किए। भारत ने शानदार शुरुआत करते हुए गेंद पर दबदबा बनाए रखा। भारत ने शुरुआत में सर्कल में कई बार सेंध लगाई जिससे पाकिस्तान बैकफुट पर रहा। पाकिस्तान ने पलटवार करते हुए जल्द ही पेनल्टी स्ट्रोक हासिल कर लिया। कप्तान शाहिद ने बिना कोई गलती किए गेंद गोलकीपर के दाईं ओर से नीचे की ओर डालकर अपनी टीम को शुरुआती बढ़त दिला दी। इसके बाद सूफयान ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके पाकिस्तान की बढ़त 2-0 कर दी। भारत ने क्वार्टर के अंत में एक पेनल्टी स्ट्रोक हासिल किया। तीन मिनट से भी कम समय रहते हुंदल ने गोल करके अंतर कम किया। इसके बाद कुशवाहा ने एक बेहतरीन शॉट लगाकर स्कोर बराबर कर दिया।

भारत के आक्रामक रुख से पाकिस्तान बैकफुट पर

बराबरी गोल करने के बाद आत्मविश्वास से लबरेज भारत ने आक्रामक रुख अपनाया जिससे पाकिस्तान बैकफुट पर आ गया। फिर मनमीत ने गोल करके मैच में पहली बार भारत को बढ़त दिलाई। हालांकि यह बढ़त ज्यादा देर तक नहीं टिक पाई क्योंकि सूफयान ने मैच में दूसरी बार पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके बराबरी हासिल कर ली।